राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 यह मेरी 'स्टॉक बॉल' थी, कोहली को पहली गेंद पर आउट ...

अशोक गहलोत के बनाए 17 नए जिलों पर संकट, भजनलाल सरकार... 12

वर्ष : 12 | अंक : 63 | पटना, शुक्रवार, 14 जून, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां 30%
नहीं 50%
कह नहीं सकते 10%

बाजार

सोना 59,340

चांदी 55,350

सेंसेक्स 63,327

निफ्टी 18,816

इटली के लिए रवाना हुए पीएम मोदी, जी-7 सम्मेलन में होंगे शामिल

इटली की पीएम जॉर्जिया मेलोनी के साथ करेंगे द्विपक्षीय वार्ता

नई दिल्ली/एजेंसी। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 50वें जी-7 शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए इटली रवाना हुए। यहां वे दुनिया की सात बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों के समूह जी-7 की बैठक में हिस्सा लेंगे। इस शिखर सम्मेलन में भारत को एक आउटरीच देश के रूप में आमंत्रित किया गया है। इस समिट में सात सदस्य देश- अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, जर्मनी, इटली, जापान और फ्रांस के साथ-साथ यूरोपीय संघ भी भाग लेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी यहां 15 जून तक रहेंगे। इस दौरान कई महत्वूर्ण मुद्दों पर चर्चा होने वाली है। नरेंद्र मोदी के तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के बाद यह उनकी पहली विदेश यात्रा है। इटली रवाना होने से पहले पीएम मोदी ने कहा, इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी के निमंत्रण पर मैं 14 जून को जी-7 आउटरीच शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए इटली के अपुलीया क्षेत्र की यात्रा पर निकल रहा हूं। पीएम ने कहा, मुझे खुशी है कि लगातार तीसरे कार्यकाल में मेरी पहली यात्रा जी-7 शिखर सम्मेलन के लिए इटली की है। मैं 2021 में जी- 20 शिखर सम्मेलन के लिए अपनी इटली यात्रा को गर्मजोशी से याद करता हूं। पीएम मोदी ने कहा, पिछले साल प्रधानमंत्री मेलोनी की दो भारत यात्राएं हमारे द्विपक्षीय एजेंडे में गति और गहराई लाने में सहायक रहीं। हम भारत-इटली रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने और भारत-प्रशांत और भूमध्य सागरीय क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। आउटरीच सत्र में चर्चा के दौरान आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, इनर्जी, अफ्रीका और भूमध्य सागर पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। यह भारत की अध्यक्षता में आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन और आगामी जी-7 शिखर सम्मेलन के परिणामों के बीच अधिक तालमेल लाने और उन मुद्दों पर विचार-विमर्श करने का अवसर होगा, जो वैश्विक दक्षिण के लिए महत्वपूर्ण हैं। मैं शिखर सम्मेलन में भाग लेने वाले अन्य नेताओं से मिलने के लिए भी उत्सुक हूं। प्रधानमंत्री मोदी इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी के साथ द्विपक्षीय बैठक भी करेंगे। मार्च 2023 में मेलोनी की भारत यात्रा के बाद पीएम मोदी की दूसरी बैठक होगी।

संक्षिप्त खबरें

मकान में आग लगने से पांच लोगों की मौत

गाजियाबाद। गाजियाबाद जिले के लोनी इलाके में एक मकान में आग लगने से पांच लोगों की मौत हो गई और दो अन्य घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। सहायक पुलिस आयुक्त दिनेश कुमार ने बृहस्पतिवार को बताया कि बुधवार देर रात लोनी बॉर्डर थाना क्षेत्र स्थित एक मकान में आग लग गई। आग मकान की नीचे की मंजिल में लगी और ऊपर मौजूद लोग उसमें फंस गए। उन्होंने बताया कि सूचना मिलने पर पुलिस और दमकल विभाग के कर्मी मौके पर पहुंचे और आग बुझायी। कुमार ने बताया कि इस घटना में दो बच्चों समेत कुल पांच लोगों की मृत्यु हो गई तथा दो अन्य लोग झुलसकर घायल हो गए। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

तीसरी बार राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बनाए गए अजित डोभाल

नई दिल्ली/एजेंसी। अजित डोभाल को एक बार फिर से राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बनाया गया है। डोभाल को लगातार तीसरी बार यह जिम्मेदारी दी गई है। मोदी सरकार के शपथ ग्रहण के बाद से यह कयास लगाए जा रहे थे कि डोभाल को फिर से यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिलेगी या कोई और इस पद पर आएगा। हालांकि, मोदी ने एक बार फिर से अपने पुराने तुरुप के इक्के पर ही भरोसा जताया है। 2014 में सत्ता में आने के बाद पीएम मोदी ने डोभाल को पहली बार राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार नियुक्त किया था। 2019 में उन्हें एक बार फिर से पांच साल के लिए इस पद पर नियुक्ति दी गई थी। पिछले एक दशक में डोभाल ने मोदी सरकार के कार्यकाल के दौरान कई महत्वपूर्ण कार्य किए हैं।

सीएम ने विभिन्न विभागों के मंत्रियों व अधिकारियों के साथ की समीक्षा बैठक

सात निश्चय- 2 के तहत बचे हुये कार्यों को तेजी से करें पूरा : नीतीश

बोलें-लोगों की समस्याओं के समाधान के लिये पूरी संवेदनशीलता से कार्य करें

प्रात : किरण

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गुरूवार को 1 अणे मार्ग स्थित संकल्प में विभिन्न विभागों के कार्यों की समीक्षा की। समीक्षा के दौरान मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को प्राथमिकता के आधार पर तेजी से कार्य पूर्ण करने का निर्देश दिया। समीक्षा के दौरान मुख्य सचिव ब्रजेश मेहरोत्रा ने विभिन्न विभागों के कार्यों की अद्यतन स्थिति की प्रस्तुतीकरण के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी। समीक्षा के दौरान मुख्यमंत्री ने विभिन्न विभागों को आने वाले समय के लिये प्राथमिकता निर्धारित करते हुये तीव्र गति से कार्य करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि लोगों की समस्याओं के समाधान के लिये पूरी संवेदनशीलता और पारदर्शिता से कार्य करें। सात निश्चय- 2 के तहत जो भी बचे हुये कार्य हैं, उसे तेजी से पूर्ण करें। सभी जगह पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित रखें। हर घर नल का जल का क्रियान्वयन बेहतर ढंग से हो और इस योजना का अनुरक्षण ठीक ढंग से हो इस पर विशेष ध्यान रखें। हर खेत तक सिंचाई का पानी पहुंचाने के लिये जो कार्ययोजना बनायी गयी है, उसे जल्द पूर्ण करें ताकि किसानों को कृषि कार्य में सुविधा हो और उन्हें इसका लाभ मिले। उन्होंने कहा कि स्मार्ट प्री-पेड मीटर लगाने तथा किसानों को दिये जाने वाले कृषि फीडर के कनेक्शन का कार्य तेजी से पूर्ण करें। सभी जिलों में उद्योगों की स्थापना होनी चाहिये। गांव-गांव तक स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने की दिशा में कार्य करें। हमलोग खेल और खिलाड़ियों को प्रोत्साहित कर रहे हैं। खिलाड़ियों को पंचायत स्तर तक सुविधायें मिलनी चाहिये। पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल का पुनर्निर्माण कराया जा रहा है ताकि लोगों को अत्याधुनिक एवं बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हो सके।

बैठक में ये रहें मौजूद : बैठक में उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा, जल संसाधन मंत्री विजय कुमार चौधरी, ऊर्जा मंत्री बिजेन्द्र प्रसाद यादव, ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार, स्वास्थ्य मंत्री मंगल पाण्डेय, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण मंत्री नीरज कुमार सिंह, उद्योग मंत्री नीतीश मिश्रा, नगर विकास एवं आवास मंत्री नीतीन नवीन, मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन मंत्री रत्नेश सादा, खेल मंत्री सुरेन्द्र मेहता, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, मुख्य सचिव ब्रजेश मेहरोत्रा, पुलिस महानिदेशक आर एस भट्टी, विकास आयुक्त चैतन्य प्रसाद, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ एस सिद्धार्थ, गृह, स्वास्थ्य एवं पथ निर्माण विभाग के अपर मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत, उद्योग विभाग के अपर मुख्य सचिव संदीप पौंड्रिक, सामान्य प्रशासन विभाग के प्रधान सचिव डॉ बी राजेन्दर, वित्त विभाग के प्रधान सचिव अरविंद कुमार चौधरी, नगर विकास एवं आवास विभाग के प्रधान सचिव आनंद किशोर, ऊर्जा विभाग के प्रधान सचिव संजीव हंस, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग के प्रधान सचिव पंकज कुमार, मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन विभाग के सचिव बिनोद सिंह गुंजियाल, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह, विशेष सचिव, मुख्यमंत्री सचिवालय चन्द्रशेखर सिंह उपस्थित थे।

सभी जगह पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित रखें

26 जून को लोकसभा स्पीकर का चुनाव, राष्ट्रपति ने जारी की अधिसूचना

नई दिल्ली/एजेंसी। 18वीं लोकसभा स्पीकर का चुनाव 26 जून को होना है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने इसे लेकर अधिसूचना भी जारी कर दी है। लोकसभा चुनाव संपन्न होने के बाद नरेंद्र मोदी तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बने। सरकार का गठन होने के साथ ही मंत्रियों को उनके मंत्रालय भी सौंप दिए गए हैं। अब सभी की निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि 18वीं लोकसभा का स्पीकर कौन होगा? इस प्रश्न का उत्तर 26 जून को मिल जाएगा। दरअसल 26 जून को लोकसभा स्पीकर का चुनाव होना है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने इसे लेकर अधिसूचना भी जारी कर दी है।

नीट परीक्षा विवाद : एक बार फिर सुप्रीम कोर्ट में हुई सुनवाई

नीट में ग्रेस मार्क्स वाले 1563 उम्मीदवारों स्कोर-कार्ड रद्द

ऐसे उम्मीदवारों की परीक्षा 23 को, नतीजे 30 जून को आएंगे

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। नीट परीक्षा को लेकर जारी विवाद के बीच गुरुवार को एक बार फिर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। इस दौरान केंद्र ने शीर्ष कोर्ट को बताया कि नेशनल टेस्टिंग एजेंसी की ओर से नीट-यूजी 2024 के 1,563 उम्मीदवारों को ग्रेस मार्क्स देने का निर्णय वापस ले लिया गया है। ऐसे उम्मीदवारों को 23 जून को फिर से परीक्षा देने का विकल्प दिया जाएगा। इसके नतीजे 30 जून को आएंगे। एमबीबीएस, बीडीएस और अन्य पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए काउंसलिंग 6 जुलाई से शुरू होगी। ऐसे में अब छात्रों के पास विकल्प होगा कि वे फिर से परीक्षा देना चाहते हैं या बिना ग्रेस मार्क के काउंसलिंग में शामिल होना चाहते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि गड़बड़ी के आरोपों के आधार पर नीट-यूजी 2024 को रद्द करने की मांग करने वाली याचिकाओं सहित सभी याचिकाओं पर 8 जुलाई को सुनवाई होगी।

.काउंसलिंग पर रोक नहीं: सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने दोहराया कि वह नीट-यूजी 2024 की काउंसलिंग पर रोक नहीं लगाएगा। कोर्ट ने कहा कि काउंसलिंग जारी रहेगी। हम इसे रोकेंगे नहीं। अगर परीक्षा होती है तो सब कुछ सही तरीके से होगा, इसलिए डरने की कोई बात नहीं है। सरकार-एनटीए ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि 1,563 से अधिक उम्मीदवारों के परिणामों की समीक्षा के लिए एक समिति गठित की गई, जिन्हें नीट-यूजी में शामिल होने के दौरान हुए नुकसान की भरपाई के लिए दिए गए ग्रेस मार्क्स की समीक्षा का जिम्मा दिया गया। समिति ने 1,563 नीट-यूजी 2024 उम्मीदवारों के स्कोरकार्ड रद्द करने का फैसला लिया है, जिन्हें ग्रेस मार्क्स दिए गए थे। इन छात्रों को फिर से परीक्षा देने का विकल्प दिया जाएगा। परीक्षाएं 23 जून को आयोजित की जाएंगी और परिणाम 30 जून से पहले घोषित कर दिए जाएंगे। सर्वोच्च न्यायालय ने एनटीए के इस दलील को रिकॉर्ड में लिया कि 1563 छात्रों की फिर से परीक्षा आज ही अधिसूचित की जाएगी और इसे संभवतः 23 जून को आयोजित किया जाएगा। परिणाम 30 जून से पहले घोषित कर दिए जाएंगे, ताकि जुलाई में शुरू होने वाली काउंसलिंग प्रभावित न हो।

नीट परीक्षा विवाद पर सियासी हलचल तेज

प्रश्नपत्र लीक होने का कोई प्रमाण नहीं : धर्मेंद्र

नई दिल्ली। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा-स्नातक में प्रश्नपत्र लीक होने के आरोपों को खारिज करते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि इसका कोई प्रमाण नहीं है। प्रधान ने संवाददाताओं से कहा, नीट-यूजी में प्रश्नपत्र लीक होने का कोई प्रमाण नहीं है। एनटीए में भ्रष्टाचार के आरोप बेबुनियाद हैं। यह बहुत ही प्रामाणिक संस्था है।

उन्होंने कहा, उच्चतम न्यायालय मामले में सुनवाई कर रहा है और हम उसके फैसले का पालन करेंगे। हम सुनिश्चित करेंगे कि किसी छात्र को नुकसान नहीं उठाना पड़े। केंद्र ने बृहस्पतिवार को उच्चतम न्यायालय से कहा कि नीट-यूजी, 2024 के 1,563 अभ्यर्थियों को कृपांक (ग्रेस मार्क) देने के फैसले को निरस्त कर दिया गया है और उन्हें 23 जून को पुनः परीक्षा देने का विकल्प मिलेगा।

परीक्षा को लेकर केन्द्र को जल्द लेना चाहिए फैसला : गहलोत

राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री एवं कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अशोक गहलोत ने राष्ट्रीय पात्रता एवं प्रवेश परीक्षा में एनटीए की भूमिका को संदेहास्पद बताते हुए कहा है कि अगर सरकार की अभ्यर्थियों के साथ न्याय करने की मंशा है तो नीट परीक्षा को लेकर जल्द से जल्द फैसला लेना चाहिए। श्री गहलोत ने गुरुवार को यहां सोशल मीडिया पर यह बात कही।

उन्होंने कहा कि परीक्षा में हुई गड़बड़ियों को लेकर आ रहीं सूचनाओं से यह स्पष्ट है कि यह पूरी परीक्षा संदेह के घेरे में है। परीक्षा कराने वाली एजेंसी एनटीए की भूमिका ही संदेहास्पद है। यदि सरकार की अभ्यर्थियों के साथ न्याय करने की मंशा है तो नीट परीक्षा को लेकर जल्द से जल्द फैसला लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर मेडिकल की प्रवेश परीक्षा में ही ऐसी अनियमितताएं हो जाएंगी तो यह देश में मेडिकल सेवाओं के भविष्य पर सवालिया निशान लगा देगा।

शिक्षा विभाग से हटाये गये के के पाठक, राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग का मिला जिम्मा

प्रात : किरण

पटना। सूबे में बड़े पैमाने पर आईएएस अफसरों का तबादला किया गया है। कई अधिकारियों को अतिरिक्त प्रभार भी सौंपा गया है। करीब एक दर्जन आईएएस अधिकारियों का लिस्ट सामान्य प्रशासन विभाग ने जारी किया है। शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव केके पाठक को बिहार सरकार ने हटा दिया है। उन्हें राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग का अपर मुख्य सचिव बनाया गया है। डॉ. एस सिद्धार्थ को शिक्षा विभाग का अपर मुख्य सचिव बनाया गया है। 1990 बैच के आईएएस अधिकारी और शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव केके पाठक को (अतिरिक्त प्रभार - महानिदेशक, बिहार लोक प्रशासन एवं ग्रामीण विकास संस्थान, पटना) को स्थानांतरित करते हुए अगले आदेश तक राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के अपर मुख्य सचिव, पटना के पद पर पदस्थापित किया गया है। केके पाठक अगले आदेश तक महानिदेशक, बिपार्ड, पटना के अतिरिक्त प्रभार में पूर्ववत बने रहेंगे। वही 1991 बैच के आईएएस डॉ० एस. सिद्धार्थ, मुख्य मंत्री के प्रधान सचिव, मुख्यमंत्री सचिवालय, बिहार, पटना (अतिरिक्त प्रभार - अपर मुख्य सचिव, मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग, बिहार, पटना) अगले आदेश तक अपर मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार, पटना के अतिरिक्त प्रभार में रहेंगे। वहीं, 1992 बैच के आईएएस दीपक कुमार सिंह अपर मुख्य सचिव, राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग, बिहार, पटना को स्थानांतरित करते हुए अगले आदेश तक अपर मुख्य सचिव, ग्रामीण कार्य विभाग, बिहार, पटना के पद पर पदस्थापित किया गया है। वही 1995 बैच के आईएएस अरविंद कुमार चौधरी प्रधान सचिव, वित्त विभाग, बिहार, पटना (अतिरिक्त प्रभार-प्रधान सचिव, निगरानी विभाग/प्रधान सचिव, ग्रामीण विकास विभाग/परीक्षा नियंत्रक, बिहार राज्य संयुक्त प्रवेश परीक्षा पर्षद, पटना/ जांच आयुक्त, सामान्य प्रशासन विभाग, बिहार, पटना) को स्थानांतरित करते हुए अगले आदेश तक प्रधान सचिव, गृह विभाग, बिहार, पटना के पद पर पदस्थापित किया जाता है।

आतंकी हमलों को लेकर पीएम ने की हाई लेवल मीटिंग

आतंकवाद के खिलाफ सख्त एक्शन के लिए दिए निर्देश

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। जम्मू कश्मीर में बीते कुछ दिनों से आतंकी घटनाएं काफी बढ़ गई हैं। पहले माता वैष्णो देवी के पास शिवखोड़ी से आते हुए श्रद्धालुओं की बस पर आतंकवादियों ने हमला बोल दिया था। जिसमें 9 श्रद्धालुओं की जान चली गई थी। उसके बाद 11 जून को कठुआ में आतंकियों ने ग्रामीणों पर गोली चला दी। ऐसे में बीते चार दिनों में चार आतंकी हमले हो चुके हैं।

जम्मू-कश्मीर में हाल ही में हुई आतंकी घटनाओं के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल समेत अन्य अधिकारियों संग हाई लेवल बैठक की। इस दौरान पीएम मोदी को जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा संबंधी स्थिति की पूरी जानकारी दी गई और उन्हें आतंकवाद विरोधी प्रयासों से अवगत कराया गया। पीएम मोदी ने बैठक में आतंकवाद के खिलाफ सख्त एक्शन के निर्देश दिए हैं। इसके अलावा, पीएम मोदी ने आतंकी हमलों को लेकर गृह मंत्री अमित शाह और जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा से बात की। साथ ही उन्होंने घाटी में सुरक्षाबलों की तैनाती और एक्शन प्लान को लेकर भी जानकारी ली है। एलजी मनोज सिन्हा ने पीएम मोदी को जम्मू-कश्मीर के ताजा हालत पर जानकारी दी है और स्थानीय प्रशासन के प्रयासों के बारे में भी बताया।

राजनाथ ने दूसरी बार रक्षा मंत्री का संभाला कार्यभार

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। मोदी सरकार में वरीयता क्रम में दूसरे नंबर पर आने वाले श्री राजनाथ सिंह ने गुरुवार को लगातार दूसरी बार रक्षा मंत्री का कार्यभार संभाला। श्री सिंह के रक्षा मंत्रालय के कार्यालय साउथ ब्लॉक पहुंचने पर रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ, रक्षा सचिव गिरधर अरमाने, प्रमुख रक्षा अध्यक्ष जनरल अनिल चौहान, सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे, वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वी आर चौधरी और नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश त्रिपाठी तथा रक्षा मंत्रालय के अनेक शीर्ष अधिकारियों ने स्वागत किया। लखनऊ लोकसभा सीट से जीत कर लोकसभा पहुंचे श्री सिंह को वर्ष 2019 में पहली बार रक्षा मंत्री बनाया गया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रक्षा मंत्री के तौर पर उनके कामकाज पर भरोसा करते हुए उन्हें इस बार भी रक्षा मंत्रालय की जिम्मेदारी सौंपी है।

स्वास्थ्य विभाग
बिहार सरकार

HEATSTROKE

लू एवं गर्म हवाओं से यूं बचें

लू लगना जानलेवा है।

लू लगने पर क्या करें-

- लू लगे व्यक्ति को छायादार स्थान पर सही स्थिति में लिटायें एवं निम्न दर्शाये चित्र के अनुसार प्राथमिक उपचार करें।
- रोगी को ओ.आर.एस. का घोल / नींबू-पानी / साधारण पानी / नमक-चीनी का घोल पीने को दें।
- यदि व्यक्ति पानी की उल्टियाँ करें या बेहोश हो तो उसे कुछ भी खाने व पीने को ना दें।

ओ.आर.एस. का पैकेट निकटतम सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में नि:शुल्क उपलब्ध है।

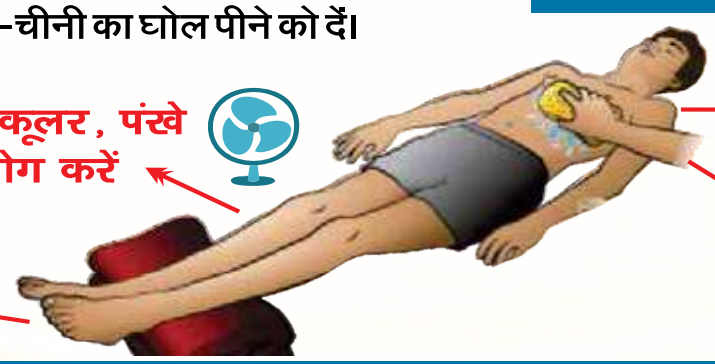

1 हवा के लिए कूलर, पंखे आदि का प्रयोग करें
2 पैरों को ऊँचा रखें
3 तंग कपड़ों को ढीला करें अथवा संभव हो तो हटा दें
4 ठंडे पानी से शरीर को पोंछें

उपर्युक्त उपाय करने पर भी अगर व्यक्ति की तबियत ठीक न लगे या चक्कर आए तो तुरंत नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र से संपर्क करें।

याद रहें- लू से बच्चे, बूढ़े, गर्भवती महिला, मजदूर व्यक्ति अत्यधिक प्रभावित होते हैं

अधिक जानकारी के लिए हेल्पलाइन पर संपर्क करें 104

आपात स्थिति में नि:शुल्क एम्बुलेंस हेतु डॉयल करें टॉल फ्री नं. 102

102

PR No.- 001094 (Health)D. 2024-25

संक्षिप्त खबरें

अनुमंडल अस्पताल में टीकाकरण केन्द्र का किया निरीक्षण

दानापुर नगर के अंतर्गत। अनुमंडलीय अस्पताल में युनाइटेड नेशनल डेवलपमेंट प्रोग्राम के रेसिडेंसी रिप्रेजेंटेटिव इसाबेल के नेतृत्व में दो सदस्यीय टीम ने अनुमंडलीय अस्पताल में संचालित मॉडल टीकाकरण केन्द्र का निरीक्षण किया। गुरूवार को दानापुर अनुमंडलीय अस्पताल पहुंची इसाबेल ने सीधे मॉडल टीकाकेन्द्र का जायजा लेते हुए वहां तैनात कर्मियो से जानकारी ली। टीकाकरण केन्द्र की व्यवस्था के साथ पुरे कार्य का बारिकियो से देखा व जानकारी ली। इस क्रम में उन्होने टीका लेने आये लोगो से भी बातचीत किया। उन्होने अस्पताल के उपाधीक्षक डा वीभा मोहन से भी जानकारी ली। उनके साथ चिरंजीव भट्टाचार्या, जिला प्रतिरक्षण पदाधिकारी डॉ एस पी विनायक, डॉ कुणाल आशुतोष रंजन, रश्मी वर्मा आदि उपस्थित थे। उपाधीक्षक डॉ वीभा मोहन ने बताया कि युएनडीपी की दो सदस्यीय टीम रेसिडेंसी रिप्रेजेंटेटिव इसाबेल के नेतृत्व में अस्पताल में संचालिंत मॉडल टीकाकेन्द्र का निरीक्षण करने आयी थी। अस्पताल प्रबंधक ने बताया कि अनुमंडलीय अस्पताल का टीकाकरण केन्द्र पा12 घंटे कार्य करती है। सुबह आठ बजे से रात्रि आठ बजे तक टीका दिया जाता है। जिससे काम करनेवाले लोगो को लाभ मिलता है। वे डियूटी से आने के बाद अपने बच्चो को टीका दिला सकते है।

गले से सोने का चेन झपट कर भाग निकले स्कूटी सवार

दानापुर। नगर के रूपसपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत अंबेदकर पथ में स्कूटी सवार बदमाशो ने घर से दूध लेने निकली महिला के गले से सोने का चेन झपट कर भाग निकले। इस संबंध में पीडिता शोभा ठाकुर ने लिखित शिकायत की है। पुलिस मामले की छानबीन में लगी है। प्राप्त समाचार के अनुसार रूपसपुर थाना क्षेत्र के अंबेदकर पथ के चंद्रकुटिर अपार्टमेंट निवासी रतन कुमार ठाकुर की पत्नी शोभा ठाकुर शाम में अपने फ्लैट से निकल कर पास में ही दूध लेने गयी थी। इसी क्रम में अपार्टमेंट के पास ही पीछे से आये स्कूटी सवार बदमाशो ने उनके गले से सोने का चेन झपट लिया। जब तक वो संभलती वो शोर मचाती बदमाश भागने में कामयाब हो गये। इस संबंध मे पीडिता ने लिखित शिकायत की है। पुलिस जांच में जुट गई है

घर की ग्रिल काटकर चोरों ने लाखों की चोरी की

दानापुर। नगर के रूपसपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत अम्बिका विहार कॉलोनी स्थित घर के पीछे लगे ग्रील तोड़ अज्ञात चोरों ने 1 लाख नगद व लाखों के जेवरात चोरी कर ली। इस संबंध में पीड़ित शशिकांत प्रसाद की पुत्री साक्षी कुमारी ने स्थानीय थाने में अज्ञात चोरों के खिलाफ मामला दर्ज कराया है। वहीं पुलिस छानबीन में जुटी है। लिखित मामले में पीड़ित साक्षी ने बताया है कि उनका घर अम्बिका विहार कॉलोनी उत्तरी भाग, पुनम गैस गोदाम के पीछे है। बुधवार की रात उनकी बहन पढ़ने के लिए दूसरे घर में गई। जहां वह देखा कि दरवाजा अंदर से बंद है। वे इस बात की जानकारी सभी घर वालों को दी। उन लोगों ने दरवाजे को तोड़कर अंदर पहुंचे तो देखा कि कमरे में सारा सामान बिखरा पड़ा हुआ है। कमरे में रखे गोदरेज व आलमीरा का लॉक टूटा हुआ है। पीड़िता के मुताबिक चोर पीछे से ग्रील को तोडकर अंदर प्रवेश कर चोरी को अंजाम दिये है। चोरों ने आलमिरा व अन्य जगहों पर रखा करीब 1 लाख रुपए नगद सोने के सामान में 300 ग्राम सोने का सिक्का, 4 भर गहना, मंगल सूत्र, सोने का चैन, 400 ग्राम चाँदी का बिछिया आदि कुछ और सोने चाँदी का सामान चोरी कर के ले गये है। उन्होने तत्काल इसकी सूचना स्थानीय पुलिस को दी। वहीं मौके पर स्थानीय पुलिस छानबीन करते हुए आसपास मौजूद सीसीटीवी फुटेज खंगालने में जुट गई है।

गंगा पथ के उत्तर तेज रफ्तार कार गड्ढे में पलटा, दो घायल

पटना सिटी (प्राकि)। गंगा किनारे बने रोड पर महावीर घाट और नौजर घाट के बीच तेज रफ्तार कार गंगा की ओर पलटी खा गया। लोगों का कहना था कि कार में चार लोग सवार थे। कार हवा में उड़ते हुए गड्ढे में जा गिरा। इसमें इसमें सवार लोग फंसे हुए थे। स्थानीय लोगों ने किसी तरह से उन सबों को कार से बाहर निकाला। दो लोगों को इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया। गंगा किनारे चल रहे सौंदर्यीकरण के काम में लगा जेसीबी ने कार को निकाल कर बाहर किया।

मिलजुल कर मनाएं बकरीद का पर्व, सदस्यगण करें सहयोग

गंगा दशहरा पर एसडीआरएफ बाय एनडीआरएफ की होगी तैनाती, नदी मार्ग पर पुलिस गश्त

पटना सिटी, प्रात:किरण संवाददाता

गुलजारबाग स्टेडियम के सभागार में बकरीद के अवसर पर शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता ए एस पी शरथ आर एस एवं डी सी एल आर अभिलाषा सिन्हा ने किये। बैठक में मुख्य ईदगाह में माखनपुर ईदगाह, शनिचरा ईदगाह, दरगाह शाह अरजा, नौघरवा मस्जिद में बकरीद की नमाज अल सुबह अदा की जाएगी। सभी मस्जिद के पास साफ सफाई, चूना छिड़काव एवं कचरा का उठाव नियमित रूप से होने के साथ एक दिन पूर्व रात्रि पाली में भी नगर निगम की ओर से विशेष व्यवस्था की जाएगी। भीषण गर्मी को देखते हुए सभी मुख्य ईदगाह एवं मस्जिदों के पास पानी का टैंकर एवं एंबुलेंस की व्यवस्था रहेगी। इस पर्व में सामाजिक सौहार्द एवं प्रेम बना रहे, इसके लिए शांति समिति के सदस्यों को प्रशासन के साथ सहयोग के लिए तत्पर रहना होगा। नमाज अदा करने के स्थल पर पुलिस बल की तैनाती रहेगी तथा चौक चौराहे एवं गली-मोहल्ले में भी पुलिस बल की गश्ती विशेष रूप से की जाएगी। बकरीद के एक दिन पूर्व 16 जून को गंगा दशहरा होने के कारण घाटों पर बड़ी संख्या में लोग दूरदराज से आकर गंगा स्नान एवं पूजा-अर्चना करेंगे। अत्यधिक भीड़ को देखते हुए प्रशासन सजग एवं तत्पर है। अनहोनी से बचने के गंगा किनारे विशेष तौर पर गोताखोर एवं एसडीआरएफ की तैनाती होगी। बैठक में निगम के प्रतिनिधि व थानाध्यक्षों के साथ बिजली विभाग के अधिकारी समेत अन्य उपस्थित थे। शांति समिति के सदस्यों में पार्षद ज्योति रंजन दास उर्फ बैजू लाल दास, गणेश कुमार, रामजी योगेश, अंजू सिंह, धर्मेंद्र प्रसाद मुन्ना, पूर्व पार्षद गुलफिशां जबी उर्फ सुग्गन, संजय अलबेला, मिथिलेश कुमार शर्मा, फिरोज हसन, संजय मालाकार, सुजीत कसेरा, प्रफुल्ल पांडेय आदि मौजूद थे। बैठक में एएसपी शरथ आरएस ने कहा कि थानाध्यक्षों को सघन गश्ती का निर्देश दिया गया है। गंगा दशहरा को लेकर भी एसडीआरएफ व एनडीआरएफ की तैनाती रहेगी गंगा तट जाने वाले मार्ग पर पुलिस गश्ती करेगी। डीएसपी-2 डॉ गौरव कुमार ने कहा कि त्योहार के दौरान प्रशासनिक तैयारियां की गयी हैं।

व्यक्ति कि नाले में गिरने से मौत

प्रात:किरण संवाददाता

दानापुर खगौल थाना क्षेत्र के अंतर्गत नीमतल्ला रोड स्थित नाले से गिड़ने से चरघरवा मोड निवासी स्व0 मनोहर राम के पुत्र कृष्णा राम उम्र 50 वर्षीय की नाले में गिरने से मौत हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराकर परिजन को सौप दिया। उधर मौत की खबर मिलते ही पत्नी सोनी देवी व परिजन चित्कार कर उठे। मृतक वर्तमान में बडी खगौल फाटक के पास किराये के मकान में परिवार के साथ रहता था। मृतक नीमतल्ला रोड स्थित एक होटल में काम करता था।मृतक कृष्णा राम रोज की तरह काम करने गया था। वो बीमार चल रहा था। देर रात तक वापस नही लौटा तो परिजन उसे खोजने निकले पर कुछ पता नही चला। जानकारी मिला की शाम को होटल से एक हजार रुपए लेकर निकले थे। सुबह जब खोजने निकले तो नीमतल्ला रोड में नाले के पास उनका चप्पल मिला। उसके बाद भी ऐसा नही लगा कि वे नाले में गिडे होगे। मेरे पड़ोसी ने बताया कि नाला में एक आदमी गिरा हुआ है। जाकर देखे तो वो मेरे पति कृष्णा थे। थानाध्यक्ष सुनील कुमार ने बताया कि नीमतल्ला रोड स्थित एक नाला से कृष्णा राम का शव बरामद किया गया। उसे लू लगा था ऐसा प्रतीत होता है तबियत खराब चल रहा था। ऐसा लगता है कि नाला में गिड़ गया होगा। इस संबंध में मृतक के पत्नी के ब्यान पर मामला दर्ज किया गया है।

तख्तश्री कमेटी के अध्यक्ष पर नहीं, महासचिव पर जुमार्ना

वादी के वकील ने दी गलत जानकारी

पटना सिटी, प्रात:किरण संवाददाता

तख्तश्री पटना साहिब के तत्कालीन जत्थेदार ज्ञानी रणजीत सिंह के द्वारा जिला न्यायाधीश के यहां वाद संख्या 62/23 दर्ज किया गया था। इस मामले में बुधवार को सुनवाई की गई थी। इस संबंध में ज्ञानी रणजीत सिंह के अधिवक्ता रामनारायण महतो ने मोबाइल पर बताया कि प्रतिवादी संख्या एक तख्तश्री कमेटी के महासचिव इंद्रजीत सिंह और प्रतिवादी संख्या तीन अध्यक्ष जगजोत सिंह का प्रतिनिधित्व कर रहे अधिवक्ता के द्वारा बार-बार समय लिए जाने के बाद भी जवाब दाखिल नहीं किया जा रहा था। इस पर जिला जज ने नाराजगी जाहिर करते हुए दोनों पर दो हजार का जुमार्ना लगाने की बात गई थी। दरअसल अधिवक्ता रामनारायण महतो के द्वारा गलत सूचना दी गई। सुनवाई के दौरान जिला जज ने केवल कमेटी के महासचिव और प्रतिवादी संख्या एक महासचिव इंद्रजीत सिंह पर ही दो हजार का जुमार्ना लगाया है। इस मामले में अध्यक्ष जगजोत सिंह पर किसी तरह का कोई जुमार्ना नहीं लगाया गया है। यह गलत सूचना वादी के अधिवक्ता के द्वारा दिए जाने के कारण खबर छापने में भूल हुई है।

ओल्ड पेंशन योजना लागू कर नई शिक्षा नीति 2020 को वापस लेने की मांग

अभा प्रारंभिक शिक्षक संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में

पटना सिटी, प्रात:किरण संवाददाता

अखिल भारतीय प्रारंभिक शिक्षक महासंघ (एआईएफईटीओ) कन्या कुमारी से कश्मीर तक फैल गया है। जम्मू एंड कश्मीर टीचर एक्शन कमेटी द्वारा अखिल भारतीय प्रारंभिक शिक्षक महासंघ का राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक श्रीनगर कश्मीर में लाल चौक, लाला रुख होटल में श्री प्रभाकर आरडे की अध्यक्षता में हुई। राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक ओल्ड पेंशन योजना को लागू करने की मांग रखी गई। बैठक में नई शिक्षा नीति 2020 को वापस लेने, देश में छात्रों के लिए एक सिलेबस लागू करने, देश में सभी शिक्षकों को एक वेतनमान लागू करने की मांग रखी गई। बैठक में बिहार, महाराष्ट्र, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, झारखंड, तामिलनाडु एवं अन्य राज्यों के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य ने भाग लिया। राष्ट्रीय कार्यकारिणी के बैठक में अखिल भारतीय प्रारंभिक शिक्षक महासंघ के राष्ट्रीय महासचिव डॉ भोला पासवान को जम्मू-कश्मीर टीचर्स ज्वाइंट एक्शन कमेटी के अध्यक्ष विनोद शर्मा द्वारा बुकें देकर सम्मानित किया गया एवं अखिल भारतीय प्रारंभिक शिक्षक महासंघ के राष्ट्रीय सचिव अन्ना मलाई ने अंग वस्त्र देकर राष्ट्रीय महासचिव को सम्मानित किया गया। बैठक के बाद राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सालिग्राम पटेल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

नवनिर्वाचित सांसद कंगना पर हमला करने वाली जवान को सपोर्ट करने वाला आरोपी से बड़ा गुनहगार

पटना सिटी, प्रात:किरण संवाददाता

पटना विश्वविद्यालय के सिंडिकेट सदस्य पप्पू वर्मा ने कहा कि नवनिर्वाचित सांसद एवं अभिनेत्री कंगना रनौत पर सीआईएसएफ के महिला जवान द्वारा हमला करना दुर्भाग्यपूर्ण है। यह देश के लिए चिंता का विषय है। श्री वर्मा ने कहा कि जब रक्षक ही इस प्रकार का हरकत करने लगे, तो हर आम और खास व्यक्ति अपने आपको असुरक्षित महसूस करेगा। जबकि हर व्यक्ति अपने आपको सुरक्षा कर्मियों के साए में सुरक्षित महसूस करता है। लेकिन इस घटना के कारण लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया गया है और जिसके साथ यह हादसा हुआ है, वह अपने आपको हमेशा उन सुरक्षाकर्मियों के सामने से गुजरते वक्त डरा हुआ महसूस करेगा। उसका आत्मविश्वास हमेशा टूटा रहेगा। इसकी जवाबदेही कौन लेगा। हमलावर महिला जवान को जिस प्रकार से किसान आंदोलन से प्रेरित और आंदोलन के प्रबल समर्थक होने की बात कही जा रही है, यह देश के लिए खतरनाक है। कारण कि पहले भी आंदोलनकारी के वेश में देश के खिलाफ खतरनाक योजना एवं मंसूबे रखने वाले लोगों पर कार्रवाई करने पर सुरक्षाकर्मी द्वारा ही देश की एक प्रधानमंत्री की हत्या किया जा चुका है। श्री वर्मा ने कहा कि आज भी देश में कुछ लोग देश के खिलाफ इसी प्रकार का षड्यंत्र रच योजना बना कर काम कर रहे है। ऐसे ही मानसिकता वाले लोगों द्वारा आरोपी जवान को समर्थन जिस प्रकार से दिया जा रहा है, वह देश के लिए खतरे की घंटी है। श्री वर्मा ने कहा कि जिन लोगों द्वारा महिला सुरक्षा कर्मी को उसके घटिया कारनामा पर सपोर्ट किया जा रहा है, ऐसे लोगों पर नजर रखते हुए और सूची बना कर अविलंब भारत सरकार सख्त कार्रवाई करे, ताकि भविष्य में देश के अंदर इस प्रकार की घटना एवं कोई बड़ी दुर्घटना को रोका जा सके।

पटना से नई दिल्ली एवं गया से आनंद विहार के लिए चलेगी सुपरफास्ट क्लोन एक्सप्रेस स्पेशल

प्रात:किरण संवाददाता

हाजीपुर। यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ के मद्देनजर पटना से नई दिल्ली एवं गया से आनंद विहार के लिए सुपरफास्ट क्लोन एक्सप्रेस स्पेशल ट्रेन का परिचालन किया जायेगा जिनका विवरण निम्नानुसार है :- गाड़ी सं. 02393/02394 पटना-नई दिल्ली-पटना सुपरफास्ट क्लोन एक्सप्रेस स्पेशल (सप्ताह में छः दिन) (संपूर्ण क्रांति एक्सप्रेस का क्लोन): गाड़ी सं. 02393 पटना-नई दिल्ली सुपरफास्ट क्लोन एक्सप्रेस स्पेशल 14 जून से 30 जून तक (गुरूवार को छोड़कर सप्ताह में छः दिन) पटना से 20.10 बजे प्रस्थान कर अगले दिन 12.10 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी। वापसी में, गाड़ी संख्या 02394 नई दिल्ली-पटना सुपरफास्ट क्लोन एक्सप्रेस स्पेशल 15 जून से 01 जुलाई तक (शुक्रवार को छोड़कर सप्ताह में छः दिन) नई दिल्ली से 13.20 बजे प्रस्थान कर अगले दिन 07 बजे पटना पहुंचेगी। अप एवं डाउन दिशा में यह ट्रेन दानापुर, आरा, बक्सर, पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन, प्रयागराज जं एवं गोविंदपुरी स्टेशनों पर रूकेगी। इस स्पेशल में 1अउ का 01 कोच, 2अउ के 02 कोच, 3अउ के 04 कोच, 3ए के 03 कोच, शयनयान श्रेणी के 06 एवं साधारण श्रेणी के 03 कोच होंगे। गाड़ी सं. 02397/02398 गया-आनंद विहार-गया सुपरफास्ट क्लोन एक्सप्रेस स्पेशल (सप्ताह में छः दिन) (महाबोधी एक्सप्रेस का क्लोन): गाड़ी सं. 02397 गया-आनंद विहार सुपरफास्ट क्लोन एक्सप्रेस स्पेशल दिनांक 14 जून से 30 जून तक (शनिवार को छोड़कर सप्ताह में छः दिन) गया से 14.15 बजे प्रस्थान कर अगले दिन 07.10 बजे आनंद विहार पहुंचेगी। वापसी में, गाड़ी संख्या 02398 आनंद विहार-गया सुपरफास्ट क्लोन एक्सप्रेस स्पेशल 15 जून से 01 जुलाई तक (रविवार को छोड़कर सप्ताह में छः दिन) आनंद विहार से 08.20 बजे प्रस्थान कर अगले दिन 00.30 बजे गया पहुंचेगी। अप एवं डाउन दिशा में यह ट्रेन अनुग्रह नारायण रोड, डेहरी ऑन सोन, सासाराम, भभुआ रोड, पंडित दीन दयाल उपाध्याय जं., प्रयागराज जं एवं गोविंदपुरी स्टेशनों पर रूकेगी। इस स्पेशल में 2अउ के 01 कोच, 2अ.ऐ 3अउ के 02 कोच, 3 अउ के 02 कोच, शयनयान श्रेणी के 08 एवं साधारण श्रेणी के 07 कोच होंगे। इसके साथ ही 14 जून पटना से नई दिल्ली के लिए एक अनारक्षित स्पेशल ट्रेन 04001 पटना-नई दिल्ली अनारक्षित वन-वे स्पेशल का परिचालन किया जायेगा। यह स्पेशल 14 जून को पटना जं. से 21.30 बजे खुलकर आरा, बक्सर, डीडीयू, प्रयागराज, कानपुर स्टेशनों पर रूकते हुए अगले दिन 15 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी।

नहर में पानी नहीं पहुंचने से किसानों में असंतोष, प्रदर्शन आज

प्रात:किरण संवाददाता

बिक्रम :- गोपाल विद्यार्थी धान का कटोरा कहे जाने वाला बिक्रम आज भीषण गर्मी में समय पर वर्षा एवं नहर में पानी नहीं आने से जल संकट से जुझ रहा है धान का बिचरा सूखने लगा है, किसानो में असंतोष व्याप्त है नहर में पानी नहीं रहने से किसान परेशान हैं, पानी की मांग को लेकर अखिल भारतीय किसान महासभा के नेतृत्व में आज क्षेत्रीय किसान अवर प्रमंडल सिंचाई विभाग बिक्रम के प्रांगण में प्रदर्शन करने का फैसला किया है रोहन नक्षत्र बीत जाने के बाद भी सुखी नहर से किसानो में असंतोष है किसानो के खेत में धान के बिचरे सूखने लगे हैं पानी की कमी से परेशान किसानो ने नहर में तत्काल पानी छोड़ने की मांग को लेकर धरना आयोजित की है किसान नेताओं ने उक्त धरना में क्षेत्रीय किसानो से अधिक संख्या में भाग लेकर अपनी मांग को मजबूत करने की अपील की है।

तनखैया घोषित तख्तश्री कमेटी सचिव को लगी धार्मिक सजा

पटना सिटी, प्रात:किरण संवाददाता

तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में पंज प्यारों की बैठक जत्थेदार ज्ञानी बलदेव सिंह की अध्यक्षता में दरबार साहिब में हुई। इसमें पंज प्यारे साहिबान ने तनखैया घोषित प्रबंवधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के सचिव हरबंश सिंह को धार्मिक सजा सुनाई गई। बैठक में अतिरिक्त मुख्य ग्रंथी भाई दिलीप सिंह, ज्ञानी गुरदयाल सिंह, सीनियर मीत ग्रंथी ज्ञानी परशुराम सिंह और मीत ग्रंथी ज्ञानी अमरजीत सिंह ने दरबार साहिब में मामले की सुनवाई करते हुए धार्मिक सजा सुनायी। इसके तहत एक घंटा कीर्तन सुनना और जोड़ाघर (जूता चप्पल घर) में जोड़ा साफ करने के आधा घंटा सेवा देने बाद 501 रुपए का कड़ाह प्रसाद की सेवा कराना था। सजा सुनाए जाने के बाद ही हरबंश सिंह ने धार्मिक सजा पूर्ण करने के बाद सचिव को दोषमुक्त कर दिया।

साथ ही पंज प्यारों ने हिदायत दिया कि गुरु घर की मयार्दा के खिलाफ कार्य करने पर आगे भी कार्रवाई की जा सकती है। पंज प्यारों ने बीते अप्रैल माह में तनखैया घोषित किया था। इसमें कहा गया था कि सचिव हरबंश सिंह से सात मई, 23 को तत्कालीन जत्थेदार ज्ञानी रणजीत सिंह को हाई पावर जांच कमेटी के द्वारा सौंपे गए रिपोर्ट के आधार पर दोष मुक्त करार दिया गया है। इस आधार पर आपको सेवा करने की अनुमति दी जाती है। मगर इसके पहले आप तख्तश्री पटना साहिब के पंज प्यारे से मिल लें। लिखे गए इसी पत्र के आधार पर पूर्व जत्थेदार ज्ञानी रणजीत सिंह गौहर ए मस्कीन ने जिला न्यायाधीश की अदालत में वाद 62/23 मुकदमा प्रबंधक कमेटी के खिलाफ दर्ज करा रखा है। उसी मामले कोर्ट में दाखिल किए पत्र के मामले में तनखैया किया गया था। हालांकि पंज प्यारों ने उनके द्वारा सौंपे गए जवाब में कहा था कि आप गलत कह रहे हैं। यह आपका ही हस्ताक्षर है। यदि ऐसा नहीं है, तो आप जिला न्यायाधीश के अदालत में लिखित में इस संबंध में दें और उसकी प्रति लेकर आएं, तभी मामले पर विचार किया जाएगा। सचिव के द्वारा जिला न्यायाधीश के यहां सौंपे गए पत्र की प्रति पंज प्यारों के समक्ष पेश किए जाने के बाद ही उन्हें धार्मिक सजा सुनाई गई, जिसे उन्होंने पूरा भी किया।

उच्च जोखिम प्रसव वाली गर्भवतियों का तैयार हो रहा डेटाबेस

गर्भवती महिलाओं की व्यक्तिगत ट्रैकिंग और फॉलोअप में होगी आसानी

- सांस्थानिक व सुरक्षित प्रसव होगी आसान, मातृ मृत्यु दर में आयेगी कमी

प्रात:किरण संवाददाता

पटना। सुरक्षित प्रसव के लिए प्रसव पूर्व जांच स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख प्राथमिकताओं में शामिल है। राज्य के गर्भवतियों को गुणवत्तापूर्ण और उचित प्रसव पूर्व जांच उपलब्ध हो सके इसके लिए प्रत्येक महीने की 9 और 21 तारीख को एक्सटेंडेड प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान भी चलाया जाता है। इस अभियान के दौरान उच्च जोखिम प्रसव वाली गर्भवतियों का डेटाबेस तैयार किया जा रहा है, ताकि प्रसव के दौरान उन्हें जरूरी परामर्श और आवश्यक सहायता प्रदान की जा सके। इससे राज्य में मातृ मृत्यु दर को भी कम किया जा सकेगा। उल्लेखनीय है कि राज्य में मातृ-मृत्यु दर में कमी के आंकड़े उत्साहित करने वाले हैं। सैंपल रजिस्ट्रेशन सर्वे (एसआरएस) के अनुसार, बिहार में 2011-13 की तुलना में 2018-20 में मातृ-मृत्यु दर 208 से घटकर 118 पर आ गया है। एम्स, पटना में एडिशनल प्रोफेसर डॉ इंदिरा प्रसाद के अनुसार, उच्च जोखिम वाली महिलाओं का व्यक्तिगत डेटाबेस तैयार होने से सुरक्षित प्रसव में आसानी होगी। वहीं प्रसव पूर्व चार जांच से उनके प्रसव के दौरान होने वाले जोखिम को भी कम किया जा सकेगा। प्रथम रेफरल व्यवस्था होगी दुरुस्त विभाग की मंशा है कि प्रसव पूर्व जांच के दौरान उच्च जोखिम प्रसव वाली गर्भवतियों के डेटाबेस तैयार होने से प्रथम रेफरल व्यवस्था दुरुस्त होगी। गर्भवतियों की ट्रैकिंग और फॉलोअप में भी आसानी होगी। राज्य में ई-प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान को लागू करने का मुख्य उद्देश्य उच्च जोखिम वाले प्रसव जो चिन्हित किए गए हैं उनका लूप बंद किए जाने तक के परिणाम का व्यक्तिगत ट्रैकिंग किया जाए। लूप बंद किए जाने का अभिप्राय 3 अतिरिक्त प्रसव पूर्व जांच के साथ शिशु के जन्म के 45 दिन बाद तक मातृ एवं शिशु के संतोषजनक परिणाम की ट्रैकिंग है।

अतिरिक्त दिन क्लिनिक का भी किया जाएगा आयोजन

ई-प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान की विशेषता है कि इसमें उच्च जोखिम वाले प्रसव की पहचान कर उनके लिए अतिरिक्त दिन क्लिनिक का आयोजन किया जाता है, ताकि संभावित परिणामों में 4 प्रसव पूर्व जांच में वृद्धि, सांस्थानिक प्रसव में वृद्धि की जा सके।

मालसलामी में फायरिंग, मारपीट व पथराव में आठ गिरफ्तार

- बच्चों के बीच खेल के दौरान झगड़ा ने लिया बड़ा रूप

पटना सिटी, प्रात:किरण संवाददाता

मालसलामी थाना की पुलिस ने रिकाबगंज मुहल्ला में बुधवार की रात हुई मारपीट, फायरिंग और पथराव मामले में आठ लोगों को गिरफ्तार किया है। थानाध्यक्ष राजकुमार सिंह ने बताया कि संजय राय, लक्ष्मी कुमार, चिंटू कुमार, चुलबुल कुमार, उदय राय को और दूसरे पक्ष से सुरेश प्रसाद, छोटू कुमार और सुलेंद्र कुमार को गिरफ्तार किया गया है। छापेमारी के लिए पहुंची टीम ने घटनास्थल से एक खोखा भी बरामद किया है। थानाध्यक्ष के नेतृत्व में गठित छापेमारी दल में दारोगा अजीत कुमार, अभिषेक कुमार, अमित कुमार, अविनाश कुमार, पीटीसी अनवर आलम, मनोज कुमार सिंह, मुकेश कुमार और दीनानाथ यादव के साथ पुलिस बल शामिल था। बताते चलें कि मारपीट व फायरिंग की घटना में दो लोग जख्मी भी हुए थे। दोनों का इलाज पुलिस ने गुरु गोविंद सिंह सदर अस्पताल में कराया था। थानाध्यक्ष ने बताया कि फिलहाल स्थिति को पुलिस नियंत्रण में कर ली है और पुलिस मामले की गहराई से छानबीन कर रही है। घटना के बाद इलाके में फिलहाल शांति है पुलिस बल की तैनाती है। घटना के बारे में बताया जा रहा है कि रिकाबगंज के उदय कुमार एवं सुरेश राय के बच्चों के बीच खेल-खेल को लेकर आपस में लड़ाई झगड़ा शुरू हो गया। इस बीच आपस में दोनों पक्ष उलझ गए। पहले जमकर पथराव हुआ। इसके बाद दोनों तरफ से गोलीबारी और पथराव हुआ।

केन्द्रीय भूमि जल, मध्य पूर्वी-क्षेत्र, पटना में क्षेत्रीय हिंदी राजभाषा कार्यशाला आयोजित

प्रात:किरण संवाददाता

पटना। केन्द्रीय भूमि जल, मध्य पूर्वी-क्षेत्र, पटना में क्षेत्रीय निदेशक राजीव रंजन शुक्ला की अध्यक्षता में गुरुवार को हिंदी राजभाषा कार्यशाला आयोजित किया गया। इस कार्यशाला में अजीत कुमार शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा राजभाषा कीसंवैधानिक स्थिति, राजभाषा अधिनियम एवं नियमह्न विषय पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। क्षेत्रीय निदेशक राजीव रंजन शुक्ला नेकार्यालय में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग करने की आवश्यकता बताई। इस कार्यशाला में केन्द्रीय भूमि जल, मध्य-पूर्वी क्षेत्र, पटना के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अतिरिक्त भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, पटना, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, पटना एवं इंडियनफार्मर्स फर्टिलाइजर कारपोरेशन के अधिकारियों/कर्मचारियोंने भाग लिया। अन्य विभागों से आये अधिकारियों ने अपने विभाग में राजभाषा हिंदी में हो रहे कार्यों के विषय में अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन सोनम, वैज्ञानिक- ने किया। खुशबू आनन्द, वैज्ञानिक- के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

खाजेकलां घाट पर होगा गंगा दशहरा महोत्सव

पटना सिटी, प्रात:किरण संवाददाता

गंगा दशहरा 16 जून को है। इसको लेकर खाजेकलां घाट पर गंगा दशहरा महोत्सव का आयोजन किया गया है। महोत्सव समिति के अध्यक्ष अमरजीत कुमार उर्फ ट्विंकल गुप्ता ने बताया कि महोत्सव के दौरान गंगा पूजन, आरती और भगवती जागरण का आयोजन किया गया है। आयोजन में विधानसभा अध्यक्ष नंदकिशोर यादव, महापौर सीता साहू और पार्षदगण के साथ अन्य प्रबुद्ध लोग शामिल होंगे। भद्र घाट पर मां गंगा सेवा समिति के अध्यक्ष मिथिलेश कुमार की देखरेख में भी गंगा दशहरा महोत्सव की तैयारी की जा रही है। गंगा समन्वय समिति की ओर से लॉ कालेज घाट पर गंगा आरती होगी। संयोजक सुबोध कुमार ने बताया कि आयोजन में राष्ट्रीय मंत्री रामाशंकर सिन्हा, शत्रुघ्न पांडेय, प्रीति कुमारी आदि उपस्थित होंगे। कंगन घाट पर गंगा सेवा दल समन्वय समिति की ओर से गंगा दशहरा महोत्सव को लेकर समिति के संस्थापक अध्यक्ष डॉ राजीव गंगौल, महासचिव पंडित राजेश शुक्ला टिल्लू की देखरेख में महोत्सव होगा।

अवैध खनन मामलों की आर्थिक अपराध ईकाई करेगी जांच : विजय

बोलें- अवैध खनन एवं परिवहन का प्रश्रय देने वाले विभागीय पदाधिकारियों पर होगी कार्रवाई

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

उप मुख्यमंत्री सह खान एवं भूतत्व विभाग के मंत्री विजय कुमार सिन्हा ने विभागीय अधिकारियों के साथ बैठक कर विभाग के अंदर सुधार की प्रक्रिया को लागू करने का निदेश दिया। उन्होंने सही काम करने वाले को परेशान न करने और गलत काम करनेवाले को बचाने एवं प्रोत्साहन नहीं देने का ध्यान रखने हेतु अधिकारियों को निदेश दिया। जाँचोपरान्त अधिकारी के प्रतिवेदन पर त्वरित कार्रवाई करते हुए अवैध खनन एवं परिवहन को बढ़ावा देने के मामले में लखीसराय जिला के खनिज विकास पदाधिकारी रणधीर कुमार को निलंबित करने का आदेश दिया है। ये मुंगेर जिला के भी अतिरिक्त प्रभार में थे। खान एवं भूतत्व विभाग को मुंगेर जिलान्तर्गत हेमजापुर, सफिया सराय थानान्तर्गत लघु खनिज, बालू के अवैध परिवहन की सूचना पर गठित निदेशक, खान एवं भूतत्व विभाग द्वारा प्रतिवेदन पर सरकार ने निलंबन की कार्रवाई की है। उल्लेखनीय है कि विभाग को मिली गुप्त सूचना के आधार पर मुंगेर जिला में छापेमारी कर कुल 46 वाहनों को पकड़ा गया, जिसमें से 06 वाहन ई-चालान के साथ थे, पर ओवरलोडेड थे एवं 40 वाहन बिना ई-चालान के थे। उन वाहनों पर कुल राशि-1 करोड़ 42 लाख शमन शुल्क अधिरोपित किया गया। विभागीय प्रतिवेदन के अनुसार वर्णित क्षेत्र में 40 वाहन बिना ई-चालान के थे। थाना एवं जिला में पदस्थापित विभागीय अधिकारी द्वारा नियमित जाँच नहीं करने और सांठ-गाँठ करने के कारण यह अनियमितता धड़ल्ले से की जा रही है। उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने आदेश दिया है कि अवैध खनन एवं परिवहन मामलों में दर्ज प्राथमिकी की जाँच आर्थिक अपराध ईकाई से कराई जाय। उल्लेखनीय है कि विभागीय कर्मी इस अनियमितता को बढ़ावा देते हैं। उनकी पहचान कर उनपर कार्रवाई करने का भी निर्णय लिया गया है। श्री सिन्हा ने कहा कि जिन ढाबों से वाहन जब्त किये गये उन्हें भी अवैध परिवहन का कारक माना जायेगा। संबंधित समाहर्त्ता स्पष्टीकरण पूछकर आवश्यक कार्रवाई करेंगे। श्री सिन्हा ने कहा कि जिन घाटों से ई-चालान निर्गत हुये और वाहन ओवरलोडेड पाये गये उन बालू घाटों पर भी कार्रवाई हेतु समाहर्त्ता को निदेश दिया गया है। इस अवसर पर विभाग अपर मुख्य सचिव मिहिर कुमार सिंह, सचिव, एवं निदेशक सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

सभी योग्य किसानों को दिया जाये कृषि ऋण : मंत्री

- राज्यस्तरीय बैंकर्स समिति की बैठक में बोलें कृषि मंत्री

पटना। कृषि मंत्री मंगल पाण्डेय की अध्यक्षता में राज्यस्तरीय बैंकर्स समिति की कृषि एवं उससे संबद्ध विषयों की उप समिति-2 की बैठक आयोजित की गई। मंत्री ने कहा कि कृषि ऋण सभी योग्य किसानों को दिया जाये। अभी तक की प्रगति संतोषजनक नहीं है। किसान बहुत उम्मीद के साथ ऋण के लिए बैंकों में आवेदन करते हैं और बिना उचित कारण के उसे अस्वीकृत कर दिया जाता है। आवेदन प्रपत्र हिन्दी में सरल होने के साथ ऐसा हो कि आवेदक किसान को आवेदन करने में कोई कठिनाई नहीं हो। इसके साथ ही, बैंक भी अपने स्तर से आवेदन भरने में किसानों की मदद करें। उन्होंने कहा कि सभी बैंक अधिक-से-अधिक किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड उपलब्ध करायें। के॰सी॰सी॰ देने के बाद किसानों से लगातार सम्पर्क स्थापित कर उन्हें राशि ससमय वापस करने के लिए प्रोत्साहित भी करें, ताकि किसानों को कृषि ऋण पर ब्याज अनुदान का लाभ प्राप्त हो सके। किसान जानकारी के अभाव में समय पर राशि वापस नहीं कर पाते हैं, जिससे वे ब्याज पर अनुदान के लाभ से वंचित हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि सी-डी रेसियो पहले की अपेक्षा बढ़ी है। बैंकों को किसानों के हित में कार्य करना पड़ेगा एवं इसका परिणाम सामने आना चाहिए। दूसरे राज्यों के किसानों को बैंकों से काफी लाभ मिलता है। इसकी तुलना में बिहार के किसानों को बैंकों से समुचित लाभ नहीं मिल पाता है। इसके लिए, सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। विभागीय सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने कहा कि आशा करते हैं कि बैंक किसानों के हित में ज्यादा-से-ज्यादा किसानों को ऋण उपलब्ध करायेंगे। उन्होंने बैंकों को नये के सी सी लाभुक किसानों की सूची उपलब्ध कराने का निदेश दिया। इस बैठक में कृषि निदेशक मुकेश कुमार लाल, निदेशक उद्यान अभिषेक कुमार, उप महाप्रबंधक, नाबार्ड प्रकाश कुमार मिश्रा, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, बिहार राज्य सहकारिता बैंक लिमिटेड, विभिन्न वाणिज्यिक बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक के वरिष्ठ पदाधिकारियों द्वारा भाग लिया गया।

सूबे में मंगलराज का अद्भुत आपराधिक नजारा देखिए : तेजस्वी

- बोलें-आपराधिक घटनाओं को लेकर शीर्ष नेता ओढ़ रखी है चुप्पी

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने कानून व्यवस्था को लेकर एक बार फिर राज्य सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने बिहार में पिछले कुछ दिनों में घटे घटनाओं का विवरण देते हुए कहा है कि इन आपराधिक घटनाओं को लेकर राज्य के मुख्यमंत्री और दो दो उपमुख्यमंत्रियों ने आपराधिक चुप्पी ओढ़ रखी है। तेजस्वी यादव ने सरकार से इन मामलों को लेकर सवाल भी पूछा है। तेजस्वी यादव ने एनडीए के नेताओं को डबल इंजन सरकार को मंगलराज बताए जाने को लेकर भी तंज कसा है। तेजस्वी यादव ने अपने सोशल मीडिया पर ट्विट कर बिहार सरकार को घेरा है। तेजस्वी ने कहा कि, बिहार में डबल इंजन सरकार के चंद घंटों के मंगलराज का अद्भुत आपराधिक नजारा देखिए। मुख्यमंत्री से लेकर दो-दो उपमुख्यमंत्री सहित समूचा अमला आपराधिक घटनाओं को लेकर आपराधिक चुप्पी ओढ़े हुए है। तेजस्वी ने इन दिनों के हुए घटनाओं को बताते हुए लिखा कि, नवादा में सरेराह महिला को चाकू घोंपा, हालत नाजुक! पटना में दो बहनों पर चाकू से हमला, दोनों गंभीर रूप से जख्मी! भागलपुर में बदमाशों ने निर्वस्त्र कर महिला की पीट-पीटकर की निर्मम हत्या। सुपौल में दो बच्चों की निर्मम हत्या, गड्ढे में मिले शव। मुंगेर के डंगरी नदी में महिला का मिला शव। छपरा में कोर्ट जा रहे दो प्रसिद्ध वकीलों की अपराधियों ने गोली मारकर हत्या की। छपरा में बेखौफ अपराधियों ने युवक को गोली मार मचाया तांडव। छपरा में पुलिस टीम पर हमला। भोजपुर में प्लंबर की हुई हत्या। कोईलवर पुल के पास मिली लाश। मोतिहारी के घोड़ासहन में अपराधियों ने व्यवसायी को गोली मार पैसे लूट फरार। गोपालगंज में हार्डवेयर कारोबारी को गोली मारी। बगहा में पंचायती के दौरान ताबड़तोड़ फायरिंग। आरा में हथियारबंद अपराधियों ने की फायरिंग, क्षेत्र में मचा हड़कंप, युवक को लगी गोली। पटना के मसौढ़ी में अपराधियों ने की कई राउंड फायरिंग, एक को लगी गोली। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि, इन घटनाओं को लेकर बिहार के मुख्यमंत्री और दो दो उप मुख्यमंत्री सहित समूचा अमला आपराधिक घटनाओं को लेकर चुप्पी ओढ़े हुए है।

अपराधियों को संरक्षण देना राजद की राजनीति की बुनियाद : सम्राट

- बोलें- अपराधी कोई भी हो, सरकार उसे बख्शने वाली नहीं

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा है कि भाजपा वंशवादी, परिवारवादी राजनीति और राजनीति के अपराधीकरण का हमेशा से विरोधी रही है। भाजपा केवल चुनाव और वोट की नहीं बल्कि देश बनाने, देश को आगे बढ़ाने और विकास की राजनीति करती है। इसीलिये भाजपा का मूल मंत्र सबका साथ और सबका विकास है। श्री चौधरी ने कहा कि अपराधियों को संरक्षण देना व भ्रष्टाचार करना राजद की राजनीति की बुनियाद रही है। जिस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ही सजायाफ्ता भ्रष्टाचारी है, जिसके आधे दर्जन से ज्यादा विधायकों व मंत्रियों को चारा और अलकतरा घोटाले में जेल जाना पड़ा था, उस दल से आज भी सदाचार की उम्मीद नहीं की जा सकती है। उन्होंने राजद द्वारा अपराध को लेकर उठाए गए सवाल पर कहा कि जिसके शासनकाल में नरसंहारों व फिरौती के लिए अपहरण का अंतहीन सिलसिला रहा हो, अपराधियों को संरक्षण देकर जिसने पूरे बिहार में डेढ़ दशक तक भय व दहशत का माहौल बना कर रखा, उसे आज अपराध पर बोलने का कोई नैतिक हक नहीं है। श्री चौधरी ने कहा कि अपराधी कोई भी हो, सरकार उसे बख्शने वाली नहीं है। सरकार तत्पर है, अपराध की हर घटना के खिलाफ सख्ती से कार्रवाई हो रही है। बालू, दारू व जमीन माफियाओं की कुंडली तैयार हो रही है, किसी को भी छोड़ा नहीं जाएगा।

नीतीश कुमार ने बिहार को सुशासन की पटरी पर लाया : उमेश

- कहा- कानून-व्यवस्था के विषय पर सरकार को उपदेश ना दें राजद नेता

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने गुरुवार को बयान जारी कर नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव को निशाने पर लिया। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि बिहार में आपराधिक तांडव का वास्तविक रूप जानने और समझने के लिए तेजस्वी यादव को अपने माता-पिता के शासनकाल का काला इतिहास पलटना चाहिए। जंगलराज शब्द की उत्पत्ति लालू-राबड़ी सरकार की देन है और लंबे कालखंड तक बिहार को पूरे देश-दुनिया में इससे भारी फजीहत झेलनी पड़ी। श्री उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि राजद की सरकार में सत्ता संरक्षित अपराधियों का बोलबाला था। महिलाओं व बहन-बेटियों को खुले में सांस लेने तक की आजादी नहीं थी। नब्बे के दशक में बिहार की जनता ने अपना जान-माल दोनों ही भगवान भरोसे छोड़ दिया था। फिरौती और डकैती का भय व्यवसाय से जुड़े लोगों को पलायन करने पर मजबूर कर दिया था। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि अगर तेजस्वी यादव 1990 से 2005 तक के दौर से अनजान हैं तो उन्हें अपने माता-पिता से पूरी जानकारी लेनी चाहिए। श्री कुशवाहा ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपने असाधारण प्रशासनिक कौशल से बिहार को सुशासन की पटरी पर लाया। हमारे राजनीतिक विरोधी भी दबे जुबान से इस बात को स्वीकार करते हैं। राजद के दौर में जंगलराज का पर्याय बना बिहार आज देशभर में विकास और सुशासन का मिसाल पेश कर रहा है। गिने-चुने आपराधिक घटनाओं को आधार बनाकर जंगलराज से तुलना करना कहीं न कहीं तेजस्वी यादव की घोर नासमझी का परिचायक है। लालू-राबड़ी की सरकार में नेता और अधिकारी तक की दिनदहाड़े हत्या हो जाती थी। फिरौती के लिए उनके परिजनों को तो उठा लिया जाता था लेकिन आज कोई कितना भी बड़ा अपराधी क्यों ना हो कानून के शिकंजे से नहीं बच सकता है। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि जनता द्वारा नकार दिए जाने के बाद भी तेजस्वी यादव दुष्प्रचार और भ्रम फैलाने से बाज नहीं आ रहे हैं। अगर यही स्थिति रही तो बिहार विधानसभा चुनाव में जनता बाकी कसर भी पूरा कर देगी।

रोजगार उपलब्ध कराना जन सुराज का मकसद : प्रशांत

गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित करेगा जन सुराज

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जन सुराज बिहार की राजनीति में क्रांतिकारी परिवर्तन का द्योतक बनेगा जिसका सबसे बड़ा मकसद विकसित बिहार बनाना और पलायन को रोक यहां बेरोजगारों को रोजगार उपलब्ध कराना है। जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर इसी स्पष्ट सोंच के साथ बिहार के गांवों में पदयात्रा कर लोगों को लामबंद कर रहे हैं। उक्त बातें गुरूवार को जारी एक बयान में जन सुराज के प्रदेश मुख्य प्रवक्ता सह मीडिया प्रभारी संजय कुमार ठाकुर ने कही। उन्होंने कहा है कि प्रशांत किशोर चाहते हैं कि जन सुराज सत्ता में आएगी तो चौपट शिक्षा, स्वास्थ्य और खेती -किसानी की व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन लाकर उसे वैश्विक मानक के अनुरूप बनाया जाएगा और नया पलायन रोकते हुए एक वर्ष के भीतर रोजगार के लिए दूसरे प्रदेशों में पलायन कर चुके बिहारी भाइयों को भी वापस बिहार बुलाकर उन्हें रोजगार उपलब्ध कराया जाएगा। ताकि वे अपने परिवार जनों के साथ बेहतर जीवन जी सकें। श्री ठाकुर ने बताया कि प्रशांत किशोर की स्पष्ट समझ है कि उच्च स्तरीय और गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा व्यवस्था से ही नागरिकों का सर्वांगीण विकास संभव है। इसके लिए सभी प्रखण्डों में नेतरहाट की बराबरी का विद्यालय खोले जाएंगे जहां गरीबों, किसानों, मजदूरों, दलितों, अल्पसंख्यकों समेत समाज के सभी वर्गों के लोगों के बच्चे उच्च स्तरीय और गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर अपने पैरों पर खड़ा हो सकेंगे। पीके की घोषणा है कि स्वास्थ्य की ऐसी व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी जिसमें आम जनता को उनके घर के निकट बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराया जा सके। खेती -किसानी को मुनाफेदार बनाने का उपाय जन सुराज की प्राथमिकता होगी। मुख्य प्रवक्ता सह मीडिया प्रभारी श्री ठाकुर ने बताया कि बैंकों के कैश डिपाजिट रेशियो की ताकत से बेरोजगार नौजवानों और लोगों को आर्थिक सहायता कर उन्हें स्वरोजगार का अवसर प्रदान किया जाएगा और तकनीकी विशेषज्ञों के सहयोग से उनके कारोबार व उद्योग धंधों को विकसित कराया जाएगा।

नैतिकता को ताक पर रख चुके हैं राजद के युवराज : राजीव

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा है कि हमारे बार-बार आग्रह करने पर भी राजद के युवराज गरीब बिहारियों की हड़पी जमीनों को लौटाने के विषय पर एक शब्द भी नहीं बोल रहे हैं। यह दिखाता है कि जमीनों के लोभ में उन्होंने नैतिकता और ईमानदारी को ताक पर रख दिया है। अपने भाषणों में वह बिहारियों का हमदर्द बनने का सिर्फ दिखावा करते हैं। मौका मिलने पर वह भ्रष्टाचार और घोटालो में लालू जी को भी पीछे छोड़ने से बाज नहीं आएंगे।उन्होंने कहा कि हकीकत में राजद-कांग्रेस जैसे वंशवादी दलों का आधार ही भ्रष्टाचार पर टिका हुआ है। इनके लिए पैसा ही सब कुछ है। जनता को लूटना-खसोटना ही इनके लिए राजनीति है। इन जैसे दलों के युवराजों को शुरूआत से ही घोटालों की ट्रेनिंग मिलती है जिसे मौका मिलते ही यह भुनाने लगते हैं। जो जनता इनपर भरोसा कर के इन्हें वोट देती है यह लोग सत्ता पाते ही सबसे पहले उन्हीं की पीठ में छूरा घोंपते हैं। वास्तव में तेजस्वी भी इससे अलग कुछ और नहीं कर सकते। जदयू प्रवक्ता ने कहा कि तेजस्वी जमीन के बदले नौकरी घोटाले में हमेशा अपने नाबालिग होने की दलील देते थे। लेकिन उन्हीं जमीनों को लौटाने के विषय पर उनका मौन यह बताता है कि उनके बाकी बयानों की तरह यह दलील भी झूठी है। उनकी चुप्पी साफ बताती है कि सब कुछ उनके जानते समझते और सहमती से हुआ है। इसीलिए यह आज भी उन जमीनों पर दावा छोड़ना नहीं चाहते। तेजस्वी को अब तक समझ लेना चाहिए था कि बिहार की जनता घोटालेबाजों को पसंद नहीं करती। इसीलिए उनकी पार्टी लगातार हर चुनाव हार रही है। वह जान लें कि अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव में उनकी हालत और खस्ता होने वाली है।

लोजपा रामबिलास ने विराधियों के मंसूबे पर फेरा पानी : चिराग

पटना। लोकसभा में 5 सीटों पर जीत के बाद गुरूवार को दिल्ली स्थित कांस्टीट्यूशन क्लब के सभागार में लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास दिल्ली प्रदेश द्वारा पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष भारत सरकार में खाद्य प्रसंस्करण मंत्री चिराग पासवान के साथ-साथ अन्य पार्टी के चारों सांसदों का अभिनंदन समारोह आयोजित की गई। जिसमें सभी सांसदों का भव्य स्वागत पार्टी के कार्यकताओं और नेताओं द्वारा किया गया। देश के कोने-कोने से पार्टी के सभी वरीय नेताओं ने हिस्सा लिया इस मौके पर पार्टी के सांसदों में वीणा देवी, अरुण कुमार भारती, राजेश वर्मा और शांभवी चौधरी ने कार्यक्रम को संबोधित किया। इस अवसर पर पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और मंत्री चिराग पासवान ने कहा कि आज का महत्वपूर्ण दिन है आज ही के दिन पार्टी को कमजोर किया गया पार्टी टूटी थी मेरा सिंबल फ्रिज हो गया था पार्टी का ऑफिस छीन लिया गया था। जब रामविलास पासवान ने 2020 में पार्टी की स्थापना की थी 2009 में जब हमारे पिताजी पार्टी पर लड़े और हार गए बावजूद बल लगातार पार्टी के प्रति समर्पित होकर काम किया और उनकी इसी मेहनत और संघर्ष का परिणाम था 2014 में पार्टी ने अप्रत्याशित जीत हासिल की। उस समय 7 सीटों पर चुनाव लड़ी और 6 सीटों पर जीत हासिल किया। उन्होंने कहा कि हम लोगों की समाप्ति की कल्पना करते थे जिस उद्देश्य के साथ आदमी के दिन यह पूरा संडे को रखा गया था ना उसे षड्यंत्र को हम लोगों ने विफल किया। आज हमारे नेता और हमारे आदर्श जहां कहीं भी होंगे वह इस बात को लेकर खुश होंगे कि जिस ऊंचाइयों तक और हमारे पार्टी को देखना चाहते थे, आज आज पार्टी लोकतंत्र पार्टी रामविलास पहुंच आज हम लोग पहुंचे हैं। पार्टी के मुख्य प्रवक्ता राजेश भट्ट ने प्रेस को बताया कि इस ऐतिहासिक अवसर पर अन्य प्रदेशों के तमाम प्रदेश अध्यक्षों और अन्य वरिष्ठ नेताओं के साथ-साथ मुख्य रूप से बिहार से पार्टी के नेताओं में पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शंकर झा पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष राजू तिवारी डॉ शाहनवाज अहमद कैफी कृष्ण कुमार सिंह हुलास पांडे संजय पासवान अशरफ अंसारी गबरू सिंह सत्येंद्र कुमार सिंह शंकर सिंह कुंदन पासवान अयोध्या पासवान विजय पांडे चुलबुल शाही डॉ अजय अमित कुमार रानू समेत सैकड़ो नेता और कार्यकर्ता मौजूद थे।

सूबे में कानून व्यवस्था तथा सरकार का इकबाल खत्म : राजद

- कानून व्यवस्था पर विपक्ष के सवाल का जवाब क्यों नहीं दे रही सरकार

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के प्रधान महासचिव रणविजय साहू एवं प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद ने अपने संयुक्त वक्तव्य में कहा कि नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव ने बिहार में कानून व्यवस्था तथा सरकार के इकबाल खत्म हो जाने पर जिन सवालों को उठाया है उसपर बिहार में एनडीए नेताओं की खामोशी से स्पष्ट हो रहा है कि बिहार में अपराधी मस्त हैं, पुलिस अपराधियों के सामने पस्त है और सरकार में बैठे लोग मलाई काटने में व्यस्त है। इन नेताओं ने कहा कि नेता प्रतिपक्ष ने जो मामले उठाएं हैं, उसपर मुख्यमंत्री और दोनों उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और विजय सिंहा बतायें कि इस तरह के बढ़ते अपराध को ये लोग किस श्रेणी का मानते हैं और इस मामले पर चुप्पी क्यों साधे हुए हैं। राजद नेताओं ने कहा कि नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव ने कानून व्यवस्था पर सवाल उठाया है। लेकिन इसपर सरकार के शीर्ष नेता चुप हैं। राजद नेताओं ने विगत दिनों की कई घटनाओं का जिक्र करते हुए सरकार से सवाल पूछा है। कहा कि नवादा में सरेराह महिला को चाकू घोंपा, हालत नाजुक, पटना में दो बहनों पर चाकू से हमला, दोनों गंभीर रूप से जख्मी। भागलपुर में बदमाशों ने निर्वस्त्र कर महिला की पीट-पीटकर की निर्मम हत्या। सुपौल में दो बच्चों की निर्मम हत्या, गड्ढे में मिले शव। मुंगेर के डंगरी नदी में महिला का मिला शव। छपरा में कोर्ट जा रहे दो अधिवक्ताओं की अपराधियों ने गोली मारकर हत्या की। छपरा में बेखौफ अपराधियों ने युवक को गोली मार मचाया तांडव। छपरा में पुलिस टीम पर हमला।

भोजपुर में प्लंबर की हुई हत्या। कोईलवर पुल के पास मिली लाश। मोतिहारी के घोड़ासहन में अपराधियों ने व्यवसायी को गोली मार पैसे लूट फरार। गोपालगंज में हार्डवेयर कारोबारी को गोली मारी। बगहा में पंचायती के दौरान ताबड़तोड़ फायरिंग। आरा में हथियारबंद अपराधियों ने की फायरिंग, क्षेत्र में मचा हड़कंप, युवक को लगी गोली। पटना के मसौढ़ी में अपराधियों ने की कई राउंड फायरिंग, एक को लगी गोली। नेताओं ने कहा कि इस तरह के दर्जन भर से अधिक मामलों को उजागर करके नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव ने सत्ता पक्ष के नेताओं से जो सवाल पूछे हैं उसपर एनडीए के नेता चुप्पी क्यों साधे हुए हैं यह स्पष्ट करें।

नीट परीक्षा को रद्द कर फिर से परीक्षा करवाए केंद्र सरकार : अरुण

पटना। राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश प्रवक्ता अरुण कुमार यादव ने कहा कि नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट परीक्षा में 23 लाख से अधिक शामिल छात्र-छात्राओं के भविष्य का चिंता छोड़ कर केंद्र सरकार नेशनल टेस्टिंग एजेंसी को बचाने में जुटी हुई है जोकि देश के 23 लाख से अधिक छात्र-छात्राओं के भविष्य के साथ क्रूर मजाक है। राजद प्रवक्ता ने कहा कि नीट परीक्षा में प्रश्न-पत्र लीक से लेकर परीक्षा परिणाम तक में बड़े पैमाने पर धांधली को लेकर पूरे देश में नीट अभ्यर्थी और उनके अभिभावक आक्रोशित हैं। बिहार प्रदेश से लेकर देश के विभिन्न हिस्सों में छात्र नीट परीक्षा को रद्द करने की मांग को लेकर आंदोलन कर रहे हैं लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी मौन धारण किए हुए है। राजद प्रवक्ता ने कहा कि इस बार मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट में 67 परीक्षार्थियों ने टॉप रैंक हासिल की है और इनमें से छह अभ्यर्थी एक ही परीक्षा केंद्र से हैं। 67 टॉप रैंक हासिल करने वाले अभ्यर्थी को 720 अंक में से 720 अंक मिलना कई सवाल पैदा करता है। प्रश्न-पत्र लीक से लेकर परीक्षा परिणाम तक में धांधली से जुड़े सवालों के अंबार से साफ स्पष्ट हो चुका है कि नीट परीक्षा में बड़े पैमाने पर धांधली हुई है। और नीट के 23 लाख से अधिक अभ्यर्थी के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया गया है। जिसमे बिहार से 1 लाख 39 हजार से अधिक अभ्यर्थी हैं।राजद प्रवक्ता ने केंद्र सरकार से नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट (नीट) परीक्षा को रद्द कर फिर से परीक्षा कराने की मांग करते हुए पूरे मामलों की सीबीआई जांच या सुप्रीम कोर्ट के निगरानी में निष्पक्ष जांच की मांग की है।

किसानों को मिट्टी जांच कराने के लिए किया जाये प्रेरित : मंगल

- बोलें-मिट्टी जाँच कराने से किसानों की बढ़ेगी आय
- मिट्टी जाँच प्रयोगशालाओं में पदाधिकारियों व कर्मियों की शीघ्र होगी नियुक्ति

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

कृषि मंत्री मंगल पाण्डे ने गुरूवार को कृषि भवन में मुख्यालय एवं क्षेत्रीय पदाधिकारियों तथा 72 ग्रामस्तरीय मिट्टी जांच प्रयोगशाला के कर्मियों के साथ मिट्टी स्वास्थ्य एवं उर्वरता योजना की समीक्षा की। इस अवसर पर मंत्री ने कहा कि राज्य के मिट्टी जांच प्रयोगशालाओं में 207 पद सहायक अनुसंधान पदाधिकारी, 75 पद प्रयोगशाला सहायक, 26 पद सहायक निदेशक (रसायन), मिट्टी जांच, 22 लिपिक के पद सहित कार्यालय कई अन्य पद रिक्त हैं, जिस पर शीघ्र नियुक्ति की जायेगी। साथ ही, राज्य के 9 प्रमंडलों के चलंत मिट्टी जांच प्रयोगशाला को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए तकनीकी कर्मियों की बहाली की जायेगी, जिससे मिट्टी नमूनों की जांच समय पर की जा सके। उन्होंने पूरे कृषि विभाग के लिपिकों के लिए एक कैडर बनाकर 15 दिनों के अन्दर एक नियमावली बनाने का निदेश अधिकारियों को दिया, जिससे मिट्टी जांच प्रयोगशाला सहित कृषि विभाग के अन्य कार्यालयों में लिपिकों के रिक्त पदों पर बड़ी मात्रा में नियुक्ति की जा सके। उन्होंने कहा कि हाल ही में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कृषि विभाग, बिहार को मिट्टी जांच करने वाला देश में सबसे अच्छा राज्य घोषित कर सम्मानित किया गया है, यह पूरे राज्य के लिए गौरव की बात है। कृषि मंत्री ने कहा कि बिहार में 72 ग्रामस्तरीय मिट्टी जांच प्रयोगशाला, 38 जिलास्तरीय मिट्टी जांच प्रयोगशाला, गया, मुंगेर एवं भागलपुर के अनुमंडल में 03 अनुमंडलस्तरीय मिट्टी जांच प्रयोगशाला कार्यरत हैं। इसके अतिरिक्त राज्य में प्रमंडल स्तर पर 09 चलंत मिट्टी जांच प्रयोगशाला कार्य कर रहा है। इसके साथ ही, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर एवं डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर में भी मिट्टी जांच प्रयोगशाला स्थापित है।

चलंत मिट्टी जांच प्रयोगशालाओं के लिए पूर्व से रूट चार्ट निर्धारित हो :

कृषि मंत्री ने अधिकारियों को निदेश दिया कि प्रमंडल स्तर पर संचालित 09 चलंत मिट्टी जांच प्रयोगशालाओं के लिए पूर्व से रूट चार्ट निर्धारित किया जाये, ताकि किसानों को यह पता चल सके कि उनके गांव में कब चलंत मिट्टी जांच प्रयोगशाला आयेगा। इससे किसानों को अपने खेतों के मिट्टी की जांच कराने में सहुलियत होगी। उन्होंने ग्राम स्तरीय मिट्टी जांच प्रयोगशाला के कर्मियों से समय पर मिट्टी जाँच कर पोर्टल पर इसे अपलोड करने का अपील किया। मंत्री ने मिट्टी जांच कार्यक्रम का किसानों के बीच विस्तृत प्रचार-प्रसार करने का निदेश दिया। उन्होंने कहा कि खरीफ किसान चौपाल, दिवाल लेखन एवं आकर्षक होर्डिंग के माध्यम से किसानों को मिट्टी जांच कराने के लिए जागरूक किया जाये तथा मिट्टी जांच कराने से किसानों को होने वाले लाभ के बारे में भी बताया जाये। उन्होंने अधिकारियों के साथ-साथ 72 ग्रामस्तरीय मिट्टी जांच प्रयोगशाला के कर्मियों को भी निदेश दिया कि किसानों को मिट्टी जांच कराने के लिए प्रेरित किया जाये। इससे पहले कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने इस योजना के संबंध में मंत्री को विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस वर्ष इस योजना के लिए 15 करोड़ रुपए की स्वीकृति फरवरी माह में ही की जा चुकी है, इसलिए कोई वित्तीय समस्या नहीं होगी। बैठक में कृषि निदेशक मुकेश कुमार लाल, प्रबंध निदेशक, बिहार राज्य बीज निगम आशुतोष कुमार वर्मा, निदेशक उद्यान अभिषेक कुमार, अपर सचिव शैलेन्द्र कुमार, संयुक्त सचिव द्वय मदन कुमार एवं मनोज कुमार, विशेष कार्य पदाधिकारी सुनील कुमार, अपर निदेश (शष्य) धनंजयपति त्रिपाठी, संयुक्त निदेशक (रसायन), मिट्टी जाँच प्रयोगशाला विनय कुमार पाण्डेय तथा सभी जिलों के सहायक निदेशक (रसायन), मिट्टी जांच उपस्थित थे।

रूपौली विधानसभा उपचुनाव लड़ेगी भाकपा

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी जुलाई में पूर्णिया जिला के रूपौली विधानसभा में होने वाले उपचुनाव में अपना उम्मीदवार उतारेगी। यह फैसला पार्टी की 11 जून को संपन्न राज्य परिषद की बैठक में लिया गया। 2020 के बिहार विधानसभा चुनाव में महागठबंधन से छः सीट भाकपा को मिली थी जिसमें रूपौली विधानसभा क्षेत्र भी था। रूपौली विधानसभा उपचुनाव के लिए 14 जून से नामांकन शुरू होने जा रहा है। 10 जुलाई को मतदान होगा।

बिहार पर्यटन इन्वेस्टमेंट मीट और रोड शो नई दिल्ली में आज

पर्यटन मंत्री नीतीश मिश्रा की अध्यक्षता में आयोजित होगी होटेलियर्स और टूर ऑपरेटर्स की बैठक

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार में पर्यटन के क्षेत्र में निवेश और राज्य के पर्यटन स्थलों के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु देश की राजधानी नई दिल्ली में इन्वेस्टमेंट मीट और रोड शो का आयोजन शुक्रवार को किया जाएगा। नई दिल्ली के चाणक्यपुरी स्थित अशोक होटल में यह कार्यक्रम सुबह साढ़े दस बजे से आयोजित किया जाएगा। पर्यटन मंत्री नीतीश मिश्रा देश की राजधानी में स्थित पर्यटन उद्योग से जुड़े सभी हितधारकों, जिसमें ट्रैवेल एजेंट, टूर ऑपरेटर्स, होटलियर्स, रिवर क्रूज ऑपरेटर्स, ब्लॉगर्स और वीलागर्स आदि के साथ बैठक करेंगे। इसके साथ ही वे उनसे बिहार पर्यटन विभाग द्वारा संचालित किए जा रहे योजनाओं, कार्यक्रमों और नीतियों की जानकारी साझा करेंगे। पर्यटन सचिव अभय कुमार सिंह कार्यक्रम में बिहार की नयी पर्यटन नीति, पर्यटकीय सुविधाओं के विकास की अद्यतन स्थिति को पावर प्वाइंटर प्रजेंटेशन के माध्यम से सभी हितधारकों को जानकारी देंगे। इसके साथ ही कार्यक्रम में सवाल-जवाब का सत्र भी आयोजित किया गया है, जिसमें सभी हितधारकों के सवालों के जवाब भी दिए जाएंगे। कार्यक्रम में पर्यटन निदेशक विनय कुमार राय, बिहार पर्यटन विकास निगम के प्रबंध निदेशक नंद किशोर व महाप्रबंधक अभिजीत कुमार सहित पर्यटन विभाग के पदाधिकारियों की भी उपस्थिति रहेगी।

संक्षिप्त खबरें

झील में नहाने के दौरान डूबने से किशोर की मौत

मुजफ्फरपुर। जिले के गायघाट थाना अध्यक्ष के बेरुआ गांव मे झील में नहाने के दौरान एक किशोर डूब गया। जिससे उसकी मौत हो गई। मृतक का पहचान बेरुआ गांव के सुनील ठाकुर का 19 वर्षीय पुत्र कौशल कुमार बताया गया है। वहीं मौके पर जुटे ग्रामीणों ने स्थानीय गोताखोर के सहयोग से कड़ी मशक्कत के बाद उसका शव पानी से बाहर निकाला। मृतक के पिता ने बताया कि वह दोपहर में उनके साथ घर मे खाना खाया था। इसके बाद बिन बताए वह गांव मे स्थित उत्तर झील में नहाने चला गया। जहां एक ग्रामीण ने उसे नहानेते हुए देखा, उसने उसे अकेला नहाते देख बाहर निकल जाने के लिए भी कहा। इसी बीच वह गहरे पानी में चला गया। झील से बाहर निकलते ही उसके परिवार मे चीख पुकार मच गई। प्रभारी थानाध्यक्ष मो नजरे आलम ने बताया की शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु एसकेएमसीएच भेज दिया गया है।

बिजली सम्बंधी समस्याओं के लिए फ्यूज काल सेंटर स्थापित

मुजफ्फरपुर।भीषण गर्मी को देखते हुए निर्वाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने तथा उपभोक्ताओं के बिजली संबंधी समस्याओं के त्वरित निष्पादन हेतु जिला पदाधिकारी सुब्रत कुमार सेन के निर्देश पर कार्यपालक अभियंता विद्युत आपूर्ति मुजफ्फरपुर द्वारा जिला नियंत्रण कक्ष सह फ्यूज कॉल सेंटर स्थापित किया गया है। इसके लिए विद्युत आपूर्ति प्रमंडल मुजफ्फरपुर पूर्वी सहित विद्युत आपूर्ति प्रमंडल मुजफ्फरपुर पूर्वी अंतर्गत विद्युत शक्ति उप केंद्रध्पदाधिकारी का नाम एवं मोबाइल नंबर जारी किया गया है।इन क्षेत्रों के उपभोक्ता फ्यूज कॉल एवं लाइन रखरखाव संबंधी शिकायत जिला नियंत्रण कक्ष ,शक्ति उपकेंद्र, कनीय विद्युत अभियंता, सहायक विद्युत अभियंता के मोबाइल नंबर पर संपर्क स्थापित कर दर्ज कराया जा सकते हैं।

रूस-यूक्रेन युद्ध में दो और भारतीय मजदूरों के मारे जाने की निंदा

मुजफ्फरपुर।एसयूसीआई (सी) के महासचिव प्रभास घोष ने रूस-यूक्रएन युद्ध में फिर भारतीय मजदूरों के मारे जाने की निन्दा की है। इस सम्बंध में आज एक प्रेस बयान जारी करते हुए उन्होंने कहा है कि एक बार फिर, दो और भारतीय मजदूर, जिन्हें काम के लिए रूस भेजा गया था, लेकिन उन्हें रूसी सेना में शामिल कर लिया गया और वे यूक्रेन के साथ युद्ध में मारे गये। दर्जनों भारतीय बेरोजगार मजदूरों को भर्ती एजेंटों द्वारा पैसे और रूसी पासपोर्ट जारी करने का लालच देकर रूसी सेना के लिए लड़ने के नाम पर धोखा दिया है। हम भारतीय बेरोजगार युवाओं की बेबसी का फायदा उठाने और उन्हें अपनी जान गंवाने के लिए युद्ध के मोर्चे पर भेजने की भाजपा नेतृत्ववाली भारत सरकार और साम्राज्यवादी रूसी सरकार की अत्यंत नृशंस और अमानवीय भूमिका की कड़ी निंदा करते हैं।

दो बच्चियां समेत तीन की मौत डूबने से परिवार और गांव में कोहराम मचा

मधुबनी बेनीपट्टी थाना क्षेत्र में एक बड़ा हादसा सामने बेनीपट्टी थाना के धनौजा गांव में दो बच्चियां समेत तीन की मौत डूबने से हो गयी हैं। पूरे गांव में कोहराम मच गया है। फिलहाल तीनो बच्चों का शव बेनीपट्टी के अनुमंडल अस्पताल में पड़ा हुआ है। जहां से पोस्टमार्टम के लिए शव को मधुबनी भेजा जाएगा।धनौजा गांव के मोहन मंडल का आठ वर्षीय पुत्र गुड्डू मंडल और 10 वर्षीय पुत्री खुशबू कुमारी और गांव के ही दिवेश मंडल के 10 वर्षीय पुत्री दुर्गा कुमारी गुरुवार की सुबह खिलौना बनाने के लिए मिट्टी काटने के लिए गया था जिसमे मौत हो गई आसपास के लोग के सहयोग से पहुंचाया गया अस्पताल चिकित्सक ने तीनों बच्चे को मृत घोषित किया जोकि मृतक बच्चा के पिता ने बताया।

अब जिलाधिकारी तक आम जन कि पहुँच हुई आसान

दरभंगा। अब आमजनों के लिए जिलाधिकारी, दरभंगा तक अपनी शिकायत,माँग पहुँचाना हुआ आसान, इसके लिए जिला प्रशासन, दरभंगा द्वारा एक वेवसाईट विकसित किया गया है, जिसके माध्यम से आमजन जिलाधिकारी के समक्ष अपनी शिकायत रख सकते हैं। सहायक नोडल, जिला आई.टी-सह-आई. टी. मैनेजर पूजा चौधरी ने बताया कि उपर्युक्त वेवसाईट के माध्यम से आवेदक आवेदन करके जिला पदाधिकारी, दरभंगा के समक्ष अपनी शिकायत, माँग एवं सुझाव पहुँचाने के लिए तिथि एवं समय प्राप्त कर सकते हैं।

जिले में बकरीद पर्व को लेकर जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक हुई आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिला पदाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा की अध्यक्षता में जिले में बकरीद पर्व को शांतिपूर्ण सौहार्द्रपूर्ण एवम भाईचारे के वातावरण में मनाने एवम इस अवसर पर विधि व्यवस्था बनाए रखने हेतु समाहरणालय स्थित सभाकक्ष में गुरुवार को जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। अपने संबोधन में जिलाधिकारी ने कहा कि सभी जिलेवासियों के सहयोग से जिले में शांतिपूर्ण एवं सौहाद्रपूर्ण वातावरण में बकरीद सहित आगामी पर्व त्योहारों को मनाने हेतु सभी प्रशासनिक तैयारी को लेकर जिला प्रशासन पूरी तरह से गंभीर है। उन्होंने कहा कि बकरीद पर्व को देखते हुए प्रशासनिक स्तर पर सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई हैं। उन्होंने कहा कि शांति समिति की बैठक के आयोजन का मुख्य उद्देश्य जिले के सभी क्षेत्रों के गणमान्य व्यक्तियों से उनके परिवेश की गतिविधि की जानकारी प्राप्त करना तथा सुझाव प्राप्त करना है।बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने आगामी पर्व के दौरान शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए सभी उपस्थित लोगों से उनके सुझाव आमंत्रित किए। जिसके आलोक में पूरे जिले से आए शांति समिति के सदस्यों ने बारी बारी से अपने सुझाव दिए। इसमें पर्व त्योहारों के दौरान डीजे बजाने पर रोक लगाने, शराब पीने और बेचने वालों की धड़पकड़ करने, त्योहार के दौरान गस्ती बढ़ाने और कार्यक्रम स्थल पर सुलभ आवागमन की व्यवस्था करने के सुझाव प्राप्त हुए।जिलाधिकारी द्वारा उपस्थित लोगों को आश्वासन दिया गया कि प्राप्त सुझावों पर जिला प्रशासन द्वारा समुचित कदम उठाए जाएंगे।उन्होंने सोशल मीडिया में अफवाहों को फैलने से रोकने के लिए उपस्थित लोगों से कहा कि जिले साइबर सेल एवम आईटी मीडिया सेल तत्परता से सभी पोस्ट पर नजर बनाए हुए है। उन्होंने कहा किसी भी आपत्तिजनक पोस्ट की सूचना सीधे जिला पदाधिकारी, पुलिस अधीक्षक, अनुमंडल पदाधिकारी व अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी को व्यक्तिगत नंबर पर प्रेषित करें। उन्होंने जिले के सभी लोगों से अपील की कि किसी भी भड़काऊ अथवा आपत्तिजनक पोस्ट को फॉरवर्ड करने से बचें और प्रशासन को इसकी जानकारी दें।भड़काऊ और आपत्तिजनक पोस्ट करने वालों पर कड़ी कार्रवाई करने की बात भी कही। उन्होंने कहा कि समाहरणालय स्थित सभाकक्ष में जिला नियंत्रण कक्ष बनाया गया है, जहां से पल-पल की गतिविधियों पर नजर रखी जायेगी।किसी भी आपात स्थिति की सूचना जिला नियंत्रण कक्ष के दूरभाष संख्या 06276-224425 पर दे सकते है।जिला नियंत्रण कक्ष में मुस्तैद क्विक रेस्पॉन्स की टीम किसी भी आपात स्थिति की सूचना प्राप्त होते ही त्वरित कार्रवाई करेगा।शांति समिति की बैठक में जिले भर से आए लोगों ने जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक आयोजित करने के लिए जिला प्रशासन की भूरी भूरी प्रशंसा की और सभी ने एक स्वर में आश्वस्त किया कि उनके द्वारा जिले में शान्ति व्यवस्था बनाए रखने में पूर्ण सहयोग दिया जाएगा।तत्पश्चात जिला पदाधिकारी ने कहा कि बकरीद सहित आगामी पर्व त्योहारों को लेकर पर्याप्त संख्या में पुलिसबल की प्रतिनियक्ति की जाएगी। उन्होंने कहा कि असामाजिक एवं उपद्रवी तत्वों को चिन्हित कर उनपर विशेष नजर रखी जा रही है। विशेषकर बकरीद के दिन हाई स्पीड में बाइक चलानेवाले बाइकर गैंग पर भी विशेष नजर रखी जायेगी। उक्त बैठक में नगर आयुक्त अनिल चौधरी अपर समाहर्ता शैलेश कुमार अपर समाहर्ता आपदा संतोष कुमार अनुमंडल पदाधिकारी बेनीपट्टी अनुमंडल पदाधिकारी फुलपरास अनुमंडल पदाधिकारी जयनगर सहित सभी अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सहित जिले के सभी वरीय पदाधिकारी एवं शांति समिति के सभी सदस्यउपस्थित थे।

चीनी नागरिक की मौत का मामला पहुंचा मानवाधिकार आयोग

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले के ब्रह्मपुरा थाना क्षेत्र से 5 जून को एक चीनी नागरिक, ली जियाकी को पुलिस ने गिरफ्तार किया था। उसके पास भारत में प्रवेश से संबंधित कोई कागजात नहीं था। पुलिस ने उसे कोर्ट में पेश किया, जहाँ से उसे न्यायिक हिरासत में खुदीराम बोस केंद्रीय कारागार में भेज दिया गया। उसके बाद उसने आत्महत्या की कोशिश की और उसने अपने चश्मे का शीशा तोड़ कर अपने प्राइवेट पार्ट को काटने का प्रयास किया। आनन-फानन में उसे एसकेएमसीएच में भर्ती करवाया गया जहाँ पर उसने ईलाज के दौरान दम तोड़ दिया। मामले को लेकर मानवाधिकार मामलों के अधिवक्ता एस.के.झा ने राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, नई दिल्ली और राज्य मानवाधिकार आयोग, पटना में दो अलग-अलग याचिका दाखिल किया है। अधिवक्ता श्री झा ने बताया कि चीनी नागरिक के मामले में पुलिस और सरकारी व्यवस्था के द्वारा अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून का पालन नहीं किया गया हैं। साथ-ही-साथ उसे सही तरिके से काउंसलिंग नहीं किया गया और उसे चीनी भाषा के जानकार काउंसलर उपलब्ध नहीं कराया गया। अगर उसकी सही तरिके से काउंसलिंग होती और चीनी भाषा के जानकार काउंसलर उपलब्ध कराया गया होता तो शायद वह जिंदा रहता। अधिवक्ता ने कहा कि उसके परिजनों के पास उसका डेड बॉडी पहुँचे, इसके लिए प्रशासनिक व्यवस्था और सरकार को पूरा प्रयास करना चाहिए तथा उन्होंने मानवाधिकार आयोग से इस पूरे प्रकरण की जाँच करने की मांग की है।

खादी मेला में स्टार्टअप जागरूकता अभियान आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।खादी मेला सह उद्यमी बाजार गौशाला रोड मुजफ्फरपुर में बिहार स्टार्टअप नीति 2022 का जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मेला में उपस्थित आगंतुकों ने भाग लिया। मेला में उपस्थित आगंतुकों को बिहार स्टार्टअप नीति के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई ।जिला उद्योग केंद्र के परियोजना प्रबंधक विजय शंकर प्रसाद द्वारा बिहार स्टार्टअप नीति 2022 के प्रावधानो एवं लाभ के बारे में सभी को बताया गया। उन्होंने बताया कि बिहार स्टार्टअप नीति के अंतर्गत इनोवेटिव आइडिया, नवाचार को बढ़ावा देने के लिए सीड फंड की व्यवस्था की गई है। जिसके अंतर्गत 10 लख रुपए सूद मुक्त सीड फंड की राशि उपलब्ध कराई जाती है। इस नीति के अंतर्गत 18 साल से अधिक उम्र के कोई भी व्यक्ति योजना का लाभ ले सकता है। बिहार स्टार्टअप फंड के पोर्टल पर आधार कार्ड एवं रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर के साथ रजिस्ट्रेशन के उपरांत अपने आइडिया को प्रस्तुत किया जा सकता है। जिसका राज्य स्तरीय समिति द्वारा चयन किया जाता है। त्रिवेंद्रम ऑर्गेनिक फूडस प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक के श्री गोल्डी कुमार, जिन्हें स्टार्टअप नीति 2022 के अंतर्गत सीड फंड प्राप्त हुआ है ,ने अपने अनुभव साझा किये। श्री गोल्डी ने मशरूम के उत्पाद यथा बिस्कुट, भुजिया इत्यादी का स्टॉल इस मेले में लगाया है। इस जागरूकता कार्यक्रम में जिला उद्योग केंद्र के रवि शंकर उपाध्याय एवम अमरेंद्र कुमार उद्योग विस्तार पदाधिकारी, नरेश पासवान कनीय सांख्यिकी सहायक, राजेश कुमार प्रधान लिपिक, विकास कुमार उद्योग बिस्तर पदाधिकारी, शिवम कुमार बिहार खादी ग्रामोद्योग बोर्ड एवं अन्य पदाधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

खजौली प्रखंड़ सभागार में विदाई समारोह आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी खजौली प्रखंड़ सभागार में प्रखंड़ प्रमुख कुमारी उषा के अध्यक्षता में विदाई समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया.इस विदाई समारोह का मंच संचालन शिक्षक हेमंत ठाकुर द्वारा किया गया.इस विदाई समारोह के दौरान प्रखंड़ प्रमुख कुमारी उषा बीडीओ लवली कुमारी बीपी आरओ हेमनारायण महतो शिक्षक सतीश कुमार पंसस श्रीनाथ नाग मणि द्वारा संयुक्त रूप से प्रखंड़ पंचायती राज पदाधिकारी पर पदौन्नति हुए पंचायत सचिव रामचंद्र यादव एव सेवा निवृत्त पंचायत सचिव शिवलाल साह दोनों व्यक्ति को पाग दोपता पुष्पमाला अंग वस्त्र मिथिला पेंटिंग एव ट्रॉली वैगअटैची देकर स म्मानित किया गया. इस विदाई समारोह के दौरान प्रमुख कुमारी उषा ने कहा कि खजौली प्रखंड़ के चतरा गोबरौरा उत्तरी पंचायत वेता ककरघट्टी एव सराब पंचायत में पंचायत सचिव पद पर रामचंद्र यादव कार्यरत थे.उनका मधुबनी जिला स्तर पर एक सीट बीपीआरओ पद पर पदौन्नति होकर दरभंगा जिला के बहेड़ी प्रखंड़ में बीपीआरओ पद पर स्थापित हुए है.उन्होंने कहा कि उनकी पदौन्नति की शुभकामनाएं दी है.वही बीडीओ लवली कुमारी ने कहा कि पंचायत सचिव रामचंद्र यादव की पदौन्नति को लेकर खुशी है वही पंचायत सचिव शिव लाल साह की सेवा निवृत होने की गम है. उन्होंने बीपीआरओ पद पदौन्नति रामचंद्र यादव को शुभकामनाएं दी. साथ सेवा निवृत पंचायत सचिव शिव लाल साह को कहा कि जो व्यक्ति नोकरी में आते है उस व्यक्ति को एक दिन निश्चित समय पर सेवा निवृत्त होना तय है. सेवा निवृत्त पंचायत सचिव सेवा निवृत शिवलाल साह जी का शरीर स्वास्थ होने की कामना की.वही प्रखंड़ बीपीआरओ हेमनारायण महतो ने पंचायत सचिव राम चंद्र यादव को बिहार सरकार ने बीपीआरओ में पदौन्नति को लेकर बधाई दी.वही विदाई समारोह के मौके पर शिक्षक सतीश कुमार पंसस श्रीनाथ नाग मणि मनोज कुमार पासवान अधिकारी मंडल सहित अन्य लोगो ने दोनों पंचायत सचिव की जीवनी पर प्रकाश डाला. इस मौके पर प्रखंड़ प्रधान क्लर्क रमेश कुमार प्रखंड़ नाजिर प्रमोद भास्कर टीए चंद्र नारायण आशुतोष कुमार पंचायत सचिव अनूप कुमार शशि कुमार चंदन कुमार मुकेश कुमार सरोज कुमार गमी मुखिया प्रतिनिधि विपिन कुमार यादव, भूषण कुमार, मनोज कुमार झा सहित सभी प्रखंड़ व अंचल कर्मी शामिल थे

कर्मचारियों का संस्कृत में प्रशिक्षण सातवें दिन जारी

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।संस्कृत विश्वविद्यालय के कर्मी अब कुछ ही दिनों में फरार्टे से संस्कृत बोलने लगेंगे। मुख्यालय के दरबार हॉल में उन्हें रोज दो घण्टे का संस्कृत में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। गुरुवार को भी सातवे दिन प्रशिक्षण जारी रहा। कर्मचारी अब आपस मे थोड़ी- थोड़ी संस्कृत बोलने लगे हैं। आज के प्रशिक्षण में उन्हें अग्रतः, पुरतः,पृष्ठतः , इतः, ततः , यत्र,तत्र आदि पाठ्य बिन्दुओं का अभ्यास कराया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को कुलपति प्रो0 लक्ष्मी निवास पांडेय काफी गम्भीरता से ले रहे हैं।यही कारण है कि अपनी व्यस्तता के वाबजूद वे रोज करीब दो घण्टे तक प्रशिक्षण के दौरान कर्मचारियों के बीच बैठते हैं और जरूरत पड़ने पर प्रशिक्षक व कर्मियों को सुधारात्मक सलाह भी देते हैं। वहीं, प्रशिक्षण प्रमुख, बिहार देवनिरंजन दीक्षित ने आज कर्मचारियों को बड़े ही सरल व सुगम्य तरीके से संस्कृत बोलना सिखाया। साथ ही उन्होंने कई ऐसे पौराणिक व आधुनिक तौर तरीके बताए जिसे आत्मसात कर कर्मचारी बिना अतिरिक्त मानसिक भार लिए सहजता से संस्कृत बोल सकते हैं। उल्लेखनीय है कि डॉ.रामसेवक झा के संयोजकत्व में आयोजित इस कार्यक्रम में कर्मचारियों के साथ डीन डॉ.शिवलोचन झा, सीसीडीसी डॉ.दिनेश झा, शिक्षाशास्त्र निदेशक डॉ.घनश्याम मिश्र, कुलानुशासक डॉ.पुरेंद्र वारिक, उप कुलसचिव डॉ. सुनील कुमार झा, विकास पदाधिकारी डॉ.पवन कुमार झा समेत अन्य पदाधिकारी भी मौजूद रहते हैं ।

केवटी विधायक ने केन्द्रीय रक्षा मंत्री को किया पाग चादर से सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

सिंहवाड़ा(दरभंगा) ।केवटी विधायक डॉ मुरारी मोहन झा ने अपने दिल्ली प्रवास के दौरान केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह , भूपेन्द्र यादव पर्यावरण मंत्री व सुक्ष्म लघु व मध्यम उधम राज्य मंत्री जीतन राम माझी के आवास पर शिष्टाचार भेंट कर मिथिला की परंपरा के अनुसार पाग चादर व पुष्प से सम्मानित किया।केन्द्रीय मंत्री पद को सुशोभित कर विभागीय कार्य शुभारंभ करने पर बधाई देकर मिथिलांचल के विकास पर चर्चा की। विधायक ने कहा जनता का विश्वास एनडीए के पक्ष में मिला है सभी देश की जनता को भाजपा की ओर से साधुवाद देता हुं। संस्कृति व राष्ट्र की रक्षा कर देश विदेश में सम्मान बढाने वाले भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को तीसरी बार एनडीए सरकार में पीएम पद पर सुशोभित करना 140 करोड़ देशवासियों की सेवा का यह लगातार बार संकल्प व आशिर्वाद है। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त कर कहा प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने दस वर्षों के कार्यकाल में देश की सेवा कर आर्थिक, सांस्कृतिक, और विदेश नीतियों आमूल चूल परिवर्तन कर भारत की दिशा व दशा बदलने का निरंतर कार्य किया है। उन्होंने प्रेस से कहा कि भारत को विश्व की पांचवी बडी अर्थ व्यवस्था वाला देश बना दिया।आज देश की 22राज्यों में एनडीए व भाजपा की सरकार जनता का सेवा कर रही है।2024 के लोक सभा चुनाव में जनता का अपार समर्थन मिला है।मिथिलांचल में एनडीए उम्मीदवार की ऐतिहासिक जीत दिलाने को लेकर भाजपा समर्थक व कार्यकर्ताओ को नव संकल्प के साथ बधाई देता हुं।आने वाले विधान सभा चुनाव में भी बिहार के सभी विधान सभा में एनडीए की जीत होगी।कार्यकर्ता संगठित होकर बूथ स्तर पर निरंतर कार्य करते रहें।मुख्य मंत्री नीतीश कुमार, चन्द्र बाबू नायडू सहित घटक दलों के नेता ने जिस आत्म विश्वास व गर्मजोशी से मोदी जी को समर्थन देकर पीएम बनाया है वह लोक तंत्र के लिए सराहनीय कदम है। केन्द्रीय खाद उपभोक्ता मंत्री चिराग पासवान, केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय सहित बिहार के सभी केन्द्रीय मंत्री को मिथिलावासी की ओर से शूभकामाएं।

राजभवन में योग का परचम लहरायेंगे मिथिला विश्वविद्यालय के छात्र

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में राजभवन, पटना की ओर से आगामी 20 जून को आयोजित होने वाली योग प्रतियोगिता के लिए ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के प्रतिभागियों का गुरुवार को चयन किया गया। चयनित प्रतिभागी राजभवन में लनामिवि का प्रतिनिधित्व करने के साथ ही जीवन में योग के अवदान का संदेश भी देंगे। इसके लिए गुरुवार को डॉ० नागेन्द्र झा स्टेडियम में अंतर-महाविद्यालय योग प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में प्रतिभागियों के चयन में डॉ० राम विनोद ठाकुर, डॉ० जनक नन्दिनी झा एवं रौशन ने निर्णायक की भूमिका निभाई। प्रतियोगिता में कुल पांच प्रतिभागियों का चयन किया गया जिनमें जीडी कॉलेज, बेगूसराय के आनंद कुमार, सीएम कॉलेज, दरभंगा के अमित कुमार मिश्रा, सीएम साइंस कॉलेज के मणिकांत कुमार, जीएमआरडी कॉलेज, मोहनपुर के मुस्कान कुमार के साथ -साथ महिला श्रेणी में सीएम कॉलेज, दरभंगा की अन्नू कुमारी का चयन किया गया व एमएलएसएम कॉलेज, दरभंगा की सोनी कुमारी का स्थान सुरक्षित रखा गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय खेल पदाधिकारी प्रो० अजय नाथ झा, उप-खेल पदाधिकारी अमृत कुमार झा , चंद्रकान्त झा, राम श्रृंगार राम, सुमित कुमार झा आदि उपस्थित थे ।

सीएचसी कार्यालय में रोगी कल्याण समिति की बैठक अयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी खजौली सीएचसी कार्यालय में गुरुवार को सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डा. ज्योतींद्र नारायण के अध्यक्षता में पूर्व के रोगी कल्याण समिति गठन को बिघटि कर नये रोगी कल्याण समिति की गठन को लेकर बैठक का आयोजन किया गया.इस बैठक के दौरान सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डा. ज्योतींद्र नारायण ने राज्य स्वास्थ समिति एव जिला स्वास्थ समिति द्वारा निर्गत पत्र के आलोक में नये रोगी कल्याण समिति की गठन किया गया.इस दौरान उपस्थित रोगी कल्याण समिति के पदेन सदस्य व प्रखंड़ प्रमुख कुमारी उषा को राज्य स्वास्थ समिति एव जिला स्वास्थ समिति द्वारा जारी पत्र एव निर्देशिका की जानकारी दी. सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी ने नये रोगी कल्याण समिति की गठन कर सामुदायिक स्वास्थ केंद्र के स्तर पर शासी निकाय संरचना को लेकर नये कमिटी का गठन किया गया. इस नये रोगी कल्याण समिति गठन में अध्यक्ष पद पर प्रखंड़ विकास पदाधिकारी खजौली सदस्य सचिव पद पर सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी वही सदस्यगण में प्रखंड़ प्रमुख द्वारा नामित एक पंचायत समिति सदस्य सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी द्वारा नामित चिकित्सक एमबीबीएस आयुष चिकित्सक प्रखंड़ कल्याण पदाधिकारी प्रखंड़ शिक्षा पदाधिकारी बाल विकास पदाधिकारी जीविका से प्रखंड़ परियोजना प्रबंधक पीएचडी विभाग से लोक स्वास्थ अभियंत्रण के प्रतिनिधि, स्वास्थ विभाग द्वारा नामित सीएचसी पोषक क्षेत्र में कार्यरत एनजीओ के प्रतिनिधि एव समाजिक कार्यकर्ता सहित कुल आठ लोगो का नाम गठन किया गया है. साथ ही सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी द्वारा सभी विभाग को पत्र जारी की है.वही प्रखंड़ प्रमुख कुमारी उषा ने सीएचसी में पूर्व में गर्भवत्ती माता की एएनसी जाँच की समीक्षा एव साफ सफाई सहित रोगी कल्याण की सुविधा की जायजा ली. वही सीएचसी के हेल्थ मैनेजर अर्चना भट्ट ने प्रखंड़ प्रमुख कुमारी उषा को पूर्व में हास्पिटल में गर्भवत्ती माता की एएनसी जाँच में आये मरीजों की संख्या एव अल्पहार दी जाने वाली सुविधा की जानकारी दी.वही प्रखंड़ प्रमुख ने सीएचसी में चल रहे सारी योजनाएं की गहन समीक्षा से संतोषप्रद पाया गया.इस मौके पर प्रखंड़ प्रमुख कुमारी उषा, दंत चिकित्सक डा. साहिद एकवाल,हेल्थ मैनेजर अर्चना भट्ट, पिरामल स्वास्थ के पीएल पंकज कुमार सहित अन्य कर्मी मौजूद थे

आशापुर टॉवर चौक पर घंटों जाम रहने से लोग परेशान

प्रात : किरण संवाददाता

बेनीपुर (दरभंगा)।अनुमंडल के हृदयस्थली आशापुर टावर चौक 12 जून की देर शाम को घंटों महाजाम लगने से राहगीर एवं वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। वाहनों का महाजाम इस कदर लग चुका था कि घंटों स्थानीय लोगों को जाम छुराने के लिए मशक्कत करना पड़ा। बताया जाता है कि अचानक साढ़े 4 बजे जाम लग गई जो 7 बजे के आसपास में समाप्त हुआ। बताया जाता है कि आशापुर टावर चौक के 100 मीटर के रेडियस में फुटकर दुकानदार सहित टेंपो-बाइक चालक अवैध पार्किंग करते हैं, जिससे दिनानुदिन जाम की समस्या कम होने का नाम नहीं ले रहा है। वही स्थानीय प्रशासन इस अतिक्रमण को छुड़ाने की दिशा में पूरी तरह उदासीन बनी हुई है। कई स्थानीय लोगों ने बताया कि स्थानीय प्रशासन 6 माह एवं 1 साल में नींद टूटने के बाद अतिक्रमण मुक्ति अभियान चलाकर छोड़ देती हैं, जिससे अतिक्रमण कारियों का मनोबल बढ़ने लगता है। इसके अलावा यहां पर वाहनों का आवागमन भी ट्रैफिक नियम के अनुसार नहीं होता है। यह भी जाम का कारण बना रहता है। बेनीपुर में एसएच-88 व एसएच-56 मोड पर जाम लगती है तथा आने वाले समय में महाजाम को बुलावा देती नजर आ रही है। वही समय-समय पर धरौड़ा, बहेड़ा आदि जगहों पर भी जाम की समस्या उत्पन्न होती रहती है। कई लोगों का कहना है कि स्थानीय प्रशासन को सप्ताह में एक बार बेनीपुर, आशापुर, धरौड़ा, बहेड़ा आदि जगहों पर अतिक्रमण मुक्ति अभियान चलाना चाहिए तथा पुनः अतिक्रमण करने वाले व्यक्ति पर भारी आर्थिक दंड लगाना चाहिए, जिससे दोबारा अतिक्रमण नहीं हो सकेगा तथा लोगों को बहुत हद तक जाम से छुटकारा मिल सकेगा। इस संबंध में एसडीपीओ आशुतोष कुमार ने बताया कि जाम स्थल पर चौकीदार एवं पुलिस बल तैनाती कर जाम से निजात दिलाया जाएगा।

शराब के साथ शराबी गिरफ्तार, भेजा गया जेल

प्रात : किरण संवाददाता

मनीगाछी(दरभंगा)। नेहरा थाना क्षेत्र के नेहरा लुल्हवा चौक पर बुधवार की रात्रि में वाहन जांच के क्रम में पुलिस ने एक मोटरसाइकिल की डिक्की से 180 एम एल का तीन टेट्रा पैक विदेशी शराब बरामद किया है।

साथ ही मोटरसाइकिल पर सवार नशे की हालत में दो युवक को भी गिरफ्तार किया है। इस संबंध में थानाध्यक्ष राज किशोर राय ने बताया कि रात्रि गस्ती के दौरान नेहरा लुल्हवा चौक पर वाहन चेकिंग किया जा रहा था। इसी दौरान एक मोटरसाइकिल की डिक्की खोलकर जाँच किया तो डिक्की से 180 एम एल का तीन टेट्रा पैक विदेशी शराब बरामद हुआ। साथ ही मोटरसाइकिल पर सवार बहेड़ा थाना क्षेत्र के जयन्तीपुर गाँव निवासी कुलदीप सहनी एवं मुकेश कुमार सहनी शराब की नशे में पाया गया। मोटरसाइकिल को जब्त कर लिया गया है। तथा दोनों आरोपी को गुरुवार को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

नीट यूजी परीक्षा में पेपर लीक और रिजल्ट में गड़बड़ी के खिलाफ एआईएसएफ ने किया पुतला दहन

प्रात : किरण संवाददाता

महुआ ।नीट यूजी परीक्षा-2024 परिणाम चार जून को घोषित किए गए लेकिन परिणामों को लेकर छात्रों का विरोध थमने का नाम नहीं ले रहा है विभिन्न छात्र संगठनों द्वारा लगातार इसका विरोध किया जा रहा है।मंगलवार को वामपंथी छात्र संगठन ऑल इंडिया स्टूडेंट्स फेडरेशन द्वारा महुआ के गांधी स्मारक चौक पर एनटीए और केंद्र सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर परीक्षा परिणाम में हुई गड़बड़ियों की जांच की मांग की गई साथ ही प्रधानमंत्री का पुतला दहन किया।प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे एआईएसएफ वैशाली के जिला अध्यक्ष प्रकाश प्रियदर्शी ने कहा कि नीट 2024 की परीक्षा शुरू होने से पहले ही 5 मई को प्रश्न पत्र आउट हो गया था, जिसकी शिकायत पटना के थाना में की गई थी और कुछ लोगों को पकड़ा भी गया था। लेकिन ठळअ ने कहा की कोई प्रश्न पत्र आउट नहीं हुआ है जबकि दैनिक अखबारों छापा हुआ है की 40 लाख रूपया लेकर प्रश्न पत्र रटाया गया था।उन्होंने कहा कि पहली बार ऐसा हुआ की 123 रैंक मे 67 छात्र और एक ही सेंटर के छह छात्र जो टॉप किए हैं। कभी भी नीट एग्जाम मे 718/719 अंक नहीं आ सकता है, इससे जाहिर होता है की धांधली हुई है।राज्य परिषद सदस्य सफदर इरशाद ने कहा कि जिस नीट का रिजल्ट 14 जून को आना था उसे दस दिन पहले यानि लोकसभा रिजल्ट के दिन ही क्यों प्रकशित किया गया। आखिर एनटीए क्या छुपाना चाहती है और ये पहली बार होगा की सभी टॉपर को एम्स जैसी कॉलेज मे नामांकन नहीं मिलेगी। उन्होंने कहा कि जब एनटीए हमेशा विवादों में रहा है तो ऐसे एजेंसी को किस आधार पर सरकार परीक्षा लेने को देती है। इस परीक्षा मे काफी धांधली हुई है, सरकार इसे रद्द करे और पुनः परीक्षा ले।इस कार्यक्रम में आदर्श रंजन, मो सलमान ,सूरज कुमार,प्रसिद्ध कुमार,विजित कुमार समेत दर्जनों छात्र शामिल हुए।

संक्षिप्त खबरें

प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी का मोबाइल उच्चके लेकर हुआ फरार

जमुई [झाझा] चलती गाड़ी में उच्चकों ने झाझा रेफरल अस्पताल के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी का मोबाइल छिनकर भागने में सफल रहा। प्राप्त जानकारी अनुसार रेफरल अस्पताल के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. अरूण कुमार देवघर जाने के लिए पटना जसीडीह गाड़ी में झाझा रेलवे स्टेशन पर सवार हुआ और गाड़ी खुलने के बाद वह अपना मोबाइल निकालकर किसी व्यक्ति से बात करना चाहा तभी उच्चकों ने अचानक मोबाइल को झपटने के बाद भाग निकला। हालांकि इस मामलें में प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी के द्वारा अबतक झाझा रेलथाना में आवेदन नही देने की बात सामने आई है।

अपराधियों ने मोटरसाइकिल और रुपए की छिनतई कर घटना स्थल से हुआ फरार

प्रात : किरण संवाददाता

घैलाढ़ (मधेपुरा) घैलाढ़ ओपी क्षेत्र के पथराहा चौक के समीप डीपू और कब्रिस्तान के बीच मेंन रोड पर बृहस्पतिवार के सुबह लगभग साढ़े छः बजे के करीब एक मोटरसाइकिल पर सवार तीन अज्ञात अपराधियों ने एक मोटरसाइकिल पर सवार दो व्यक्ति के साथ छिनतई की घटना को अंजाम दिया। इस दौरान मोटरसाइकिल चालक के साथ अपराधियों ने मारपीट भी किया। सहरसा बस्ती वार्ड नंबर 27 निवासी मो. नसीब का पुत्र मो. मयूर व मु. समीम का पुत्र बद्री आलम पार्टनरशिप पर बकरी- खस्सी खरीद बिक्री का कारोबारी करता था। वही दोनों व्यक्ति अपने घर सहरसा बस्ती से काला रंग की अपाची गाड़ी जिसका रजिस्ट्रेशन नंबर बीआर-19 जे 1961 पर सवार होकर बैजनाथपुर से घैलाढ़ की ओर जा रहे थे। इसी दौरान बैजनाथपुर की ओर से बजाज 220 पल्सर से पीछे कर रहे तीन सवार अज्ञात अपराधियों ने ओवरटेक कर पिस्टौल दिखाकर मोटरसाइकिल को गिरा दिया, उसके बाद मोटरसाइकिल व चालीस हजार रुपया की छिनतई के साथ एक व्यक्ति की मोबाइल लेकर घटनास्थल से फरार हो गया। वही पीड़ीत व्यक्ति बद्री आलम ने बताया कि हम लोग अपने घर सहरसा बस्ती वार्ड नंबर 27 से अपने मोटरसाइकिल पर सवार होकर मो. मयूर के साथ घैलाढ़ की ओर देहात आ रहे थे । तभी अचानक पीछे से मोटरसाइकिल पर सवार तीन अपराधियों ने ओवरटेक कर पिस्टौल के बल पर मोटरसाइकिल में धक्के मार कर मोटरसाइकिल को गिरा दिया और हम लोगों के साथ मारपीट करने लगा। वही बकरी खस्सी खरीद बिक्री करने के लिए जा रहे ,जेब में रखे चालीस हजार रुपए, मोटरसाइकिल व मोबाइल की छिनतई कर घटनास्थल से घैलाढ़ की ओर मौके से फरार हो गया। उसके बाद हम लोग पथराहा चौक पहुंचकर घटना की जानकारी दिया, तब जाकर सभी दुकानदार इकट्ठा हुए और घैलाढ़ ओपी के पुलिस को घटना की जानकारी दिया। घटनास्थल पर पुलिस पहुंचकर अपने स्तर से छानबीन कर पथराहा चौक पर लगे सीसीटीवी कैमरे को भी खंगाला गया तो देखा कि एक मोटरसाइकिल पर सवार दो अज्ञात अपराधी व पीड़ीत व्यक्ति के मोटरसाइकिल पर एक अज्ञात अपराधी भाग रहे थे, जिसका सीसीटीवी फुटेज में उनका फोटो कैद हो गया। वहीं पीड़ीत व्यक्ति बद्री आलम घैलाढ़ ओपी में आवेदन देते हुए न्याय की गुहार लगाया है। वही ओपी प्रभारी अध्यक्ष लवकुश ने बताया कि पीड़ीत व्यक्ति के द्वारा आवेदन दिया गया है अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है।

अलग अलग थाना क्षेत्र में हुई सड़क हादसे में 5 की मौत

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा 3 अलग अलग थाना क्षेत्रों में सड़क हादसे के शिकार 5 लोगों की मौत हुई। पहला घटना उदाकिशुनगंज थाना क्षेत्र के रहटा चौक की है जहां हाइवा के चपेट में आने से बाइक पर सवार 3 लोगों की मौत हो गई है सभी नैमुआ बराही गांव के रहने वाले बताए जा रहे है यह घटना देर रात की बताया जा रहा है कि सभी बाइक पर सवार व्यक्ति अपने ननिहाल से लौट रहे थे जिसे तेज रफ्तार हाइवा ने रौंदकर फरार हो गया। वहीं दूसरी घटना अरार थाना क्षेत्र का है जहां बारात से लौट रहे पिता-पुत्र सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल हो गए और पिता की घटना स्थल पर मौत गई। तीसरी घटना पुरैनी थाना क्षेत्र का है जहां गुरुवार अहले सुबह अज्ञात हाइवा और ट्रक के बीच हुई भीषण टक्कर में ट्रक चालक की मौके वारदात पर मौत हो गई। मृतक ट्रक चालक जमुई जिला का रहने वाला बताया जा रहा है। हालांकि इन सभी घटनाओं में पुलिस मामले की तफ्तीश कर रही है बहरहाल शव को पोस्टमार्टम हेतु सदर अस्पताल भेज दिया है।

पुलिस ने चलाया वाहन चेकिंग अभियान

प्रात : किरण संवाददात

घैलाढ़ (मधेपुरा) घैलाढ़ ओपी पुलिस ने घैलाढ़ चौक के पास मेंन रोड पुल पर गुरुवार के दोपहर एएसआई दिवाकर कुमार के नेतृत्व में वाहन चेकिंग अभियान चलाया। इस दौरान पुलिस ने करीब दो दर्जन वाहन एवं वाहन चालकों की जांच की। पुलिस ने संदिग्धों की तलाशी भी ली। बता दें कि वाहन चोरी की घटनाओं पर नियंत्रण व बाइक सवारों द्वारा किए जा रहे अपराधों पर लगाम कसने के इरादे से एसपी संदीप सिंह के निर्देश पर सघन वाहन चेकिंग में पुलिस लगातार जुटे हुए हैं। वाहन चेकिंग अभियान के दौरान पुलिस ने संदिग्धों व उनके सामान की भी तलाशी ली। लेकिन इस दौरान कुछ भी आपत्तिजनक समान पुलिस के हाथ नहीं लगी। वहीं जांच के दौरान कई दोपहिया वाहन चालक अपना-अपना रास्ता भी बदलकर गंतव्य स्थान को पहुंचते दिखे। वहीं कई नाबालिग दो पहिया वाहन चालकों में वाहन जांच की खबर सुन दिनभर हड़कंप मचा रहा।

तेज रफ्तार बाइक पर सवार तीन युवक की हुई मौत

- घर वालों का रो रो कर बुरा हाल, गांव में छाई मातमी सन्नाटा

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा जिले के उदाकिशुनगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत रहटा गांव के समीप अज्ञात तेज रफ्तार हाइवा ने बाइक पर सवार तीन युवक को रौंद दिया। गंभीर रूप से घायल युवक को ग्रामीणों के सहयोग से जननायक कपूरी ठाकुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती करवाया जहां इलाज के दौरान युवकों की मौत हो गई। मौत के बाद गांव में मातमी सन्नाटा छा गई। परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है। उदाकिशुनगंज थाना क्षेत्र के रहटा गांव के समीप हुई हादसा मामले की तफ्तीश में जुटी पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु भेजवाया। जहां पोस्टमार्टम के बाद गांव पहुंची शव को देख ग्रामीण और मृतक परिजनों के बीच हाहाकार मचा है। बताया जा रहा है कि देर रात करीब 11 बजे के आस पास बाइक पर सवार तीनों युवक किसी शादी समारोह से अपने घर नेमुआ बराही गांव लौट रहे थे कि रास्ते में उदाकिशुनगंज थाना क्षेत्र के रहटा गांव के समीप एनएच 106 मुख्य मार्ग पर तेज रफ्तार अज्ञात हाइवा ने रौंद कर फरार हो गया। हालांकि इस मामले को लेकर उदाकिशुनगंज पुलिस हाइवा की तलाश में जुट गई है पुलिस की माने तो मामले की जांच की जा रही है जांचों उपरांत आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। वहीं फिलहाल गांव में मातमी सन्नाटा पसरा हुआ है साथ हीं मृतक परिजनों का बुरा हाल है। तत्काल परिजन इस मामले में कुछ भी बोलने की स्थिति में नहीं है। बहरहाल शव को नेमूआ बराही गांव के वार्ड संख्या 8 में अलग अलग दाह संस्कार की प्रक्रिया चल रही है। बताया गया कि मृतक अवधेश कुमार, मोहन कुमार, तथा अमरेश कुमार एक हीं गांव और एक हीं वार्ड के रहने वाले हैं।

15 जून से बायोमेट्रिक से रेफरल अस्पताल में हर कर्मी की बनेगी उपस्थिति

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] स्वास्थ्य सुविधा को बेहतर बनाने के लिए रेफरल अस्पताल में अब डॉक्टर से लेकर अन्य स्वास्थ्यकर्मी अपने निर्धारित समयानुसार कार्य करेंगे। इसको लेकर रेफरल अस्पताल में एक साल से बंद पड़े बायोमेट्रिक मशीन को दुरूस्त कर दिया गया है और लोगों का डाटा भी अपलोड कर दिया गया है।

अस्पताल में समय से डॉक्टर सहित अन्य कर्मी आते ही सबसे पहले अपना उपस्थिति बनाएगें यह दिशा निर्देश भी अस्पताल के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ.अरूण कुमार के द्वारा लोगों को दे दिया गया है। जानकारी देते हुए स्वास्थ्य प्रबंधक सुभाषचंद्र ने बताया कि सभी लोगों का बायोमेट्रिक से 15 जून से उपस्थिती बनाना है इसके लिए पत्र भी निकाला गया है। स्वास्थ्य प्रबंधक ने बताया कि अस्पताल में बायोमेट्रिक मशीन लगा हुआ था लेकिन कुछ तकनीकी खराबी के कारण चालू नही हो पा रहा था। लेकिन विभागीय आदेशानुसार बायोमेट्रिक मशीन को ठीक करवाने के बाद हर कर्मी का डाटा अपलोड किया गया। आगे उन्होनें बताया कि बायोमेट्रिक से उपस्थिती नही बनने के कारण कुछ कमियां देखने को मिलता था लेकिन अब वह कमी दूर हो जाएगी और जो लोग बायोमेट्रिक से उपस्थिति नही बनाते है या फिर बायोमेट्रिक से उपस्थिति बनाकर अपने कार्य पर मौजूद नही रहेगे वैसे लोगों पर कार्रवाई भी वरीय पदाधिकारी के अनुसार किया जाएगा।

मातमपुर्सी के लिए पहुंचे विधानसभा उपाध्यक्ष, पुष्पांजलि अर्पित कर दी श्रद्धांजलि

प्रात : किरण संवाददाता

चौसा (मधेपुरा) स्वतंत्रता सेनानी स्व. श्री लाल मंडल की 104 वर्षीय धर्मपत्नी श्रीमती देवकी देवी के निधनों प्रांत मातमपुर्सी के लिए विधानसभा के उपाध्यक्ष नरेन्द्र नारायण यादव उनके पैतृक घर कलासन पहुंच कर शोकाकुल परिवार से मिले। उसके बाद उनके तैलीय चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि श्रीमती देवकी देवी सादगी भरी आदर्श जीवन जीने वाली महिला थी जो अपने पीछे दो पुत्र वीरचंद्र पटेल निषाद व मुकेश मंडल निषाद एवं तीन पुत्री सहित पांच संतान छोड़ गए।उन्होंने कहा कि इस दुःख की घड़ी में हम सभी आपके साथ है। उन्होंने कहा कि दिवंगत आत्मा को परमेश्वर अपनी चरणों में जगह दे और शोकाकुल परिवार को दुःख सहने की शक्ति प्रदान करें। मौके पर विधानसभा उपाध्यक्ष की पत्नी बेबी देवी, जदयू नेता प्रो. नवलकिशोर जायसवाल, साहित्यकार संजय कुमार सुमन, जवाहर चौधरी, चंदा भारती, राणाप्रताप सिंह, मनोज सिंह कुशवाहा, मुकेश सिंह निषाद, वीरचन्द पटेल, पुरैनी जिला परिषद प्रतिनिधि संजय सिंह, माखनलाल चतुर्वेदी, जितेंद्र कुमार, विदुर सिंह, डॉ. विकास कुमार सिंह, रजनीश कुमार, शोभा देवी, मनोरमा देवी, नर्मदा भारती, आहुति निषाद, प्रकृति निषाद, निकिता निषाद, पूजा कुमारी, आस्था कुमारी ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए मृत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की तथा विनम्र श्रद्धांजलि दी।

प्रखंड मुख्यालय में गंदगी का अंबार, शौचालय भी बेकार

प्रात : किरण संवाददाता

घैलाढ़ (मधेपुरा) प्रखंड में सरकार की महत्वाकांक्षी योजना स्वच्छ भारत मिशन का नजारा घैलाढ़ में फेल होता नजर आ रहा है। सरकार स्वच्छता अभियान चलाकर घर-घर शौचालय बनाकर प्रखंड को खुले में शौच से मुक्त बनाने में जुटी है मगर घैलाढ़ प्रखंड में इसका उल्टा नजारा है। प्रखंड मुख्यालय में आए कई ग्रामीणों ने कहा कि जिस प्रखंड मुख्यालय से प्रखंड कर्मी गांव को स्वच्छ बनाने की सलाह देते हैं वही प्रखंड मुख्यालय का शौचालय इतना गंदा है कि शौचालय जाने के पहले ही लोगों को गंदगी देख जी मिचलाने लगता है। एक तरफ जहां प्रशासन हर घर में शौचालय का निर्माण कराकर उसे उपयोग करवाने में जुटी है। इसके लिए प्रखंड के सभी 9 पंचायतों में जागरूकता कार्यक्रम युद्ध स्तर पर चलाया जाता रहा है। देशभर में स्वच्छ भारत मिशन अभियान चल रहा है। स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए गरीबों को शौचालय बनाने के लिए राशि भी दी जा रही है। अभियान को सफल बनाने में पूरा तंत्र जुटा हुआ है, लेकिन घैलाढ़ प्रशासन स्वच्छता को लेकर बेपरवाह है। यही वजह है कि घैलाढ़ में जगह-जगह कचरा का अंबार लगा है। शौचालय भी बेकार पड़ा है। इसे लेकर जिम्मेदार तंत्र की कोई चिंता तक नहीं है। वहीं प्रखंड सह अंचल कार्यालय परिसर में निर्मित शौचालय उपयोग के लायक नहीं है लेकिन इस पर किसी का ध्यान नहीं है। जहां से प्रखंड की सारी विकास योजनाएं संचालित हो रही है। सभी गांव से ग्रामीण प्रखंड मुख्यालय पहुंचते हैं इसके बावजूद वहां शौचालय का उपयोग के लायक नहीं रहना कई सवाल खड़ा करता है। इससे लोगों को काफी परेशानियां का सामना भी करना पड़ता है। प्रखंड मुख्यालय का शौचालय इतना गंदा है कि लोगों को शौचालय जाने से पहले उल्टी आने लगती है। जबकि इस भवन में पदाधिकारी द्वारा स्वच्छता का पाठ पढ़ाया जाता है। इसकी साफ-सफाई पर भी पदाधिकारी और जनप्रतिनिधियों का ध्यान नहीं है। जबकि समय-समय पर डीडीसी समेत विभागीय पदाधिकारी समीक्षा बैठक कर स्थिति का जायजा ले रहे हैं। वहीं प्रखंड सह अंचल कार्यालय परिसर में लाखों रुपए की लागत से निर्मित शौचालय उपयोग के लायक नहीं है लेकिन इस पर किसी का ध्यान नहीं जबकि प्रखंड कार्यालय से प्रत्येक वर्ष गांव के विकास के लिए करोड़ों रुपया दिए जाते हैं। वहीं प्रखंड मुख्यालय में शौचालय की उचित देखभाल नहीं होने के कारण स्थिति दयनीय है।

दिनदहाड़े राजद के पंचायत अध्यक्ष को मारी गोली

गंभीर रूप से घायल युवा राजद नेता का चल रहा है सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में इलाज

- ग्रामीणों ने भाग रहे अपराधी को धर दबोच कर किया पुलिस के हवाले

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा में राजद के पंचायत अध्यक्ष बिट्टू कुमार उर्फ निर्भय को दिनदहाड़े अपराधियों ने गोली मारी। गंभीर हालत में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मुरलीगंज में भर्ती कराया गया। मामला मधेपुरा और पूर्णियां सीमावर्ती क्षेत्र के मुरलीगंज थाना के सिंगियोन पंचायत का है जहां दिन दहाड़े सिंगियोन गांव में स्कूल के पास स्कूली छात्रा के साथ अपराधी छेड़खानी कर रहे थे जिसका विरोध करना राजद पंचायत अध्यक्ष निर्भय को भारी महंगा पड़ गया। अपराधियों ने राजद युवा नेता पर पिस्टल से गोली चला दी हालाकि वो बाल बाल बच गए। बताया जा रहा है कि पीड़ित राजद नेता के पैर में गोली लगी है। वहीं ग्रामीणों ने अपराधी को धर दबोच कर पहले जमकर पिटाई कर दी और बाद में मौके वारदात पर पहुंची पुलिस के हवाले कर दिया। वहीं इस मामले को लेकर पीड़ित राजद नेता निर्भय ने बताया कि हम पूर्णियां जिले दिवरा बाजार से आ रहे थे रास्ते सिंगियोन पंचायत स्थित सरकारी स्कूल के पास कोचिंग से जा रही छात्रा के साथ अपराधी छेड़खानी कर रहा था ।

जिसका हमने विरोध जताया तो पिस्टल निकाल कर हमारे ऊपर फायरिंग कर दिया हम किसी तरह जान बचा कर भागने की प्रयास किए तब तक एक गोली मेरे पैर में मार दिया हालांकि ग्रामीणों ने अपराधी को पकड़ लिया और पुलिस के हवाले कर दिया। वहीं इस मामले को लेकर मधेपुरा एएसपी प्रवेंद्र भारती ने बताया कि राजद नेता की पैर में गोली लगी वे खतरे से बाहर हैं बहरहाल अपराधी की गिरफ्तारी कर ली गई है। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार अपराधी गोलू कुमार साह बब्लू साह का पुत्र है जो पूर्णियां जिले के भंगहा गोठ टोला का निवासी है पुलिस मामले की अनुसंधान कर रही है जल्द इस मामले में बड़ी कार्रवाई की जाएगी तत्काल अपराधी को जेल भेजा जा रहा है।

चिलचिलाती धूप में आधार कार्ड को अपडेट कराना खतरे से खाली नहीं, परेशान हैं लोग

- बच्चों की सुरक्षा को लेकर स्कूल बंद हुआ,मगर आधार अपडेट करने के लिए आधार केंद्र पर खड़े हैं छोटे बच्चे

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौर :-जहां भयानक गर्मी चिलचिलाती धूप हीट वेव के कारण प्राइमरी से लेकर हाई स्कूल तक बिहार सरकार ने बंद कर दिया है तो वहीं,5 किलो अनाज को लेकर राशन कार्ड से नाम नहीं हटे इसलिए इस तपती धरती,गर्मी और चिलचिलाती धूप में छोटे-छोटे बच्चों को लेकर महिलाएं आधार अपडेट केंद्र पर पहुंचकर घंटो आधार अपडेट करने के लिए अपने नाम पुकारने का इंतजार करती रहती है।

आलम यह है कि सुबह 10:00 बजे से आधार कार्ड अपडेट करने के लिए केंद्र पर लोग पहुंचते जाते हैं कि जल्द से जल्द आधार कार्ड अपडेट हो जाए।लेकिन 10:30 से 11:00 बजते ही आधार अपडेट केंद्र पर सैकड़ो की संख्या में बच्चों महिला और पुरुष अपने कार्य के लिए उपस्थित हो जाते हैं। आधार कार्ड अपडेट करने वाले कर्मी भीड़ को देखकर के ही सर से पसीना निकलने लगता है ।बावजूद अवश्यकता समझ कर काम करने में मशगूल रहते हैं।

वहीं सुबह 10:00 बजे आधार कार्ड अपडेट करने के लिए बच्चों के साथ पहुंचे महिलाएं भूखे प्यासे बैठे रहते हैं ।बच्चों को जब भूख से बर्दाश्त नहीं होता तब उन्हें बिस्कुट और पानी लाकर खिलाकर उसे तब तक रखता है जब तक उनका अंगूठा अपडेट नहीं हो जाता है।आरिवर सरकार और विभाग को इस मामले में संज्ञान लेकर समय को और आगे बढ़ना चाहिए। ताकि इस चिलचिलाती धूप गर्मी में छोटे-छोटे बच्चे प्रभावित न हो।एक महिलाओं ने बताया कि सरकार हर समय कौन-कौन नियम लागू कर हम जैसे गरीब लोग हर समय परेशान रहते हैं। सरकार के फालतू नियम के कारण परेशानी बढ़ जाता है। पैसा की अलग खर्चा के अलावे यानी आधार अपडेट करने के लिए हर घर महिला परेशान नजर आ रही है। वहीं इससे अधिक बच्चे इस तपती धूप और गर्मी में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है ।बच्चों का मुंह धूप लगने से लाल हो जाता है।

बिजली की आंख मिचौली से प्रखंडवासी परेशान, मुख्य पार्षद बिजली कर्मी को लगाई डाट फटकार

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] चिलचिलाती धूप, भीषण गर्मी और उसके उपर प्रखंड क्षेत्र में बिजली की आंख मिचौली से इन दिनों लोग परेशान दिखाई दे रहे है। जिसके कारण बिजली विभाग की मनमानी पर अब लोगों को गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच चुका है। बिजली विभाग के खिलाफ लोगों को गुस्सा इस कदर फुट रहा है कि लोग सोशल मीडिया अथवा कॉल के माध्यम से विरोध जताते नजर आ रहे है। वही खलासी मुहल्ला में भी बिजली की आंख मिचौली से परेशान लोग नगर परिषद के मुख्य पार्षद संजय यादव से विद्युत विभाग की मनमानी को लेकर शिकायत करते हुए समस्या का समाधान करवाने की बात जिसके बाद मुख्य पार्षद ने बिजली विभाग के कर्मियों को डाट फटकार लगाया। मुख्य पार्षद ने कर्मियों को अधिकारियों को मौके पर बुलाने की बात लेकिन कर्मियों के द्वारा अधिकारियों का फोन न रिसीव करते देख मुख्य पार्षद गुस्सा होकर कहा कि अगर बिजली विभाग अपने रवैए से बाज नही आया तो उन्हे जनता के आक्रोश का सामना करना पड़ेगा। व्यवसायी दयाशंकर बरनवाल, अनुप केशरी, अनिल बरनवाल, मुन्ना यादव, पिंकू बरनवाल सहित कई लोगों का कहना है कि रात में बिजली की आंख मिचौली का खेल अधिक हो रहा है जिसके कारण रात में भी चैन की नींद लोग नही ले पाते है। दिन में लोग काम करते है लेकिन रात्रि में बिजली की आंख मिचौली से आराम नही कर पाते है।

खैरा थानाध्यक्ष शशि भूषण निलंबित

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई /खैरा:- बीते 3 जून की रात जमुई जिले के खैरा प्रखंड अंतर्गत नौडीहा गांव निवासी सत्यदेव आर्य की हत्या के मामले में थाना अध्यक्ष के द्वारा लापरवाही बरतने के आरोप में जमुई पुलिस अधीक्षक डॉ.शौर्य सुमन के द्वारा तत्काल प्रभाव से थाना अध्यक्ष को निलंबित कर दिया गया। मिली जानकारी के अनुसार हत्या कांड मामले में एक संदिग्ध आरोपी प्रियांशु कुमार को हिरासत में लेकर जब उससे अन्य साथियों के बारे में पूछताछ की गई तो पुलिस को जानकारी मिली की इस हत्या कांड में रैपिड एक्शन फोर्स के जवान नरेंद्र कुमार की भी संलिप्तता हैं इस हत्याकांड के आरोप में पुलिस पहले ही चार अन्य आरोपी को गिरफ्तार कर चुकी थी। जिसमे प्रियांशु कुमार, गौतम कुमार, प्रवेश कुमार तथा अभिनंदन कुमार पहले ही पुलिस ने उसे हिरासत में ले रखा है। इसी बीच जमुई पुलिस को सूचना मिली कि हत्याकांड में रैपिड एक्शन फोर्स के जवान मुंबई स्थित 102 बटालियन कैंप में कार्यरत है जिसकी संलिप्तता भी इस हत्या कांड में है। पुलिस मामले की छानबीन की और तत्काल उसका वारंट सहित अन्य संबंधित साक्ष्य बटालियन के कमांडेंट को प्रेषित किया और उसे निगरानी में रखने का अनुरोध किया साथ ही खैरा पुलिस को 9 जून की रात्रि को ही फ्लाइट से रवाना होने का जमुई एसपी द्वारा निर्देश दिया गया। लेकिन पुलिस शाम के बदले सुबह निकालना उचित समझी और भाग्य ने साथ नहीं दिया सुबह की फ्लाइट रद्द हो गई।

बालू तस्करी में लगे चार ट्रैक्टर को पुलिस ने किया जब्त

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौर। गिद्धौर थाना क्षेत्र के कैराकादो गांव के नदी घाट पर चल रहे बालू तस्करी पर गुरुवार को गिद्धौर पुलिस व खनन विभाग द्वारा संयुक्त रूप से कार्रवाई की गई है।कार्रवाई के दौरान बालू लदे चार ट्रैक्टर को पुलिस द्वारा जप्त किया गया है।इस दौरान बालू तस्करी में लगे लोगों को चिन्हित करते हुए गिद्धौर थानाध्यक्ष रीता कुमारी द्वारा खनन नियमानुसार के सुसंगत धाराओं के तहत नामजद आरोपित बनाया गया है। गिद्धौर थानाध्यक्ष रीता कुमारी ने बताया की ऊलाई नदी के कैराकादो गांव घाट से बालू तस्करी की सूचना मिल रही थी।जिस पर खनन विभाग की टीम व गिद्धौर पुलिस बल के जवानो की टीम बना गुरूवार की अहले सुबह छापेमारी की गई।पुलिस को आता देख बालू तस्कर तस्करी में लगे पाँच ट्रैक्टर में से चार को नदी में छोड़ एक ट्रैक्टर लेकर फरार हो गए। जिसके बाद गिद्धौर पुलिस द्वारा चार ट्रैक्टर को जप्त कर गिद्धौर थाना लाया गया है।उनोंहे बताया की सभी चिन्हित बालू तस्करो पर एफआईआर दर्ज कर पुलिस उनकी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी अभियान में जुट गई है।

अवैध बालू लदा एक ट्रैक्टर को पुलिस ने किया जब्त

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/ई०अलीगंज: इन दिनों अवैध बालू उत्खनन को लेकर बालू तस्करों के खिलाफ जिला प्रशासन के निर्देश पर बालू माफियों पर नकेल कसने को लेकर लगातार कारवाई की जा रही है। उसी क्रम में चन्द्रदीप पुलिस इन दिनों बालू माफियाओं पर पूरी तरह से नकेल कसते हुए दिख रही है। लगातार अवैध बालू लदे वाहन को जप्त कर कानूनी करवाई की जा रही है। इसी कड़ी में चंद्रदीप पुलिस ने बुधवार संध्या को इस्लामनगर कब्रिस्तान के समीप से एक अवैध बालू लदा ट्रैक्टर को किया जप्त किया है। जबकि वाहन चालक पुलिस को देख कर ट्रैक्टर को रोड किनारे लगा कर फरार हो गया । थानाध्यक्ष राजेन्द्र साह ने बताया चंद्रदीप थाना क्षेत्र के इस्लामनगर गाँव के कब्रिस्तान के समीप से एक अवैध बालू लदा ट्रैक्टर की सूचना मिली।एसआई रितेश कुमार एवं पुलिस जवान के द्वारा त्वरित कार्यवाई करते हुए गाड़ी का पीछा किया।वहीं चालक पुलिस को देख कर अवैध बालू से लदा स्वराज ट्रैक्टर को रोड किनारे छोड़ कर फरार हो गया।,बालू लोड ट्रैक्टर को चंद्रदीप पुलिस द्वारा जप्त कर चंद्रदीप थाना लाया गया। वहीं उन्होंने बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली की कुछ जगहों पर बालू के अवैध कारोबार किया जा रहा है,इसी दौरान चंद्रदीप पुलिस के द्वारा छापेमारी की गई, पुलिस वाहन देखते ही ड्राइवर ट्रैक्टर छोड़कर भाग गया, जप्त किया गया स्वराज ट्रेक्टर को पुलिस ने जप्त कर चंद्रदीप थाना ले आया।थानाध्यक्ष राजेन्द्र साह ने बताया कि चंद्रदीप पुलिस दारू और बालू के खिलाफ सख्त है।

सम्पादकीय

गहराता जा रहा है संदेह

ऐसा पहली बार हुआ कि नीट-यूजी परीक्षा में बैठे 67 छात्रों ने पूरे अंक पा कर पहली रैंक हासिल की। ऑल इंडिया स्तर पर प्रथम रैंक अब तक एक या दो छात्रों को ही मिलती रही है। इसलिए संदेह गहरा गया है। यह संदेह गहराता जा रहा है कि प्रतियोगी परीक्षाएं धांधली का जरिया बन गई हैं और यह सब कुछ प्रशासन के संरक्षण में हो रहा है। अनेक राज्यों में पेपर लीक की बढ़ती घटनाओं से यह शक बनना शुरू हुआ। अब देश के टॉप मेडिकल कॉलेजों में दाखिले के लिए आयोजित नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट (नीट-यूजी) को लेकर खड़े हुए विवाद से यह और गहरा गया है। परीक्षा आयोजित कराने वाली राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) सवालों के घेरे में है। शक को इससे भी बल मिला कि जिस रोज लोकसभा चुनाव की मतगणना में सारे देश का ध्यान था, एनटीए ने उसी रोज इम्तहान के नतीजों को जारी करने का फैसला किया। ऐसा पहली बार हुआ कि इस परीक्षा में बैठे 67 छात्रों ने पूरे अंक पा कर पहली रैंक हासिल की। ऑल इंडिया स्तर पर प्रथम रैंक अब तक एक या दो छात्रों को ही मिलती रही है। एनटीए ने सफाई दी है कि आसान परीक्षा, रजिस्ट्रेशन में बढ़ोतरी, दो सही उत्तरों वाला एक प्रश्न और परीक्षा के समय में नुकसान की भरपाई के लिए ग्रेस मार्क्स दिया जाना ऐसे कारण हैं, जिनसे छात्रों को उच्च अंक लाने में सहायता मिली। मगर परीक्षा में शामिल हुए छात्रों के एक बड़े हिस्से को यह स्पष्टीकरण मंजूर नहीं है। वे परीक्षा रद्द कर इसे दोबारा कराने की मांग कर रहे हैं। एनटीए का कहना है कि 1, 500 से ज्यादा उम्मीदवारों को दिए गए ग्रेस मार्क की समीक्षा करने के लिए चार सदस्यों की कमेटी गठित की गई है, जो एक हफ्ते के अंदर अपनी रिपोर्ट पेश करेगी। मगर संदेह इतना गहरा है कि ऐसे स्पष्टीकरण से छात्रों एवं समाज के एक बड़े हिस्से को संतुष्ट करने में सफलता नहीं मिली है। आरोप है कि पेपर लीक किया गया। यह मुद्दा इंडियन मेडिकल एसोसिएशन से संबंधित जूनियर डॉक्टर्स नेटवर्क ने उठाया। उसने मामले की सीबीआई जांच और दोबारा परीक्षा कराने को कहा है। जो हालात हैं, उनके बीच इन मांगों को ठुकराना मुश्किल मालूम पड़ता है। अगर ऐसा कर भी दिया गया, तो यह परीक्षा की शुचिता पर संदेह जारी रखने की कीमत पर ही होगा।

महाराज और शिवराज पर भरोसे का मतलब

राकेश अचल

केंद्रीय हिन्दू मंत्रिमंडल में मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और पूर्व केंद्रीय मंत्रीय ज्योतिरादित्य सिंधिया को शामिल करने के पीछे क्या वजह ये जानने में लोगों की बड़ी दिलचस्पी है। भाजपा के इन दो हंसों की जोड़ी 2018 के विधान सभा चुनाव में आमने-सामने थी । तब महाराज यानि ज्योतिरादित्य सिंधिया कांग्रेस में हुआ करते थे और चौहान मप्र के मुख्यमंत्री थे। इस चुनाव में भाजपा ने माफ करो महाराज, हमारे नेता शिवराज का नारा दिया था और कांग्रेस की और से माफ करो शिवराज, हमारे नेता महाराज का नारा उछला और कामयाब भी हुआ था। शिवराज सत्ताच्युत हो गए थे, लेकिन महाराज अपनी पार्टी के सत्ता में आने के बाद भी मुख्यमंत्री नहीं बन पाए थे।

मप्र की इस जोड़ी ने ही 2020 में फिर कमाल किया। ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कांग्रेस से बगावत कर कांग्रेस की सरकार गिरा दी। मुख्यमंत्री कमलनाथ को पदच्युत कराकर अपने अपमान का बदला लिया और एक बार फिर शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में प्रदेश में भाजपा की सरकार बनवा दी थी। 2020 से ही ये जोड़ी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी की नजरों में चढ़ी हुई थी। 2023 के विधानसभा चुनाव में भी इस जोड़ी ने हाड़तोड़ मेहनत कर मप्र में भाजपा को प्रचंड बहुमत दिलाकर भाजपा की सरकार बनवाई। ज्योतिरादित्य सिंधिया को तो 2020 के करतब के लिए पुरस्कार के रूप में राज्य सभा की सदस्यता और केंद्रीय मंत्री मंडल में स्थान मिल गया था, किन्तु शिवराज सिंह को कोई इनाम-इकराम नहीं मिला था। उलटे उनके स्थान पर मोहन यादव को प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाकर चौहान को अपमानित जरूर किया गया था भाजपा की और से। शिवराज सिंह मंजे हुए खिलाडी निकले। उन्होंने अपमान का कड़वा घूँट बिना ना-नुकुर के पी लिया। नतीजा ये हुआ कि 2024 के आम चुनाव में ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ चौहान को भी केंद्रीय मंत्रिमंडल में जगह मिल गयी। ज्योतिरादित्य सिंधिया को तो मंत्री बनना ही था क्योंकि वे प्रधानमंत्री के गांव-गौड़े के नाते दामाद लगते हैं, लेकिन शिवराज सिंह चौहान को उनकी योग्यता और मौन साधना की वजह से मंत्रिमंडल में शामिल किया गया। एक समय उनका नाम मोदी के उत्तराधिकारी के रूप में भी सुर्खियों में आया, लेकिन वे शायद अभी इस लायक नहीं बन पाए हैं।

प्रधानमंत्री ने केंद्र में बैशाखी सरकार का गठन करने के फौरन बाद अपने मंत्रिमंडल में सिंधिया और चौहान को एक खास मकसद से जगह दी है। इन दोनों को मंत्रिमंडल में लिए जाने से जातीय संतुलन बना या नहीं ये भी हम नहीं जानते। हम ये जानते हैं कि मोदी जी के पूर्व मंत्रिमंडल के नाकाम कृषिमंत्री नरेंद्र सिंह तोमर की वजह से मोदी जी और उनकी पार्टी को किसान आंदोलन के दौरान जो फजीहत झेलना पड़ी उसे देखते हुए ही शिवराज सिंह चौहान को नया कृषि मंत्री बनाया गया है। पूर्व केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर भी मध्यप्रदेश से ही थे। वे किसान आंदोलन को ढंग से हैंडिल नहीं कर पाए थे। दरअसल तोमर यानि ग्वालियर के मुन्ना भैया, मौन सिंह साबित हुए थे। वे न किसानों को मना पाए और न किसान यूनियनों को। उन्हें किसान संगठनों से संवाद स्थापित करने में भी कोई कामयाबी नहीं मिली। उलटे सरकार के माथे पर 700 किसानों की हत्या का दाग और लग गया था। विवादास्पद कानून वापस लेने पड़े थे सो अलग। देश के किसान अभी भी आंदोलित है। किसान आंदोलन किसी भी समय भड़क सकता है। किसान आंदोलन का खमियाजा भाजपा ने आम चुनावों में भी उठाया। ऐसे में वाचाल, मिलनसार और किसानों से सीधा रिश्ता कायम करने में समर्थ शिवराज सिंह चौहान को चुना गया। हालाँकि मुख्यमंत्री के रूप में शिवराज सिंह चौहान के ऊपर भी मंदसौर गोलीकांड का दाग लगा हुआ है। बहरहाल अब शिवराज सिंह को आपने आपको एक बार फिर प्रमाणित करना है। उनके पास एक मुख्यमंत्री के रूप में 18 साल से जयादा समय का अनुभव है, जो प्रधामंत्री जी के अनुभव से भी कहीं ज्यादा है। अब आइये महाराज यानि ज्योतिरादित्य सिंधिया की बात करते हैं। सिंधिया के डीएनए में संघ, भाजपा और कांग्रेस के गुण समाहित हैं। सिंधिया की दादी राजमाता विजयाराजे सिंधिया पहले कांग्रेसी, फिर जनसंघी और अंत में भाजपा में रहीं। सिंधिया के पिता माधवराव सिंधिया पहले जनसंघ में फिर कांग्रेस में रहे। खुद ज्योतिरादित्य सिंधिया ने राजनीति में अहला कदम कांग्रेस के माध्यम से रखा और 20 साल तक कनग्रेस में मान-सम्मान पाने के बाद अपमान मिलते ही कांग्रेस से किनारा कार भाजपा की सदस्यता ले ली। सिंधिया को मंत्रिमंडल में शामिल करने के पीछे उनका गुजरात से रिश्ता होने के साथ ही उनकी कर्मठता और ईमानदारी भी मानी जाती है।

मेरे अपने सूत्रों का कहना है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी जी ने बहुत सोच-विचार के बाद ज्योतिरादित्य सिंधिया को संचार मंत्रालय के साथ ही पूर्वोत्तर के विकास की जिम्मेदारी दी है। सिंधिया को संचार मंत्रालय देने के पीछे मकसद आने वाले दिनों में होने वाले 5जी इसप्रेक्टम की नीलामी भी है। आपको याद होगा कि इसी देश में कांग्रेस की सरकार के जमाने में अब तक का सबसे बड़ा 2 जी घोटाला हुआ था। इस घोटले में कांग्रेस के सहयोगी द्रमुक के नेता और मंत्री शामिल होने के आरोप लगे थे। तत्कालीन संचार मंत्री ऐ राजा को तो पंद्रह महीने जेल में भी काटना पड़े थे। हालाँकि राजा बाद में बरी हो गए थे। मोदी जी नहीं चाहते की 5 जी स्प्रेक्टुम के आवंटन में कोई घोटाला हो इसलिए सिंधिया को इसकी जिम्मेदारी दी गयी। केंद्रीय मंत्री मंडल में फिलहाल सिंधिया अकेले ऐसे मंत्री हैं जिनका दामन पाक-साफ दिखाई देता है। उनके पिता के साथ तो नैतिकता का भी तमगा जुड़ा था। उन्होंने एक मामूली सी हवाई दुर्घटना के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री पीव्ही नरसिम्हाराव को अपना त्यागपत्र सौंप दिया था। हवाला कांड में नाम आने के बाद कांग्रेस ने उन्हें पार्टी से भी निकाल दिया था, लेकिन उन्होंने उफ तक नहीं की और एक निर्दलीय के रूप में लोकसभा चुनाव जितने के बाद वे फिर कांग्रेस में शामिल हो गए थे। वे चाहते तो भाजपा में भी जा सकते थे, लेकिन उन्होंने फिर भी ऐसा नहीं किया।

मौजूदा सरकार को पूर्वोत्तर में जड़ें जमाने के लिए एक उत्साहीलाल की जरूरत थी। इस कसौटी पर ज्योतिरादित्य सिंधिया खरे उतरे इसीलिए उन्हें संचार मंत्रालय के साथ पूर्वोत्तर मामलों की भी जिम्मेदारी दी गयी। पूर्वोत्तर में मणिपुर सबसे ज्वलंत मुद्दा है। मणिपुर के मामले में संघ और भाजपा ही नहीं खुद मोदी जी नाकाम साबित हुए हैं। मणिपुर अभी भी जल रहा है। संघ प्रमुख डॉ मोहन भागवत ने ने भी फिर एक बार मणिपुर को लेकर नयी सरकार को आगाह किया है।

संसद में दागी नेताओं की संख्या बढ़ना चिन्ताजनक

खबर आई है कि लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर में पहुंचने वाले 543 सांसदों में 46 फीसदी आपराधिक रिकॉर्ड रखते हैं जो पिछली बार से तीन प्रतिशत अधिक है। भारतीय राजनीति में आपराधिक छवि वाले या किसी अपराध के आरोपों का सामना कर रहे लोगों को जनप्रतिनिधि बनाए जाने एवं उन्हें राष्ट्र-निर्माण की जिम्मेदारी दिया जाना-हर नागरिक के माथे पर चिंता की लकीर लाने वाली है। क्या इस स्थिति में देश की लोकतांत्रिक शुचिता एवं पवित्रता की रक्षा हो पाएगी? क्या हम आदर्श एवं मूल्यपरक समाज बना पाएंगे? क्या ये दागदार नेता एवं जन-प्रतिनिधि कालांतर हमारी व्यवस्था को प्रभावित नहीं करेंगे? चुनाव प्रक्रिया से जुड़े मसलों का विश्लेषण करने वाली सचेतक संस्था एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की ताजा रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2019 में चुने गये सांसदों में जहां 233 यानी 43 फीसदी ने अपने विरुद्ध आपराधिक मामले दर्ज होने की बात स्वीकार की थी, वहीं अठाहरवीं लोकसभा के लिये चुने गए 251 सांसदों ने आपराधिक मामले दर्ज होने की बात मानी है। जो कुल संख्या का 46 फीसदी बैठती है। आज भारत की आजादी के अमृतकाल का एक बड़ा प्रश्न है भारत की राजनीति को अपराध मुक्त बनाने का। यह बेवजह नहीं है कि देशभर में अपराधी तत्त्वों के राजनीति में बढ़ते दखल ने एक ऐसी समस्या खड़ी कर दी है कि अपहरण के आरोपी अदालत में पेश होने की जगह मंत्री पद की शपथ लेने पहुंच जाते हैं।

ललित गर्ग
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

देश में 18वीं लोकसभा चुनी जा चुकी है, मंत्रिमंडल का गठन हो चुका है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र और रिकॉर्ड संख्या में मतदाता होने के गर्व करने वाली स्थितियां हैं वहीं चिन्ताजनक, विचलित एवं परेशान करने वाली स्थितियां भी हैं। खबर आई है कि लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर में पहुंचने वाले 543 सांसदों में 46 फीसदी आपराधिक रिकॉर्ड रखते हैं जो पिछली बार से तीन प्रतिशत अधिक है। भारतीय राजनीति में आपराधिक छवि वाले या किसी अपराध के आरोपों का सामना कर रहे लोगों को जनप्रतिनिधि बनाए जाने एवं उन्हें राष्ट्र-निर्माण की जिम्मेदारी दिया जाना-हर नागरिक के माथे पर चिंता की लकीर लाने वाली है। क्या इस स्थिति में देश की लोकतांत्रिक शुचिता एवं पवित्रता की रक्षा हो पाएगी? क्या हम आदर्श एवं मूल्यपरक समाज बना पाएंगे? क्या ये दागदार नेता एवं जन-प्रतिनिधि कालांतर हमारी व्यवस्था को प्रभावित नहीं करेंगे? चुनाव प्रक्रिया से जुड़े मसलों का विश्लेषण करने वाली सचेतक संस्था एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की ताजा रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2019 में चुने गये सांसदों में जहां 233 यानी 43 फीसदी ने अपने विरुद्ध आपराधिक मामले दर्ज होने की बात स्वीकार की थी, वहीं अठाहरवीं लोकसभा के लिये चुने गए 251 सांसदों ने आपराधिक मामले दर्ज होने की बात मानी है। जो कुल संख्या का 46 फीसदी बैठती है।

आज भारत की आजादी के अमृतकाल का एक बड़ा प्रश्न है भारत की राजनीति को अपराध मुक्त बनाने का। यह बेवजह नहीं है कि देशभर में अपराधी तत्त्वों के राजनीति में बढ़ते दखल ने एक ऐसी समस्या खड़ी कर दी है कि अपहरण के आरोपी अदालत में पेश होने की जगह मंत्री पद की शपथ लेने पहुंच जाते हैं। अरविन्द केजरीवाल जैसे नेता आम चुनाव में कहते हैं कि आप लोग बड़ी संख्या में आम आदमी पार्टी को वोट दें ताकि मैं जेल जाने से बच जाऊं। हम ऐसे चरित्रहीन एवं अपराधी तत्वों को जिम्मेदारी के पद देकर कैसे सुशासन एवं ईमानदार व्यवस्था स्थापित करेंगे? कैसे आम जनता के विश्वास पर खरे उतरेंगे? कैसे संसद में दागियों के पहुंचने के लिये द्वार बंद होंगे? दरअसल, सुप्रीम कोर्ट की सजग पहल पर ही वर्ष 2020 से सभी राजनीतिक दल लोकसभा व विधानसभा के उम्मीदवारों के आपराधिक रिकॉर्ड को प्रकाशित करने लगे है। निश्चित ही इस आदेश का मकसद देश की राजनीति को आपराधिक छवि वाले नेताओं से मुक्त करना ही था। लेकिन वास्तव में ऐसा हुआ नहीं क्योंकि तमाम राजनीतिक दलों की प्राथमिकता जीतने वाले उम्मीदवार थे, अब चाहे उनका आपराधिक रिकॉर्ड ही क्यों न हो।

बड़ा प्रश्न है कि आखिर राजनीति में तब कौन आदर्श उपस्थित करेगा? क्या हो गया उन लोगों को जिन्होंने सदैव ही हर कुबार्नी करके आदर्श उपस्थित किया। लाखों के लिए अनुकरणीय बने, आदर्श बने। चाहे आजादी की लड़ाई हो, देश की सुरक्षा हो, धर्म की सुरक्षा हो, अपने वचन की रक्षा हो अथवा अपनी संस्कृति और अस्मिता की सुरक्षा का प्रश्न हो, उन्होंने फर्ज और वचन निभाने के लिए अपना सब कुछ होम दिया था। महाराणा प्रताप, भगत सिंह, दुगार्दास, छत्रसाल, शिवाजी जैसे वीरों ने अपनी तथा अपने परिवार की सुख-सुविधा को गौण कर बड़ी कुबार्नी दी थी। गुरु गोविन्दसिंह ने अपने दोनों पुत्रों को दीवार में चिनवा दिया और पन्नाधाय ने अपनी स्वामी भक्ति के लिए अपने पुत्र को कुर्बान कर दिया। ऐसे लोगों का तो मन्दिर बनना चाहिए। इनके मन्दिर नहीं बने, पर लोगों के सिर श्रद्धा से झुकते हैं, इनका नाम आते ही। लेकिन आज जिस तरह से हमारा राष्ट्रीय जीवन और सोच विकृत हुए हैं, हमारी राजनीति स्वार्थी एवं संकीर्ण बनी है, हमारा व्यवहार झूठा हुआ है, चेहरों से ज्यादा नकाबें ओढ़ रखी हैं, उसने हमारे सभी मूल्यों को धराशायी कर दिया। राष्ट्र के करोड़ों निवासी देश के भविष्य को लेकर चिन्ता और ऊहापोह में हैं। वक्त आ गया है जब देश की संस्कृति, गौरवशाली विरासत को सुरक्षित रखने के लिए कुछ शिखर के व्यक्तियों को भागीरथी प्रयास करना होगा। दिशाशून्य हुए नेतृत्व वर्ग के सामने नया मापदण्ड रखना होगा। अगर किसी हत्या, अपहरण या अन्य संगीन अपराधों में कोई व्यक्ति आरोपी है तो उसे राजनीतिक बता कर संरक्षण देने की कोशिश या राजनीतिक लाभ उठाने की कुचेष्ठा पर विराम लगाना ही होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भ्रष्टाचार एवं अपराध मुक्त राजनीति को सदैव प्राथमिकता दी लेकिन चुनाव जीतने के रण में वे भी अपराधी राजनेताओं को प्रश्रय देते हुए दिखे हैं।

सभी राजनीतिक दलों ने ही दागी उम्मीदवारों को टिकट दिए हैं। जो राजनीतिक दलों की कथनी और करनी के भारी अंतर को ही उजागर करता है। सवाल है कि देश के लिये नीति निर्धारण करने वाले ऐसे दागी लोग हमारे भाग्यविधाता बने रहेंगे तो हमारा भविष्य कैसा होगा? क्या आपराधिक पृष्ठभूमि वाले लोग जनप्रतिनिधि चुने जाने के बाद हमारी कानून-व्यवस्था को प्रभावित नहीं करेंगे? क्या होगा हमारे समाज व व्यवस्था का भविष्य? क्यों तमाम आदर्शों की बात करने वाले और दूसरे दलों के नेताओं की कारगुजारियों पर सवाल उठाने वाले नेता राजनीति को अपराधियों के वर्चस्व से मुक्त कराने की ईमानदार पहल नहीं करते? क्यों सभी राजनीतिक दल भारतीय लोकतंत्र में शुचिता एवं पवित्रता के लिये सहमति नहीं बनाते? निश्चित रूप से यदि समय रहते इस दिशा में कोई गंभीर पहल नहीं होती तो आने वाले वर्षों में दागियों का यह प्रतिशत लगातार बढ़ता ही जाएगा। इसके साथ ही बड़ा संकट यह भी है कि देश के निचले सदन में येन-केन-प्रकारेण करोड़पति बने नेताओं का वर्चस्व बढ़ता ही जा रहा है। इस बार संसद में चुनकर आए सांसदों में 504 करोड़पति हैं। ऐसे में क्या उम्मीद की जाए कि अपनी मेहनत की कमाई से जीवनयापन करने वाला आम आदमी कभी सांसद बनने की बात सोच सकता है? दागी एवं अपराधी राजनेता लोकतंत्र की एक बड़ी विडम्बना एवं विसंगति बनते जा रहे हैं। बात लोकसभा की ही नहीं है, विभिन्न राज्यों की सरकारों में भी कैसा विरोधाभास एवं विसंगति है कि एक अपराध छवि वाला नेता कानून मंत्री बन जाता है, एक अनपढ़ या कम पढ़े-लिखे प्रतिनिधि को शिक्षा मंत्री बना दिया जाता है। ऐसे ही अन्य महत्वपूर्ण मंत्रालय के साथ होता है। यह कैसी विवशता है राजनीतिक दलों की? अक्सर राजनीति को अपराध मुक्त करने के दावे की हकीकत तब सामने आ जाती है जब किसी राज्य या केंद्र में गठबंधन सरकार के गठन का

छात्रों में तनाव और चिंता का कारण बनती प्रश्नपत्र लीक होने की बढ़ती घटनाएं

यह दुर्भाग्य की बात है कि शिक्षा क्षेत्र की कई समस्याओं के समाधान की कोई राह नहीं दिख रही है। इन्हीं में से एक है प्रश्नपत्र लीक होने की समस्या। शायद ही कोई ऐसा राज्य हो, जहां किसी न किसी प्रतियोगी या नियमित परीक्षा के प्रश्नपत्र लीक होने का मामला सुर्खियों में न रहता हो। प्रश्नपत्र लीक होने की निरंतर घटनाएं प्रतियोगी परीक्षाओं की वास्तविकता को कमजोर करती हैं और छात्रों के लिए काफी तनाव का कारण बनती हैं। इस मुद्दे को सुलझाने के लिए एक उत्कृष्ट दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें बेहतर सुरक्षा प्रोटोकॉल, प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना, सख्त कानूनी उपाय और प्रभावित छात्रों के लिए व्यापक समर्थन शामिल है। इन उपायों को लागू करके, हम परीक्षा प्रणाली में विश्वास बहाल कर सकते हैं और सभी छात्रों के लिए एक निष्पक्ष और उचित प्रक्रिया सुनिश्चित कर सकते हैं। जब किसी प्रतियोगी परीक्षा का प्रश्नपत्र लीक होता है तो परीक्षार्थियों के साथ परिजनों के भी सपने भी चकनाचूर होते हैं। ऐसी घटनाओं से एक उन्नत, समृद्ध, सुशिक्षित एवं सशक्त राष्ट्र एवं समाज बनने-बनाने का हमारा सामूहिक स्वप्न और मनोबल टूटता है। इससे युवाओं के भीतर व्यवस्था के प्रति असंतोष एवं निराशा की स्थायी भावना घर करती है, शासन का प्रभाव कम होता है और व्यवस्था से आमजन का मोहभंग होता है। नौजवानों के लिए प्रतियोगी परीक्षाएं न केवल उज्ज्वल भविष्य का, अपितु कई बार अस्तित्व का भी प्रश्न बन जाती हैं। इसके साथ ही सरकार की विश्वसनीयता संकट में पड़ती है। प्रश्नपत्र लीक करवाने के मामले में कई बार बड़े-बड़े कोचिंग केंद्रों एवं संचालकों की भी संलिप्तता पाई जाती है।

प्रियंका सौरभ
लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं

यह दुर्भाग्य की बात है कि शिक्षा क्षेत्र की कई समस्याओं के समाधान की कोई राह नहीं दिख रही है। इन्हीं में से एक है प्रश्नपत्र लीक होने की समस्या। शायद ही कोई ऐसा राज्य हो, जहां किसी न किसी प्रतियोगी या नियमित परीक्षा के प्रश्नपत्र लीक होने का मामला सुर्खियों में न रहता हो। प्रश्नपत्र लीक होने की निरंतर घटनाएं प्रतियोगी परीक्षाओं की वास्तविकता को कमजोर करती हैं और छात्रों के लिए काफी तनाव का कारण बनती हैं। इस मुद्दे को सुलझाने के लिए एक उत्कृष्ट दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें बेहतर सुरक्षा प्रोटोकॉल, प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना, सख्त कानूनी उपाय और प्रभावित छात्रों के लिए व्यापक समर्थन शामिल है। इन उपायों को लागू करके, हम परीक्षा प्रणाली में विश्वास बहाल कर सकते हैं और सभी छात्रों के लिए एक निष्पक्ष और उचित प्रक्रिया सुनिश्चित कर सकते हैं।

जब किसी प्रतियोगी परीक्षा का प्रश्नपत्र लीक होता है तो परीक्षार्थियों के साथ परिजनों के भी सपने भी चकनाचूर होते हैं। ऐसी घटनाओं से एक उन्नत, समृद्ध, सुशिक्षित एवं सशक्त राष्ट्र एवं समाज बनने-बनाने का हमारा सामूहिक स्वप्न और मनोबल टूटता है। इससे युवाओं के भीतर व्यवस्था के प्रति असंतोष एवं निराशा की स्थायी भावना घर करती है, शासन का प्रभाव कम होता है और व्यवस्था से आमजन का मोहभंग होता है। नौजवानों के लिए प्रतियोगी परीक्षाएं न केवल उज्ज्वल भविष्य का, अपितु कई बार अस्तित्व का भी प्रश्न बन जाती हैं। इसके साथ ही सरकार की विश्वसनीयता संकट में पड़ती है। प्रश्नपत्र लीक करवाने के मामले में कई बार बड़े-बड़े कोचिंग केंद्रों एवं संचालकों की भी संलिप्तता पाई जाती है। नकल आज एक देशव्यापी कारोबार बनता जा रहा है, जिसके कई लाभार्थी और अंशधारक हैं। राजनेता से लेकर अधिकारी तक, प्रश्नपत्र निमार्ता से लेकर समन्वयक तक, परीक्षा आयोजित कराने वाली संस्थाओं और आयोगों से लेकर परीक्षा केंद्रों तक की संदिग्ध भूमिका या मिलीभगत से इन्कार नहीं किया जा सकता। प्रश्नपत्र लीक की लगातार घटनाएं भारत की शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय बन गई हैं। उदाहरण के लिए, अकेले प्रश्नपत्र लीक के 70 से अधिक मामले 2023 में सामने आए, जिससे बीसीएस, मेडिकल प्रवेश परीक्षा और राज्य भर्ती परीक्षाओं सहित विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाएं प्रभावित हुईं। इन लीक ने छात्रों में अत्यधिक तनाव और चिंता पैदा कर दी है, जिससे उनकी तैयारी और आत्मविश्वास का स्तर बाधित हुआ है। प्रश्नपत्र लीक होने में मैनुअल हैंडलिंग और सुरक्षा चूक प्रमुख कारण है। प्रश्नपत्रों की छपाई और वितरण की पारंपरिक विधि में कई टचपॉइंट शामिल होते हैं, जहां सुरक्षा से समझौता किया जा सकता है। उदाहरण के लिएः 2020 में, मैनुअल हैंडलिंग गलती के कारण बिहार लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं के दौरान एक महत्वपूर्ण गलती हुई। संगठित अपराध में संलिप्तता से आपराधिक गिरोह परीक्षा प्रणाली की कमजोरियों का लाभ बढ़ते आर्थिक लाभ कमाते हैं। उदाहरण के लिएः राजस्थान में, कई परीक्षाओं के प्रश्नपत्र लीक करने वाले एक गिरोह का भंडाफोड़ किया गया, जिससे करोड़ों का अवैध राजस्व अर्जित हुआ। तकनीकी कमजोरियाँ बताती है कि खराब सुरक्षा वाले डिजिटल सिस्टम को हैक किया जा सकता है, जिससे इलेक्ट्रॉनिक लीक हो सकता है। उदाहरण के लिएः मेडिकल प्रवेश परीक्षा के प्रश्नपत्र हैक किए गए ईमेल पोस्ट के माध्यम से लीक हो गए, जिससे व्यापक वितरण हुआ। परीक्षा अधिकारी या कर्मचारी कभी-कभी वित्तीय लाभ के लिए पेपर लीक करने के लिए बाहरी पक्ष के साथ सहयोग करते हैं। उदाहरण के लिएः 2023 में राज्य भर्ती परीक्षाओं के लिए प्रश्नपत्र लीक करने में शामिल होने के लिए कई अधिकारियों को गिरफ्तार किया गया था। प्रश्नपत्र लीक रोकने के लिए आज हमें उन्नत सुरक्षा प्रोटोकॉल की महती आवश्यकता है। भौतिक उपयोगकताओं के लिए छेड़छाड़-रोधी ट्रैकिंग और सुरक्षित परिवहन सुविधाओं का उपयोग करना जरुरी है। उदाहरण के लिएः केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने डेटाबेस डिजिटल संसाधनों का उपयोग शुरू किया है, जो केवल परीक्षा परिणामों पर अधिकृत कर्मियों के लिए आसान हैं। सुरक्षित प्रश्नपत्र प्रबंधन और वितरण के लिए ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी का उपयोग करना फायदेमंद हो सकता है। उदाहरण के लिएः एडुब्लॉक प्रोब्लॉक का उपयोग करके यह सुनिश्चित करता है कि प्रश्नपत्र सुरक्षित रूप से चिपका हुआ हो और केवल परीक्षा केंद्र पर ही डिक्रिप्ट किया गया हो, जिससे लीक होने का जोखिम काफी कम हो जाता है। सख्त कानूनी ढांचा लीक में शामिल व्यक्तियों और अंगों के लिए कठोर दंड लागू कर सकता है। उदाहरण के लिएः सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित मौतों की रोकथाम) टिप, 2024, कारावास और भारी जुमार्ने सहित कठोर दंड का प्रस्ताव करता है। परीक्षा कर्मचारियों के लिए नियमित प्रशिक्षण और सख्त जवाबदेही भी एक उपाय हो सकता है। उदाहरण के लिएः खतरे का पता लगाना और उन्हें रोकने के लिए नियमित ऑडिट करना और निगरानी प्रणाली लागू करना। प्रश्नपत्र लीक का छात्रों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पर पड़ता है। इससे छात्रों में तनाव और चिंता में वृद्धि होती है। प्रश्नपत्र लीक होने से उत्पन्न असुविधा और अनियमितता छात्रों में तनाव और चिंता को काफी हद तक बढ़ा देती है, जिससे उनका मानसिक कल्याण और परीक्षा प्रदर्शन प्रभावित होता है। जिन छात्रों ने कड़ी मेहनत की है, उन्हें लग सकता है कि उनकी उपलब्धियों को कम आंका गया है, जिससे शिक्षा प्रणाली और उनकी अपनी क्षमता में आत्मविश्वास की कमी हो सकती है। पेपर लीक की बार-बार होने वाली घटनाएं छात्रों को हक कर सकती हैं, जिससे उन्हें अपने भविष्य की संभावनाओं और योग्यता-आधारित सफलता के मूल्य के बारे में मोहभंग होने लगता है। बिहार में राज्य स्तरीय प्रवेश परीक्षाओं के कई लीक के बाद, कई छात्र निराश महसूस करने लगे और शिक्षा प्रणाली की निष्पक्षता में विश्वास खो दिया। छात्रों की शैक्षणिक योजनाएं परीक्षा में बैठने की आवश्यकता से बाधित होती हैं, जिससे अतिरिक्त तनाव और तार्किक प्रतिभा पैदा होती है। प्रश्न-पत्र लीक होने सेकण्डरी विश्वास और परीक्षा में विश्वास की हानि होती है, जिससे छात्रों और सेवाओं में अविश्वास पैदा होता है। छात्रों पर इस मनोवैज्ञानिक प्रभाव को कम करने के लिए परामर्श और सहायता सेवाएं समय की मांग है। लीक से प्रभावित छात्रों को मनोवैज्ञानिक सहायता और परामर्श प्रदान करना अत्यंत जरुरी है। उदाहरण के लिएः परीक्षा के समय में छात्रों को तनाव और चिंता से निपटने में मदद करने के लिए हेल्पलाइन और परामर्श केंद्र स्थापित करना। भविष्य में लीक को रोकने के लिए किए गए प्रयासों के बारे में संशोधित संचार बनाए रखें। छात्रों और उपभोक्ताओं को विश्वास को फिर से बनाने के लिए बेहतर सुरक्षा उपायों और मुफ्त योजनाओं के बारे में सूचित करना।

वैकल्पिक परीक्षा कार्यक्रम से बीमारियों को कम करने के लिए मजबूत सुरक्षा उपायों के साथ परीक्षाओं को जल्दी से दोबारा करवाना बहुत फायदेमंद है। छात्रों के लिए लंबे समय तक तनाव से बचने के लिए स्थानीय प्रश्न पत्र और पर्याप्त परीक्षा तिथियों की व्यवस्था करना। प्रश्नपत्र लीक होने की निरंतर घटनाएं प्रतियोगी परीक्षाओं की वास्तविकता को कमजोर करती हैं और छात्रों के लिए काफी तनाव का कारण बनती हैं। चूंकि प्रश्नपत्र लीक होने की समस्या अनियंत्रित होती जा रही है, इसलिए केंद्र समेत विभिन्न राज्यों की सरकारों का यह प्रथम एवं सर्वोच्च दायित्व होना चाहिए कि वे प्रश्नपत्र लीक होने के प्रकरणों की पुनरावृत्ति न होने दें और दोषियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई करें। इसके साथ ही उन्हें प्राथमिकता के आधार पर ऐसी व्यवस्था बनानी चाहिए, जिससे प्रश्नपत्र लीक होने की कोई गुंजाइश ही न रहे।

महाराज और शिवराज पर भरोसे का मतलब

राकेश अचल

केंद्रीय हिन्दू मंत्रिमंडल में मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और पूर्व केंद्रीय मंत्रीय ज्योतिरादित्य सिंधिया को शामिल करने के पीछे क्या वजह ये जानने में लोगों की बड़ी दिलचस्पी है। भाजपा के इन दो हंसों की जोड़ी 2018 के विधान सभा चुनाव में आमने-सामने थी । तब महाराज यानि ज्योतिरादित्य सिंधिया कांग्रेस में हुआ करते थे और चौहान मप्र के मुख्यमंत्री थे। इस चुनाव में भाजपा ने माफ करो महाराज, हमारे नेता शिवराज का नारा दिया था और कांग्रेस की और से माफ करो शिवराज, हमारे नेता महाराज का नारा उछला और कामयाब भी हुआ था। शिवराज सत्ताच्युत हो गए थे, लेकिन महाराज अपनी पार्टी के सत्ता में आने के बाद भी मुख्यमंत्री नहीं बन पाए थे। मप्र की इस जोड़ी ने ही 2020 में फिर कमाल किया। ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कांग्रेस से बगावत कर कांग्रेस की सरकार गिरा दी। मुख्यमंत्री कमलनाथ को पदच्युत कराकर अपने अपमान का बदला लिया और एक बार फिर शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में प्रदेश में भाजपा की सरकार बनवा दी थी। 2020 से ही ये जोड़ी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी की नजरों में चढ़ी हुई थी। 2023 के विधानसभा चुनाव में भी इस जोड़ी ने हाड़तोड़ मेहनत कर मप्र में भाजपा को प्रचंड बहुमत दिलाकर भाजपा की सरकार बनवाई। ज्योतिरादित्य सिंधिया को तो 2020 के करतब के लिए पुरस्कार के रूप में राज्य सभा की सदस्यता और केंद्रीय मंत्री मंडल में स्थान मिल गया था, किन्तु शिवराज सिंह को कोई इनाम-इकराम नहीं मिला था। उलटे उनके स्थान पर मोहन यादव को प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाकर चौहान को अपमानित जरूर किया गया था भाजपा की और से। शिवराज सिंह मंजे हुए खिलाडी निकले। उन्होंने अपमान का कड़वा घूँट बिना ना-नुकुर के पी लिया। नतीजा ये हुआ कि 2024 के आम चुनाव में ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ चौहान को भी केंद्रीय मंत्रिमंडल में जगह मिल गयी। ज्योतिरादित्य सिंधिया को तो मंत्री बनना ही था क्योंकि वे प्रधानमंत्री के गांव-गौड़े के नाते दामाद लगते हैं, लेकिन शिवराज सिंह चौहान को उनकी योग्यता और मौन साधना की वजह से मंत्रिमंडल में शामिल किया गया। एक समय उनका नाम मोदी के उत्तराधिकारी के रूप में भी सुर्खियों में आया, लेकिन वे शायद अभी इस लायक नहीं बन पाए हैं।

प्रधानमंत्री ने केंद्र में बैशाखी सरकार का गठन करने के फौरन बाद अपने मंत्रिमंडल में सिंधिया और चौहान को एक खास मकसद से जगह दी है। इन दोनों को मंत्रिमंडल में लिए जाने से जातीय संतुलन बना या नहीं ये भी हम नहीं जानते। हम ये जानते हैं कि मोदी जी के पूर्व मंत्रिमंडल के नाकाम कृषिमंत्री नरेंद्र सिंह तोमर की वजह से मोदी जी और उनकी पार्टी को किसान आंदोलन के दौरान जो फजीहत झेलना पड़ी उसे देखते हुए ही शिवराज सिंह चौहान को नया कृषि मंत्री बनाया गया है। पूर्व केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर भी मध्यप्रदेश से ही थे। वे किसान आंदोलन को ढंग से हैंडिल नहीं कर पाए थे। दरअसल तोमर यानि ग्वालियर के मुन्ना भैया, मौन सिंह साबित हुए थे। वे न किसानों को मना पाए और न किसान यूनियनों को। उन्हें किसान संगठनों से संवाद स्थापित करने में भी कोई कामयाबी नहीं मिली। उलटे सरकार के माथे पर 700 किसानों की हत्या का दाग और लग गया था।

संक्षिप्त खबरें

सीएसपी लूट कांड के दो अभियुक्त गिरफ्तार

बनियापुर । स्थानीय थाना क्षेत्र के छतवा गाव मे पिछले दिनों हुई सीएसपी लूट कांड के वांछित अपराधियों मे पुलिस ने दो को गुप्त सूचना पर गिरफ्तार कर लिया है,जिनके पास से लूट की मोबाइल बरामद हुई है वही लैपटाप अभी बरामद नही हुई है,गिरफ्तार अपराधियों ने कांड मे संलिप्तता स्वीकार किया है। मामले मे थानाध्यक्ष आशुतोष कुमार ने बताया है कि लौवा मनिकपुरा के बैंक लुटेरा प्रदीप कुमार राय तथा कुंदन कुमार राय को उक्त कांड मे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है,जिन्हे उक्त कांड मे संलिप्तता पाई गयी है वही मामले मे अनुसंधान जारी है।

बकरीद को लेकर शांति समिति की हुई बैठक

पानापुर(सारण) बकरीद के मद्देनजर गुरुवार को थाना परिसर में बीडीओ राकेश रौशन एवं थानाध्यक्ष विश्वमोहन राम की अध्यक्षता में शांति समिति की बैठक की गयी .बैठक में उपस्थित लोगों से अपील करते हुए बीडीओ ने कहा कि बकरीद को शांतिपूर्ण एवं सद्भावपूर्ण तरीके से मनायें .कोई ऐसा काम न करें जिससे एकदूसरे की धार्मिक भावना आहत हो .वही थानाध्यक्ष ने कहा कि सोशल मीडिया के माध्यम से अफवाह फैलाकर सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने की कोशिश करनेवाले असामाजिक तत्वों पर प्रशासन की पैनी नजर रहेगी .उन्होंने उपस्थित लोगों से अपील किया कि बकरीद के दौरान कही भी शांति भंग होने की आशंका हो तो स्थानीय पुलिस प्रशासन को अविलंब सूचित करें. बैठक में जदयू के प्रखंड अध्यक्ष अशोक कुशवाहा ,राजद के प्रखंड अध्यक्ष धर्मेंद्र कुमार यादव ,पूर्व मुखिया सभापति राय ,अजीत कुमार सिंह ,मौलाद्दीन ,महम्मद तैयब सहित अन्य गणमान्य लोग शामिल थे

मोटर और स्टार्टर स्वीच बोर्ड चोरी होने के बाद पिछले 16 दिनों से नलजल आपूर्ति बाधित

वाल्मीकिनगर ।नसीम खान भीषण गर्मी की तपिश और सुलगता जमी लोगों का बुरा हाल कर दिया है ।पसीने से तरबतर लोग प्यास बुझाने के लिए पेयजल का सहारा ले रहे हैं । बतादें की वाल्मीकिनगर पंचायत के 15 न० वार्ड स्थित त्रिहुत नहर बांध पर लगे जलनल से लोगों को पेयजल मिलना पिछले 16 दिनों ने बंद हो गया है ।जिससे लोग भीषण गर्मी में त्राहिमाम कर रहे है । इसके खिलाफ ग्रामीण धरना प्रदर्शन कर रहे हैं । स्थानीय समाजसेवी जलील मुखिया ने बताया कि पेयजल प्लांट से मोटर और स्टार्टर स्वीच की चोरी हो गई है जिसकी सूचना थाना को दे दी गई है लेकिन घटना के 15 दिन बीत जाने के बावजूद कोई वैकल्पिक व्यवस्था प्रशासन या संवेदक द्वारा नहीं कि जा रही है ।ताकि भीषण गर्मी में लोगों के लिए पेयजल की व्यवस्था को सुचारू किया जा सके।

सराहनीय कार्य रोटी बैंक बेतिया टीम द्वारा जरूरतमंद बुजुर्ग को दिया गया तिरपाल

बेतिया(घनश्याम) ।रोटी बैंक बेतिया एक धर्मार्थ ट्रस्ट जो गरीब लोगों को भोजन कराने और सामाजिक कार्य पहलों में संलग्न होने के लिए जाना जाता है ने हाल ही में एक जरूरतमंद बुजुर्ग व्यक्ति जिनके परिवार में कोई नही है, की सहायता की। संगठन से नियमित रूप से भोजन प्राप्त करने वाले बुजुर्ग व्यक्ति की झोपड़ी बारिश का सामना नहीं कर पा रही थी। रोटी बैंक बेतिया ने समुदाय के समर्थन से उन्हें अपनी झोपड़ी को ढकने के लिए तिरपाल प्रदान किया। रोटी बैंक बेतिया ट्रस्ट के संस्थापक संजू गिरी जी ने बताया कि संगठन प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना कर रहे व्यक्तियों के जीवन में बदलाव लाने के लिए समर्पित है और दूसरों को दयालुता और करुणा फैलाने में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह इशारा इस बात का उदाहरण है कि दयालुता के छोटे -छोटे कार्य लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव कैसे ला सकते हैं।

डायरिया बीमारी के प्रकोप फैलने से वार्डवासी परेशान

प्रात :किरण संवाददाता

रिविलगंज। नगर पंचायत क्षेत्र के इस भीषण गर्मी में आधा दर्जन वार्डो में डायरिया बीमारी के प्रकोप फैलने से लोग परेशान हैं। वार्ड 12,13,14,15 और 16 में डायरिया बीमारी से पीड़ित हैं लेकिन सबसे ज्यादा वार्ड 15 के लोग प्रभावित हुए हैं ।नगर पंचायत प्रशासन की उदासीनता से साफ सफाई में कमी, गंदे नाले,खुले नाले, दूषित पानी और खुले में कचड़े का अंबार से दूषित हवा के कारण यहां बार बार कोई न कोई बीमारी फैलती रहती है और लोग मरते हैं ।करोना काल हो, फिर डेंगू बीमारी और अब डायरिया बीमारी से मौतें हो रही है। इससे साफ साफ दिखाई दे रहा है कि बीमारी इन्हीं वार्डो क्यों फैल रही हैं ?, क्या कारण है? ।इस संबंध में वार्ड पार्षद किशोर सिंह पप्पू ने बताया कि नगर पंचायत प्रशासन की उदासीनता और लापरवाही से बीमारी फैल रही हैं। नाला जाम एवं गंदगी,नाले से होकर पाइप से पानी सप्लाई, टूटी फूटी पाइप के माध्यम से दूषित पानी, पानी टंकियों की सफाई नहीं होना और वार्डो में सफाई कर्मियों की कमी से ठीक से सफाई नहीं होने के कारण ही बीमारी फैल रही हैं और कार्यपालक पदाधिकारी सुरभि सिन्हा मुकदर्शक बनी हुई है। उन्होंने कहा कि सफाई एनजीओ द्वारा साफ सफाई ठीक से नहीं किया जा रहा है। हालांकि कार्यपालक पदाधिकारी विगत दिनों इन वार्डो के बारे में जानकारी प्राप्य की थी ।वैसे प्रत्येक वार्ड में 4 सफाई कर्मी और चार ठेला कर्मी के जगह एक सफाई कर्मी एक ठेला कर्मी काम कर रहे हैं जबकि प्रति महीना 18 लाख की राशि सफाई के नाम पर एनजीओ को नगर पंचायत प्रशासन दे रही हैं ।चार साल पहले सभी 21 वार्डो की सफाई 9 लाख रुपए प्रति महीने में सफाई होती थी। उन्होंने नगर पंचायत प्रशासन पर आरोप लगाया कि सफाई एनजीओ से कमीशन लिया जाता है। उन्होंने कहा कि साफ सफाई और शुद्ध पानी नहीं मिलने के कारण ही बीमारी फैल रही हैं और नगर पंचायत प्रशासन उदासीन हैं। वहीं वार्ड नंबर 15 के पूर्व वार्ड पार्षद एवं वार्ड पार्षद प्रतिनिधि रामबाबू राय ने बताया कि सफाई में कमी,खुले नाले, नालों पर टूटी शिल्पपट और कचरा डंपिंग हमारे वार्ड के पास होने से बार बार बीमारी फैल रही हैं ।इस भीषण गर्मी में पानी सप्लाई बंद किया गया है कारण दूषित पानी बताया जा रहा है। वार्ड के लोग जहां डायरिया से पीड़ित हैं वहीं पानी के लिए परेशान हैं। वार्ड नंबर 12 वार्ड पार्षद प्रतिनिधि अजय कुमार ने बताया कि मेरे वार्ड के गोदना मोड़ पर पानी निकासी नहीं और मुख्य सड़क पर जलजमाव से जहां राहगीरों को परेशानी हैं वहीं यहां के लोगों की वर्षों पुरानी समस्या दूर नहीं होने से मुंह छिपाकर आना-जाना पड़ता है। वार्ड नंबर 14 वार्ड पार्षद प्रतिनिधि आसिफ खान ने बताया कि डायरिया बीमारी से हमारे वार्ड में भी बहुत लोग पीड़ित हैं। कचड़े की डंपिंग से वातावरण दूषित हवा के कारण भी बीमारी फैल रही हैं। 21 वार्डो के सफाई के लिए 18 लाख महीने एनजीओ को नगर पंचायत प्रशासन भुगतान कर रहा है फिर भी साफ सफाई ठीक नहीं और बीमारी फैलने से लोग परेशान हैं। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार सफाई एनजीओ मानक के अनुसार काम नहीं कर सभी वार्ड पार्षदों के अलावा नगर पंचायत प्रशासन को कमीशन के रूप में प्रति महीने एक निश्चित राशि की भुगतान करता है जिसके कारण कोई भी एनजीओ पर उंगली नहीं उठाता। कुछ प्रतिनिधियों एवं आम लोगों ने नगर पंचायत प्रशासन के कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े किए। इस संबंध में नगर पंचायत कार्यपालक पदाधिकारी सुरभि सिन्हा ने बताया कि साफ सफाई से निकले कचड़े को डंपिंग करने के लिए नगर पंचायत के पास जगह नहीं है इसके बारे में विभाग को सूचित किया गया है। एनजीओ के सफाई पर सभी वार्ड पार्षद लिखित रूप से बताया है कि सफाई ठीक हो रही हैं। मैं सभी वार्डो की निरीक्षण करूंगी। एनजीओ से कमीशन की आरोप बेबुनियाद है। फिर भी वार्डवासी इस बीमारी से परेशान है।

एमडीआर टीबी मरीजों के लिए वरदान साबित हो रहा है जिला यक्षमा केंद्र

दवाओं को नियमित रूप से नहीं लेने पर होता एमडीआर का खतरा

प्रात :किरण संवाददाता

मोतिहारी। मल्टी ड्रग रेजिस्टेंट को एमडीआर टीबी के नाम से जाना जाता है। इन्हें बिगड़ी हुई या गंभीर प्रकार की टीबी भी कहते हैं। जब सामान्य टीबी में काम आने वाली दो मुख्य दवाएं आइसोनियाजिड व रिफाम्पीसीन रोगी पर बेअसर हो जाती हैं। यानी टीबी के कीटाणु इन दवाओं के लिए रेजिस्टेंट हो जाते हैं, तो उस रोगी की टीबी को एमडीआर टीबी कहते हैं। वहीं एमडीआर टीबी के रोगी की दवा शुरू करने के छह माह बाद भी यदि उसका बलगम कल्चर पॉजिटिव आता है तो उसे एक्सडीआर टीबी मानते है जो काफी जानलेवा होता है। जबकि सरकारी अस्पताल में राज्य सरकार व स्वास्थ्य विभाग द्वारा मुफ्त में रोगी का इलाज करवाया जाता है। एमडीआर होने पर 18 महीने तक नियमित दवाओं के प्रयोग से रोगी स्वस्थ हो जाता है। वहीं एक्सडीआर टीबी का उपचार 24 से 30 माह तक चलता है। ड्र2024 के मई माह तक मिले 83 एमडीआर टीबी के मरीजः पूर्वी चम्पारण जिले में वर्ष 2020 में 162, 2021 में 183, 2022 में 183, 2023 में 171, वहीं इस वर्ष 2024 मई महीने तक कुल 83 एमडीआर मरीज मिले हैं। जिनका जिला यक्ष्मा केंद्र व पीएचसी पर इलाज हो रहा है। वहीं टीबी मरीजों की खोज आशा कार्यकताओं, स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा की जाती है तब टीबी के मरीज प्रतिवेदित होते हैं। जिनका इलाज कराने के साथ ही समय समय पर फॉलोअप किया जाता है। लाभार्थी संतोष कुमार, चिरैया प्रखंड निवासी ने बताया की एमडीआर के कारण मेरी हालत बेहद खराब हो चुकी थीं परन्तु जिला यक्ष्मा केंद्र मोतिहारी से इलाज कराकर मैं आज पूर्णतः स्वस्थ हूं। लोगों को भी टीबी से बचाव के लिए जागरूक कर रहा हूं। ड्रदवाओं को नियमित रूप से नहीं लेने पर होता एमडीआर का खतराः जिले के यक्ष्मा पदाधिकारी डॉ सुनील ने बताया की जिले मे 8500 से ज्यादा टीबी मरीज है जिनका उपचार हो रहा है। उन्होंने बताया की आमतौर पर टीबी के मरीज जब दवाओं को नियमित रूप से नहीं लेते तो एमडीआर की समस्या होती है। वहीं दवाओं के सही चयन या सही मात्रा मे उपयोग न करने से भी एमडीआर टीबी हो सकता है। टीबी के वे रोगी जो एचआईवी से पीड़ित हैं, जिन्हें फिर से टीबी रोग हुआ हो, टीबी की दवा लेने पर भी बलगम में इस रोग के कीटाणु आ रहे हैं या टीबी से प्रभावित वह मरीज जो एमडीआर टीबी रोगी के संपर्क में रहा है, उसे एमडीआर टीबी का खतरा हो सकता है।

मझौलिया के रामनगर बनकट में मनरेगा योजना में मस्टरोल में बन रही मजदूरों की फर्जी हाजिरी

प्रात :किरण संवाददाता

बेतिया(मोहन सिंह)।पश्चिमी चंपारण जिले के मझौलिया प्रखंड में हर रोज मनरेगा में एनएमएमएस पर फर्जी हाजरी बनाई जा रही है जबकि अधिकारी जानकारी के बावजूद भी खुलेआम बन रहे फर्जी हाजरी को लेकर मौन साधे हुए है ।ताजा मामला मझौलिया प्रखंड के ग्राम पंचायत राज रामनगर बनकट का है। पँचायत में वार्ड नम्बर 8 मे धोबी घाट स्तिथ सरकारी पोखरा का सफाई कार्य योजना में 121 मजदूरों की हाजरी एनएमएमएस पर बनाई जा रही है लेकिन धरातल पर हकीकत कुछ और ही है। गुरुवार को जब स्थानीय ग्रामीणों की शिकायत पर कार्यस्थल का मुआयना किया गया तो न ही कार्यस्थल पर कोई मजदूर दिखा न ही कोई योजना का बोर्ड ।वही सूत्रों के अनुसार विगत कुछ दिनों से एनएमएमएस पर 1 ही फोटो को अपलोड करके हर रोज 130 मजदूरों की हाजरी बनाई जा रही है ।वही एनएमएमएस पर अपलोड एक की तस्वीरों में 8 लोग खड़े नजर आ रहे है जिनमे 3 लड़के नाबालिग ही मालूम पड़ रहे हैं ।इतना ही नही फोटो में आप स्पष्ट देख सकते है कि किसी के हाथ मे न कुदाल है न टोकरी है और कार्यस्थल पर खड़े लोगों को देखकर ऐसा लगता है कि कुछ लोग खड़े होकर बात कर रहें है ।वही ग्रामीण सूत्रों ने बताया कि पँचायत में मनरेगा में जमकर लूट मची हुई है ।कागज पर ही आधा अधूरा कार्य करके भुगतान करा लिया जाता है ।वही ग्रामीण सूत्रों की माने तो अगर जिलास्तरीय पदाधिकारी द्वारा पँचायत में मनरेगा से चल रही सभी योजनाओं या पूर्व में सम्पन्न योजनाओं की गहराई से जांच की जाय तो मनरेगा में जमकर हुई लूट का खुलासा हो सकता है ।वही अब यह सवाल उठना लाजमी है की आखिर क्यों वाजिब मजदूरों की हकमारी करके फर्जी हाजरी बनाकर सरकार को लाखों रुपये का चूना लगाया जा रहा है ?आखिर किनकी मिलीभगत से इतना लूट किया जा रहा है ?क्यों जानकारी के वाबजूद भी लगातार लूट जारी है ?सवाल तो कई है लेकिन अभी भी लोगों को जिला प्रशासन द्वारा इस मनरेगा लूट पर रोक लगाने और जांच करके कार्रवाई की उम्मीद है ।अब देखना है कि क्या जिला प्रशासन हर रोज बन रही इस फर्जी हाजरी पर स्थलीय जांच कर कार्रवाई करता है या ऐसे ही मनरेगा लूट जारी रहेगी।

भारतीय सेना से सेवानिवृत्त राहगीरों को पिला रहे शुद्ध पेयजल

प्रात :किरण संवाददाता

बेतिया(घनश्याम) ।तपती गर्मी और चिलचिलाती धूप के बीच मझौलिया-बेतिया बायपास रोड महना चौक समेत प्रखंड के चौक चौराहों पर भारतीय सेना से सेवानिवृत्त सह 112 के चालक शशिकांत सिंह के द्वारा राहगीरों के लिए शुद्ध पेयजल की व्यवस्था किया गया है ।इसको लेकर एंटी करप्शन ब्यूरो सह सामाजिक कार्यकर्ता सुजीत रमण ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि सरकार के मुखिया के तरफ से भी हर जिला प्रशासन को आदेश है लेकिन कहीं कोई व्यवस्था नहीं हैं, राजनीतिक दल के नेताओं के द्वारा कोई व्यवस्था नहीं की गई है ।इस बीच एक सेवा के जवान के द्वारा किया गया पहल काफी सराहनीय और बेहतरीन है इनके द्वारा लोगों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए नींबू की उचित खोल के साथ शुद्ध पेयजल की व्यवस्था किया जा रहा है ।शशिकांत सिंह के द्वारा प्यासे की प्यास बुझाई जा रही है जो की इंसानियत की एक मिसाल है और भी लोगों को इनसे सीख लेकर इस तरह का कार्य अपने क्षेत्र में करने की आवश्यकता है ।जो की इंसानियत की एक मिसाल है और भी लोगों को इनसे सीख लेकर इस तरह का कार्य अपने क्षेत्र में करने की आवश्यकता है।

खराब इवीएम को लौटाया जाएगा : इसीआईएल हैदराबाद

चुनाव आयोग ने 20 जून को हस्तगत कराने का दिया निदेश

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। लोक सभा आम निर्वाचन के दौरान उपयोग के दौरान खराब हुए इवीएम, वीवीपैट को विनिमार्ता कंपनी इसीआईएल, हैदराबाद को मरम्मत के लिए लौटाया जाएगा। उक्त जानकारी उप निर्वाचन पदाधिकारी जावेद एकबाल ने दी। उन्होंने बताया कि इस कोटि में जिले में तीन प्रकार की मशीनें हैं। प्रशिक्षण व जागरूकता, कमिशनिंग और मॉक पोल के दौरान खराब हुए इवीएम। एटीपी और एफएलसी के दौरान त्रुटिपूर्ण मशीनों को जिले से पूर्व में ही मरम्मत के लिए भेजा जा चुका है। उन्होंने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निदेशानुसार खराब पायी गयी मशीनों को विनिमार्ता कंपनी को वापस भेजे जाने का नियम है। इस सम्बंध में बिहार निर्वाचन विभाग के संयुक्त सचिव का पत्र जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिला पदाधिकारी को प्राप्त हुआ है। आयोग ने प्रदेश के सभी जिलों की क्लबिंग करते हुए पूर्वी चंपारण, पटना और भागलपुर को केंद्र बनाया है।

जहां जिलों से मशीनें जमा की जाएंगी। तत्पश्चात वहां से कंपनी को भेजा जाएगा। सारण की मशीनें पूर्वी चंपारण को आगामी 20 जून को हस्तगत कराने का निदेश है। श्री एकबाल ने बताया कि कमिशनिंग के दौरान जिलांतर्गत सभी 10 विधानसभा में केवल 16 बैलेट यूनिट, 25 कंट्रोल यूनिट और 20 वीवीपैट ही खराब पाए गए थे। जिन्हें रिप्लेस किया गया था। जबकि चुनाव के दिन मॉक पोल के दौरान 22 बीयू, 20 सीयू और 31 वीवीपैट त्रुटि होने के कारण बदले गए थे। इस प्रकार जिले से कुल खराब 38 बीयू, 45 सीयू और 51 वीवीपैट ही पूर्वी चंपारण भेजे जाएंगे। श्री एकबाल ने बताया कि वास्तविक मतदान के दौरान खराब हुई इवीएम को पोल्ड इवीएम के साथ जिला वेयरहाउस में आयोग के निदेशानुसार 45 दिन के इपी अवधि तक के लिए सीलबंद सुरक्षित रखा गया है। उस अवधि के बाद ही आयोग का निदेश प्राप्त होने पर अग्रेतर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने बताया कि कमिशनिंग और मॉक पोल के दौरान खराब पायी गयी मशीनों को संबंधित एआरओ और सेक्टर मजिस्ट्रेट से प्राप्त कर वेयरहाउस के एफएलसी हॉल में अलग भंडारित किया गया है। आयोग के इवीएम संचलन के नियमानुसार उन्हें पूर्वी चंपारण भेजने के पूर्व आयोग के ईएमएस-0.2 पोर्टल पर स्कैन किया जाएगा। गंतव्य के लिए रवाना करते समय एसओपी का सख्ती से अनुपालन सुनिश्चित कराया जाएगा।

महाविद्यालयों में कार्यरत है नामांकन हेल्प सेंटर, कुलपति ने एडमिशन कमेटी की बैठक में सबका जताया आभार

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा सदर। जय प्रकाश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार बाजपेई ने स्पष्ट निर्देश दिया है कि विश्वविद्यालय मुख्यालय और सभी अंगीभूत एवं संबद्ध महाविद्यालयों में नामांकन हेल्प सेंटर सुचारू रूप से संचालित किए जाएं। उन्होंने कहा कि हेल्प सेंटर पर कंप्यूटर सेट के साथ दक्ष कर्मी को तैनात किया जाय ताकि अभ्यर्थी वहीं से ऑनलाइन आवेदन कर सकें। इससे अभ्यर्थियों को परेशानी नहीं होगी और आवेदन हेतु साइबर कैफे में लगने वाले पैसे भी बच सकेंगे। उन्होंने आदेश दिया कि साथ-साथ आवेदन की गति को भी कायम रखा जाय। उन्होंने नामांकन प्रक्रिया को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए विश्वविद्यालय पदाधिकारियों, प्राचार्यो एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सबके सम्मिलित प्रयास से ही यह पूरी प्रक्रिया संभव हो पा रही है। माननीय कुलपति ने आज गुरुवार, 13 जून 2024 को विश्वविद्यालय नामांकन समिति के बैठक की अध्यक्षता करने के क्रम में उक्त निर्देश दिए। कुलपति ने साफ और स्पष्ट तौर पर कहा कि छात्र-छात्राओं को किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने अपनी प्रतिबद्धता दुहराते हुए कहा कि छात्र हित उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस दौरान माननीय कुलपति महोदय ने प्राचार्यों को निर्देश दिया कि जिन महाविद्यालयों में आवश्यकता से अधिक या कम प्राध्यापक हैं, वे प्राचार्य इसकी जानकारी 15 दिनों के अंदर विश्वविद्यालय को अवश्य उपलब्ध करा दें ताकि तदनुसार आगे कार्रवाई की जा सके। बैठक में कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए। उल्लेखनीय है कि जयप्रकाश विश्वविद्यालय में नामांकन के लिए आवेदन की प्रक्रिया सुचारू रूप से चल रही है। प्रतिदिन बड़ी संख्या में अभ्यर्थी नामांकन के लिए आवेदन कर रहे हैं। माननीय कुलपति महोदय द्वारा छात्रहित में आवेदन की तिथि भी विस्तारित कर 19 जून तक कर दी गई है। इस बीच आवेदन करनेवाले अभ्यर्थियों की संख्या में प्रतिदिन औसतन वृद्धि हो रही है। 12 जून को सिर्फ एक दिन में कुल 5427 अभ्यर्थियों ने आवेदन किए। बैठक में डीएसडब्ल्यू डॉ सरफराज, कुलसचिव प्रो. रणजीत कुमार सहित कई प्राचार्य व नामांकन समिति के सदस्य उपस्थित थे।

4 अभियुक्त गिरफ्तार, बालू लदा एक ट्रैक्टर ट्रॉली बरामद

प्रात :किरण संवाददाता

बगहा। पुलिस जिला में बुधवार को विगत 24 घंटा में 04 अभियुक्त की गिरफ्तारी की गई है। कुल-02 अजमानतीय वारंट का निष्पादन किया गया है। उक्त जानकारी पुलिस अधीक्षक,बगहा सुशांत कुमार सरोज ने प्रेस रिलीज जारी करके दिया ।उन्होंने बताया कि पटखौली थाना द्वारा वारंट में 02 अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। रामनगर थाना द्वारा अन्य काण्ड में 02 अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। रामनगर थाना द्वारा एक ट्रैक्टर ट्रॉली बालू लदा हुआ बरामद किया गया। इस संबंध में रामनगर थाना द्वारा अग्रतर कार्रवाई की जा रही है ।एसपी ने आगे बताया कि बगहा पुलिस द्वारा अपराध नियंत्रण हेतु वाहन जॉच किया गया जाँच के क्रम में यातायात थाना द्वारा-32,000, चौतरवा थाना द्वारा-24,000, रामनगर थाना द्वारा-19,000, पटखौली थाना द्वारा-15,000, धनहॉ थाना द्वारा-10,000, बगहा थाना द्वारा-9,000 इस प्रकार कुल-01,09,000 रुपए का जुमार्ना लगाया गया। गुरुवार को पुलिस अधीक्षक,बगहा के निर्देश के आलोक में बगहा पुलिस द्वारा अपराध एवं अपराधियों पर अंकुश लगाए रखने हेतु दिवा गस्ती के दौरान विभिन्न थाना अंतर्गत बैंक,बाजार एवं वाहन इत्यादि की चेकिंग की गई।

मंत्री ने की पूजा अर्चना,सांसद प्रतिनिधि ने किया स्वागत

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। बिहार के श्रम संसाधन मंत्री संतोष सिंह ने सोनपुर बाबा हरिहरनाथ मंदिर मे पहुंच कर पूजा अर्चना किया और देश और प्रदेश की खुशहाली और अमन चैन की कामना की इस अवसर पर प्रदेश कार्य समिति सदस्य सह सांसद प्रतिनिधि राकेश सिंह ने शाल और बुके देकर स्वागत किया और मंदिर कमिटी सचिव विजय लाला द्वारा मंदिर का प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया और उनके कार्यकाल की सराहना की इस अवसर पर मंदिर पुजारी सुशीलचंद्र शास्त्री बमबम बाबा भूटकून बाबा सहित अनेक लोग उपस्थित थे स्वागत अभिभूत होकर उन्होंने मंदिर कमिटी को धन्यवाद दिया और कहा कि मंदिर की बेवस्था काफी अच्छा है भक्तो को पूजा करने मे काफी सहूलियत होता है इसके लिए उन्होंने सभी लोगो की कार्य की सराहना की ।

बकरीद पर्व को लेकर बगहा नगर थाना में हुई शांति समिति की बैठक संपन्न

प्रात :किरण संवाददाता

बगहा ।बगहा नगर थाना परिसर में बकरीद को लेकर गुरुवार को शांति समिति की बैठक की गई ।बैठक में नगर क्षेत्र के जनप्रतिनिधि व स्थानीय लोग शामिल हुए ।बैठक के दौरान बगहा एसडीपीओ कुमार देवेंद्र व नगर थानाध्यक्ष अनिल कुमार ने लोगों से बकरीद पर्व को शांतिपूर्ण और भाईचारे के माहौल में मनाने की अपील की ।एसडीपीओ ने कहा कि हर पर्व और त्यौहार हमें शांति का संदेश देता है। उन्होंने लोगों से आपसी भाईचारा एवं सौहार्द के साथ बकरीद पर्व मनाने की अपील की। लोगों से शांतिपूर्ण माहौल में बकरीद सम्पन्न कराने में सहयोग करने को कहा गया। वही बगहा थाना क्षेत्र के सभी संवेदनशील जगहों पर बकरीद पर्व को लेकर मजिस्ट्रेट के नेतृत्व में पुलिस बल तैनात किया जाएगा। पूरे क्षेत्र में पुलिस गश्ती भी जारी रहेगी। असामाजिक तत्वों पर विशेष नजर रखी जाएगी। ऐसे में एसडीपीओ ने अपील की कि कही भी कोई अफवाह फैले तो इसकी सूचना त्वरित प्रशासन को दें ।बगहा थानाध्यक्ष अनिल कुमार ने जनप्रतिनिधियों एवं समाजसेवियो से शांतिपूर्ण माहौल में बकरीद पर्व सम्पन्न कराने में सहयोग करने को कहा साथ उन्होंने कहा कि सभ्य समाज निर्माण करने की दिशा में नशीली पदार्थ के कारोबारी तथा नशेड़ियों को पकड़ने में मदद की अपील की ।मौके पर एसआई उत्पल कुमार,अनिल कुमार पासवान सहित तमाम जनप्रतिनिधि व गणमान्य मौजूद रहे।

पंचायती में गए एक युवक को दूसरे पक्ष के लोगों ने मारी दो गोली, युवक की स्थिति गंभीर

प्रात :किरण संवाददाता

बेतिया(मोहन सिंह) ।बगहा नगर थाना क्षेत्र अंतर्गत पंचायती के दौरान एक युवक को दो गोली मारकर गंभीर रूप से जख्मी कर दिया गया । हमलावर गोली मारने के बाद घटनास्थल से फरार हो गए । गंभीर स्थिति में घायल युवक को बगहा अनुमंडलीय अस्पताल लाया गया। जहाँ गंभीर स्थिति को देखते हुए डॉक्टरों ने जी एम सी एच अस्पताल बेतिया रेफर कर दिया । घटना बुधवार की बताई जा रही है। बता दें कि बुधवार को बगहा नगर थाना क्षेत्र के वार्ड 26 में पंचायत हो रही थी। अचानक विवाद शुरू हुआ उसी दौरान दो लोगो ने एक साथ दो गोली युवक को मार दी और वहाँ से फरार हो गए। आनन फानन में इलाज के लिए घायल को बगहा लाया गया। जहां से उसे जीएमसीएच अस्पताल बेतिया रेफर कर दिया गया है, जहां उसकी इलाज की जा रही है। घायल युवक की पहचान बेतिया के जमादार टोला निवासी कुख्यात समीर अंसारी के रूप में की गई है । घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुट गई है। घटना की पुष्टि बगहा एसपी सुशांत कुमार सरोज ने की है। उन्होंने बताया कि घटना की जांच पुलिस ने शुरू कर दी है। जल्द ही घटना का पदार्फास किया जाएगा। सूत्रों के अनुसार यह मामला प्रॉपर्टी डीलिंग से संबंधित बताया जा रहा है। पुलिस सूत्रों के अनुसार बताया जाता है समीर अंसारी पर हत्या रंगदारी वह अपहरण जैसे करीब डेढ़ दर्जन मामले पश्चिम चंपारण के विभिन्न स्थानों में दर्ज है

भेल्दी में करंट लगने से महिला की हुई मौत

प्रात :किरण संवाददाता

भेल्दी(सारण) ।स्थानीय थाने के सरायबक्स टोला गांव में खेत की ओर बकरी चराने जा रही महिला की करंट लगने से मौत हो गई ।मृतका लक्ष्मी देवी(42) सरायबक्स टोला गांव के रमेश प्रसाद यादव की पत्नी बतायी जाती है। मिली जानकारी के अनुसार भेल्दी थाने के सरायबक्स टोला गांव के रमेश कुमार यादव की पत्नी लक्ष्मी देवी खेत की ओर बकरी चराने के लिए जा रही थी तभी बिजली के खंभे में लगे टाना रड में प्रवाहित करंट से स्पर्श होते ही वह अचेत होकर गिर पड़ी परिजन इलाज के लिए गड़खा सीएचसी लाए जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया ।घटना की सूचना मिलते ही भेल्दी पुलिस मौके पर पहुंच शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल छपरा भेज दिया ।मृत महिला लक्ष्मी देवी का शव पोस्टमार्टम होने के सरायबक्स गांव में पहुंचते ही परिजनों में चीख-पुकार मच गई ।पुत्र प्रिंस कुमार यादव व प्रियाशु कुमार मां का शव देखते ही मूर्छित होकर गिर पड़ा ।वह जब भी होश में आता अपने मां के शव से लिपटकर रोने लगता ।पुत्री प्रीति कुमारी,काजल कुमारी पिता रमेश कुमार यादव भी दहाड़ मारकर रो रहे थे ।ससूर शंभू राय बेसूध पड़े हुए है ।इस घटना के बाद सरायबक्स यादव टोला के लोग गम में डूबे हुए हैं।

उधना-छपरा -उधना अनारक्षित ग्रीष्मकालीन विशेष गाड़ी का संचालन शुरू

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय ।पूर्वोत्तर; रेलवे प्रशासन द्वारा यात्री जनता की सुविधा हेतु 09103/09104 उधना-छपरा-उधना अनारक्षित ग्रीष्मकालीन विशेष गाड़ी का संचलन उधना से 13 जून, 2024 को तथा छपरा से 15 जून, 2024 को एक फेरे के लिये निम्नवत किया जा रहा है। 09103 उधना-छपरा अनारक्षित ग्रीष्मकालीन विशेष गाड़ी 13 जून, 2024 को उधना से 07.15 बजे प्रस्थान कर भरूच से 08.27 बजे, वड़ोदरा से 09.32 बजे, गोधरा से 11.42 बजे, रतलाम से 14.15 बजे, उज्जैन से 16.15 बजे, संत हरदाराम नगर से 19.17 बजे, बीना से 22.20 बजे, सागर से 23.52 बजे, दूसरे दिन दमोह से 01.07 बजे, कटनी मुरवारा से 03.15 बजे, सतना से 05.15 बजे, मानिकपुर से 07.00 बजे, प्रयागराज छिवकी से 09.05 बजे, मिजार्पुर से 10.10 बजे, वाराणसी से 13.35 बजे, जौनपुर से 15.05 बजे, शाहगंज से 15.55 बजे, आजमगढ़ से 17.50 बजे, मऊ से 19.05 बजे तथा बलिया से 20.35 बजे छूटकर छपरा 22.30 बजे पहुँचेगी। वापसी यात्रा में, 09104 छपरा-उधना अनारक्षित ग्रीष्मकालीन विशेष गाड़ी 15 जून, 2024 को छपरा से 01.30 बजे प्रस्थान कर बलिया से 03.05 बजे, मऊ से 05.05 बजे, आजमगढ़ से 06.25 बजे, शाहगंज से 08.05 बजे, जौनपुर से 08.55 बजे, वाराणसी से 11.35 बजे, मिजार्पुर से 13.45 बजे, प्रयागराज छिवकी से 15.05 बजे, मानिकपुर से 17.40 बजे, सतना से 19.10 बजे, कटनी मुरवारा से 21.15 बजे, दमोह से 23.15 बजे, दूसरे दिन सागर से 00.32 बजे, बीना से 02.35 बजे, सन्त हरदाराम नगर से 05.02 बजे, उज्जैन से 07.40 बजे, रतलाम से 10.00 बजे, गोधरा से 13.02 बजे, वड़ोदरा से 14.40 बजे तथा भरूच से 15.52 छूटकर उधना 17.05 बजे पहुंचेगी। इस गाड़ी में शयनयान श्रेणी के 20 एवं एस.एल.आर. डी. के 02 कोचों सहित कुल 22 अनारक्षित कोच लगाये जायेंगे।

संक्षिप्त खबरें

अचानक मौत से गांव में शोक की लहर घर वालों का रो रो कर बुरा हाल

करपी/अरवल। करपी थाना क्षेत्र अंतर्गत खलीलपुर गाव निवासी भुवनेश्वर मिस्त्री के 28 वर्षीय पुत्र बिटू कुमार का अचानक मौत की खबर सुनते ही गांव में शोक की लहर दौड़ उठी घर वालों का रो रो कर बुरा हाल।वही अचानक मृत्यु की जानकारी मिलने पर रोहाई पंचायत के मुखिया सह मुखिया संघ के जिलाध्यक्ष अभिषेक रंजन मृतक के घर पहुंच कर पीड़ित परिवार को सांत्वना देते हुए ढांढस बंधाया।मुखिया ने पीड़ित परिवारों को हर संभव मदद करने का भरोसा आश्वास दिलाया। बिटू कुमार के मौत से पूरे गांव वालों में शोक की लहर व्याप्त है।मौत के खबर सुनते ही पूरे गांव वालों के भीड इकट्ठा हो गया।

मोराटल क्लस्टर ने 25 किसानों को बाजरे का बीज किया गया वितरण

गया। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना अंतर्गत मिलेट्स की खेती की प्रोत्साहन के लिए मोराटाल के पंचायत के मोराटल क्लस्टर में 25 किसानों को बाजरे का बीज वितरण किया गया एवं बकरौर पंचायत के घोघरिया क्लस्टर में भी 25 किसानों को बाजरे का बीज वितरण किया गया है।इस मौके पर जिला कृषि पदाधिकारी श्री अजय कुमार सिंह ने खुद अपने उपस्थिति में किसानों को बीज वितरण करबाए और किसानों को इस योजना के बारे में विस्तृत जानकारी भी दी ज्ञात हो कि गया जिला में पिछले कई सालों से मानसून की स्थिति ठीक नहीं होती जिसके कारण धान के फसलों पर बुरा प्रभाव पड़ता है और धान के उत्पादकता में हर बार गिरावट दर्ज की जाती है तथा मोटे अनाजों यानी मिलट्स की खेती से किसान कम पानी में भी इन मिलेट्स के खेती कर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं एवं ये मोटे अनाज स्वास्थ्यवर्धक भी होते हैं क्योंकि इन में पोषक तत्वों की मात्रा अन्य अनाजों की अपेक्षा अधिक पाई जाती है।

पांच साल की सरकार चले मंनत मांगी : डॉ मनीष पंकज मिश्रा

गया।देश को ओजस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी के ताजपोसी के बाद भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा के सह प्रभारी डॉ मनीष पंकज मिश्राके नेतृत्व में आज माता भद्रकाली का दर्शन करके देश को ओजस्वी प्रधानमंत्री के नेतृत्व में पूरे 5 साल की सरकार चले नरेंद्र भाई मोदी के नेतृत्व में देश विकसित राष्ट्र बने इसी मनोकामना के लिए माता रानी से विशेष पूजा अर्चना की माता रानी के विशेष पूजा में शामिल होने होने के बाद डॉक्टर मनीष पंकज मिश्रा ने कहा हम लोग का मन्नत था कि देश के प्रधानमंत्री से नरेंद्र भाई मोदी जी तीसरी बार शपथ लेंगे तो माता भद्रकाली का विशेष पूजा अर्चना करेंगे माता रानी हम लोग को मनोकामना पूर्ण कर दी देश को ओजस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी के नेतृत्व में तीसरी बार सरकार बनने पर माता के दरबार में विशेष अर्चना किया आज विशेष पूजा आचार्य करने वालों में राजेंद्र प्रसाद अधिवक्तासुनील बंबईया अभिषेक कुमार बबलू गुप्ता।

दुष्कर्म के मामले में एक अभियुक्त गिरफ्तार

परसा।थाना क्षेत्र के बनकेरवा में बुधवार को नाबालिक बच्ची के साथ दुष्कर्म करने का मामला प्रकाश में आया है.जिसको लेकर बच्ची के माता ने परसा थाना में एक व्यक्ति को नामजद अभियुक्त बनाते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई।प्राथमिकी के आधार पर पुलिस ने कार्रवाई करते हुए नामजद अभियुक्त को गिरफ्तार कर गुरुवार को जेल भेज दिया. गिरफ्तार नामजद अभियुक्त थाना क्षेत्र के बनकेरवा निवासी स्व जामुन राम का 45 वर्षीय पुत्र पुनदेव राम बताया जाता है।

चोरी के भैंस के साथ चोर को किया गया गिरफ्तार

सहदेई बुजुर्ग। सहदेई थाना क्षेत्र के पोहियार बुजुर्ग पंचायत के लोदीपुर चकपहाड़ गांव से चार भैंस और तीन बछड़े की चोरी की घटना के कुछ ही घंटे के अंदर पुलिस ने भैंस के साथ चोर को गिरफ्तार कर लिया।घटना को लेकर बताया गया की बुधवार की दोपहर तीन बजे लोदीपुर चकपहाड़ निवासी सुभाष राय की चार भैंस और तीन बछड़े की चोरी कर ली गई थी।बताया गया कि सुभाष राय ने अपने भैंस और बछड़ों को लोदीपुर चकपहाड़ के एक बंद चिमनी के निकट बांसबारी में बांध रखा था।वहीं से चार भैंस एवं तीन बछड़े की चोरी कर ली गई।घटना की सूचना सहदेई थाना के पुलिस को दी गई।जिसके बाद थाना अध्यक्ष पंकज कुमार एवं पुलिस पदाधिकारी दीपक कुमार ने तुरंत सर्च अभियान चलाया।जिसके बाद सात बजे संध्या में महनार थाना क्षेत्र के अंतर्गत चमरहरा में महनार रोड रेलवे स्टेशन के निकट से भैंस और बछड़े को बरामद कर लिया।पुलिस ने भैंस और बछड़े के साथ महनार थाना क्षेत्र के सरमस्तपुर पंचायत निवासी स्वर्गीय दुखन राय के पुत्र गणेश राय को गिरफ्तार किया है।गणेश राय पैदल ही सभी भैंस और बछड़े को ले जा रहा था।

बीएसएफ जवान का पंखा से लटका मिला शव, एफएसएल की टीम कर रही जांच

कमरे में फंदे से झुल रहा था शव,पश्चिम बंगाल में थे तैनात ,दो दिन पहले छुट्टी लेकर घर पर आए था

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल। रामपुर चौरम थाना क्षेत्र के राणापुर गांव में एक बीएसएफ जवान को हा हत्या का मामला सामने आया है। पुलिस ने निमार्माधीन मकान से शव का बरामद किया है। फंदे से लटकत मिला शव । पुलिस ने शव को फंदे से का उतारकर पोस्टमार्टम के लिए अरवल भेज दिया। जवान की पहचान राणापुर गांव मंटू कुमार के रूप में हुई है।

राणापुर गांव निवासी कृष्ण कुमार राम के पुत्र 26 वर्षीय मंटू कुमार के रूप में की गई। वे बीएसएफ की 9वीं वलियन के के हिस्सा थे। पश्चिम बंगाल के बदी कल्याणी शहर में तैन्वत थे। दो दिन इन पहले घुट्टी लेकर मर आए थे। जवान की हत्या की आशंका जताई है। पिता के द्वारा मिली जानकारी के अनुसार जमीन को लेकर विवाद चल रहा था। पिछले दिनों झगड़ा भी हुआ था। घर बनाने से रोका जा रहा था। इसी विवाद में आरोपितों ने मेरे बेटे की हत्या कर साक्ष्य मिटाने के लिए पंखे से लटका दिया। पुराने घर के कगार में नया मकान चन गहा है, जिसमें मंटू अकेला थ। सुबह देर तक नहीं जगने पर वहां गया तो देखा कि पंखे से उसका शव लटक राहा है।मंटू उत्तर प्रदेश के वाराणसी में बीएड की परीक्षा देने के लिए सुट्टी लेकर आए थे। परीक्षा देकर घर लौटे। एक दिन बाद वापस इन्ट्री पर जाने की तैयारी थी। मंगलवार की रात्रि आरोपितों ने उसकी हत्या कर दी। पिता के अनुस्वर मंटू ने दो साल पहले बीएसएफ में नौकरी ज्वाइन की थी। अभी शादी नहीं हुई थी। फिलहाल घर बनवा रहे थे।घटना को सूचना पार अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी कृति कमाल दाल बल के साथ मौके पर पहुंची। घटनास्थल पर एफएसन की टीम को मुलाया गया है।

एसपी राजेंद्र कुमार भील ने कहा कि एफएसएल को टीम कई बिंदुओं पर जांच कर ही है। चेपेस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही तय हो पाएगा कि जवान को हत्या हुई है या आत्महत्या। आवेदन मिलने पर उसी अनुसार आगे की कानूनी कार्रवाई की जएगी।

राष्ट्रीय लोक अदालत 13 जुलाई, 2024 के सफलता पूर्वक को लेकर किया गया बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

भोजपुर। आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत 13 जुलाई, 2024 के सफलता पूर्वक आयोजन हेतु जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव सह अपर मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी, गौतम कुमार द्वारा दो बैठक का आयोजन किया गया जिसमें एक बैठक सभी बैंक पदाधिकारीगण के साथ एवं एक बैठक कार्यपालक विभाग के पदाधिकारीगण के साथ किया गया। जिसमें बैंक की ओर से जिला अग्रणी प्रबंधक राजेश कुमार चौधरी के साथ अन्य बैंकों के पदाधिकारी और कार्यपालक विभाग से आए खनन विभाग से पदाधिकारी, विद्युत कार्यपालक अभियंता आरा, श्रम पदाधिकारी, वन विभाग के पदाधिकारी उपस्थित थे। सचिव गौतम कुमार ने बताया कि इस बैठक का मुख्य उद्देश्य आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत की तैयारी था, जिसमें सभी विभाग से आए पदाधिकारीगण को उनके विभाग से निष्पादित हो सकने वाले सुलहनीय वादों की सूची तैयार कर उपलब्ध कराना एवं अधिक से अधिक के निष्पादन हो इस हेतु आवश्यक निर्देश देना था।

चलंत लोक अदालत की टीम पहुंची शेरघाटी, 18 मामलों का ऑन स्पोर्ट हुआ निष्पादन

प्रात : किरण संवाददाता

शेरघाटी।अनुमंडल स्तर पर गुरुवार को बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार के द्वारा चलंत लोक अदालत का आयोजन किया गया। न्यायाधीश मृत्युंजय कुमार सिंह, अधिवक्ता अरविंद कुमार झा, सामाजिक कार्यकर्ता शारदा कुमा8 करी, अनुमंडलीय विधिक सेवा समिति, शेरघाटी से मनीष प्रकाश के उपस्थिती में किया गया।

चलंत लोक अदालत का उद्देश अपात्र व्यक्तियों को विधिक सेवा उपलब्ध कराना, सुलह समझौते के माध्यम से विवादों का निपटारा कराना, विधिक सेवा उपलब्ध कराने हेतु, ग्रामीण क्षेत्रों, कमजोर वर्गों को उनके विधिक अधिकारों के बारे में जानकारी देना, और विधिक शिविरों का आयोजन करना, पारिवारिक विवादों को सुलह समझौते के आधार पर निपटारा करना चलंत लोक अदालत का मुख्य उद्देश्य है। किन किन मामलों में विधिक सहायता नहीं दी जाती है, मानहानि, आर्थिक अपराधों और समाज कल्याण विधियों के विरुद्ध । लोक अदालत द्वारा मुकदमों के निपटारा में फायदे वकील पर खर्च नही होता, कोर्ट फीस नही लगता, पुराने मुकदमे की कोर्ट फीस वापस हो जाती है, किसी पक्ष को सजा नही होता मामले को बातचीत द्वारा सुलह से हल का लिया जाता है।

जबकि मुआवजा और हजार्ना तुरंत मिल डियाज सकता है। ऐसे में मामले का निपटारा तुरंत हो जाता है। आसानी से न्याय मिल जाता है। जिसका फैसला अंतिम होता है। फैसला के विरुद्ध कहीं अपील नहीं होती है। इसी क्रम में गुरुवार को शेरघाटी व्यवहार न्यायालय में चलंत लोक अदालत पहुँची जहाँ कुल 18 मामले का निष्पादन किया गया। इस मौके पर प्रथम श्रेणी दंडाधिकारी निर्मल कुमार के अतिरिक्त सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी, प्रखंड राजस्व पदाधिकारी, मुखिया, सरपंच के अलावा सैकड़ो स्थानीय लोग मौजूद थे।

जिलाधिकारी ने भीषण लू में आए लोगों की सुनी समस्या

प्रात : किरण संवाददाता

गया। भीषण गर्मी, लू के बाबजूद समाहरणालय परिसर में आये हुए अनेको व्यक्तियों को देख डीएम अपने कार्यालय से निकल कर बारी बारी से आवेदकों से मामले को गंभीरतापूर्वक सुनते हुए संबंधित पदाधिकारियों को प्राप्त आवेदनों को जांच यथाशीघ्र कराते हुए जांच प्रतिवेदन उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया है। आवेदकों के कई मामलों में जिला पदाधिकारी द्वारा जिले के वरीय पदाधिकारी यथा उप विकास आयुक्त, अपर समाहर्ता, अनुमंडल पदाधिकारी संबंधित प्रखंड के नामित जिला स्तरीय पदाधिकारी आदि द्वारा मामले को जांच करने का भी जिम्मा दिया गया है।जनता दरबार में प्रधानमंत्री आवास , मुख्यमंत्री आवास योजना से संबंधित आए मामलों को जिला पदाधिकारी ने उप विकास आयुक्त को संबंधित आवेदनों को यथाशीघ्र जांच करते हुए पात्रता रखने वाले व्यक्तियों को प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री आवास योजना का लाभ देने हेतु अग्रेतर कार्य करने का निर्देश दिया गया है।जनता दरबार में कई व्यक्तियों ने भूमि विवाद, आपसी बटवारा, अतिक्रमण, जमीन संबंधी दिक्कते आदि से संबंधित आवेदन दिए हैं। उन सभी आवेदन के आलोक में जिला पदाधिकारी ने संबंधित अंचलाधिकारी तथा थानाध्यक्ष एवं अनुमंडल पदाधिकारी तथा अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी के अध्यक्षता में थाना स्तर एवं अनुमंडल स्तर पर हर शनिवार को आयोजित होने वाले जनता दरबार में दोनों पक्षों के व्यक्तियों को बुलाकर संबधित मामलों को प्राथमिकता देते हुए निराकरण कराने का निर्देश दिए हैं।जनता दरबार में जमीन से संबंधित अत्यधिक मामले को देखते हुए जिला पदाधिकारी ने आए आवेदनों को सभी भूमि सुधार उप समाहर्ता को निर्देश दिया कि अच्छे तरीके से आए आवेदनों को जांच करते हुए संबंधित अधिकारियों द्वारा नियमानुसार उचित कार्रवाई करने हेतु आदेशित करें।

गोपी बिगहा निवासी सीपू साव के श्राद्धकर्म मे गणमान्य लोग शामिल होकर माल्यार्पण कर नमन की

प्रात : किरण संवाददाता

करपी/अरवल। करपी प्रखंड क्षेत्र के रामपुर चाय पंचायत स्थित गोपी बिगहा गांव निवासी स्वर्गीय सीपू साव जी का श्राद्धकर्म मे शामिल होकर रामपुर चाय पंचायत के सरपंच नंदु कुशवाहा पैक्स अध्यक्ष प्रतिनिधि डॉ सुनील कुमार बहुजन समाज पार्टी के जिलाध्यक्ष मनोज सिंह यादव चंदन कुमार सीपू साव के पुत्र भिखारी गुप्ता वीरेंद्र गुप्ता और पुनदेव गुप्ता समेत पंचायत के अन्य जनप्रतिनिधि एवं समाजसेवी गणमान्य लोगो ने उनके तैलचित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए माल्यार्पण कर नमन किया। मनोज सिंह यादव ने उनके चरणों में नमन करते हुए कहा कि सपू साव जी व्यक्ति नहीं एक विचार थे वह पंचायत के हर लोग के दिल में बसते थे भगवान उन्हें दिव्यांग आत्मा को शांति दे। पैक्स अध्यक्ष प्रतिनिधि डॉ सुनील कुमार ने माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित कर नमन किया और उन्होंने कहा कि स्वर्गीय सीपू साव एक बहुत नेक विचार के इंसान थे इनसे सभी समाज के लोगों का काफी लगाव रहा है। उन्होंने कहा कि ईश्वर अपनी चरणों में उनके आत्मा को शांति दे साथी पीड़ित परिवार जनों को भी इस विकट दुख के घड़ी में सहनशक्ति करने के लिए शक्ति प्रदान करें

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग माध्यम से बकरीद सौहार्दपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के निर्देश : वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक

प्रात : किरण संवाददाता

गया। गया जिला में बकरीद पर्व के पावन अवसर पर, वरीय पुलिस अधीक्षक , गया के द्वारा नगर पुलिस अधीक्षक, अपर पुलिस अधीक्षक, अपर पुलिस अधीक्षक नगर, सभी अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, अंचल निरीक्षक, और थानाध्यक्षों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से एक महत्वपूर्ण बैठक की गई है। इस बैठक में, बकरीद पर्व को सौहार्दपूर्ण और शांतिपूर्ण* ढंग से संपन्न कराने के लिए निम्नलिखित दिशा-निर्देश दिए गए हैं।आगामी बकरीद पर्व-2024 के मद्देनजर अनुमंडल स्तर, अंचल स्तर, थाना स्तर पर शांति समिति की बैठक कराना है।. आसूचना संकलन कर शरारती तत्वों, असामाजिक तत्वों की पहचान कर के उनके विरूद्ध निरोधात्मक कार्रवाई, बन्ध पत्र भरवाने की कार्रवाई करना। साम्प्रदायिक विवादास्पद स्थलों को चिन्हित करते हुए विवाद के कारणों एवं कारको के संबंध में आसूचना संकलन कर उचित विधि-सम्मत कार्रवाई करना।

पूर्व के पर्व में घटित घटना/तनाव में शामिल व्यक्तियों की सूची बनाकर उसकी वर्तमान गतिविधि का सत्यापन तथा निरोधात्मक कार्रवाई करना तथा साम्प्रदायिक कांडों में आरोप-पत्रित व्यक्तियों पर निगरानी करना। साम्प्रदायिक कांड में वांछित, फरार अपराधकर्मियों के विरूद्ध आसूचना संकलन करते हुए छापामारी कर उनकी गिरफ्तारी सुनिश्चित करना।

अवैध देशी, विदेशी शराब के निर्माण, बिक्री, भण्डारण, परिवहन एवं सेवन पर पूर्णतः रोक लगाने एवं शराब के महत्वपूर्ण काण्डों में वांछित फरार अपराधकर्मियों एवं शराब माफियाओं के विरुद्ध आसूचना संकलन कर उनकी गिरफ्तारी सुनिश्चित करते हुए शराब बरामदगी हेतु अग्रतर कार्रवाई करना। सोशल मीडिया पर 247 निगरानी रखते हुए आपत्तिजनक संवाद प्रेषित करने वाले के विरूद्ध विधिक कार्रवाई करना एवं किसी भी प्रकार के अफवाहों का त्वरित खंडन करना। संवेदनशील क्षेत्रों में गश्ती की प्रक्रिया को और अधिक सशक्त एवं प्रभावी रूप से कराना। हम सभी नागरिकों से अपील करते हैं कि वे इस पर्व को आपसी भाईचारे और सद्भावना के साथ मनाएं। गया पुलिस पूरी तरह से सतर्क है और किसी भी आपात स्थिति में तत्परता से कार्य करने के लिए तैयार है।गया पुलिस आपकी सेवा और सुरक्षा में सदैव तत्पर।

डीलर एसोसिएशन ने एसडीओ से मिलकर रखी अपनी मांग

प्रात : किरण संवाददाता

गया।बिहार प्रदेश फेयर प्राइस डीलर एसोसिएशन के महामंत्री वरुण कुमार सिंह के नेतृत्व में गया जिला राज्य खाद्य निगम के जिला प्रबंधक राजीव कुमार सिंह एवं गया सदर अनुमंडल के अनुमंडल पदाधिकारी किसलय कुमार से एक सिष्ट मंडल मिलकर समीक्षात्मक बैठक की गई जिसमें डीलर मार्जिन मनी, आवंटन में विसंगतियां, 2016 से 2018 तक बकाया राशि का भुगतान, 2020 का अप्रैल माह से लेकर जून माह तक कोरोना काल में पौस मशीन पर अधिक आवंटन चढ़ाया गया उसका हटाने की मांग किया गया, सितंबर 2020 का नो डिस्पैच रहने के बावजूद विक्रेताओं के मशीन पर आवंटन चढ़ा दिया गया था उसे हटाने की मांग जिस पर विभागीय सचिव के निर्देशन के आलोक में हटाने की मांग की गई। समीक्षात्मक बैठक में सभी दोनों पदाधिकारी तत्काल अपने-अपने कार्यालय के कर्मचारियों को आदेश दिया और संगठन के लोगों को सहयोग करने का तथा तत्काल समस्याओं को समाधान करने की भी बात की गई हैं ।इस शिष्ट मंडल में गया जिला फेयर प्राइस डीलर एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष महेंद्र कुमार सिंह, जिला सचिव डॉ विजय कुमार यादव सह प्रखंड अध्यक्ष बोधगया, वजीरगंज प्रखंड के प्रखंड अध्यक्ष शिवनाथ सिंह चंद्रवंशी, कोच प्रखंड के अध्यक्ष सर्वेश यादव, टेकारी प्रखंड के सचिव मिथिलेश सिंह, मोहम्मद जागीर, सुधीर कुमार, नारायण शर्मा आदि शामिल थे।

अधिवक्ता राम अयोध्या राय एवं उनके पुत्र अधिवक्ता सुनील राय का अपराधियों द्वारा दिनदहाड़े गोली मारकर हत्या किए जाने पर आरा अधिवक्ताओं में आक्रोश

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। ऑल इंडिया लॉयर्स एसोसिएशन फॉर जस्टिस* (अक्छअख आइलाज), के राष्ट्रीय परिषद सदस्य अधिवक्ता अमित कुमार गुप्ता उर्फ बंटी ने कहा, छपरा व्यवहार न्यायालय के अधिवक्ता राम अयोध्या राय एवं उनके पुत्र अधिवक्ता सुनील राय का अपराधियों द्वारा दिनदहाड़े गोली मारकर हत्या किए जाने की घटना पर घोर आक्रोश व्यक्त करता है। आइलाज मृतक अधिवक्ता के शोक संतप्त परिवार जनों के साथ अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता है और इस बृहत दुःख की घड़ी में उनके साथ खड़ा है।

आइलाज यह मांग करता है कि अपराधियों की अविलंब गिरफ्तारी हो और मामले का स्पीडी ट्रायल चलाकर कड़ी से कड़ी सजा दिलाया जाए। राज्य सरकार, बिहार स्टेट बार काउंसिल एवं बार काउंसिल आफ इंडिया द्वारा मृतक अधिवक्ताओं के आश्रितों को अविलंब 50-50 लाख रुपये सहायता राशि मुहैया कराया जाए। साथ ही बिहार स्टेट बार काउंसिल, बार काउंसिल आफ इंडिया से यह मांग करता है कि "एडवोकेट प्रोटेक्शन एक्ट" राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार से लागू कराने की कार्रवाई सुनिश्चित कराया जाए । आइलाज के राष्ट्रीय परिषद सदस्य (अधिवक्ता, सिविल कोर्ट आरा) ने कहा कि आइलाज द्वारा बार बार अधिवक्ता सुरक्षा विधेयक की मांग उठाए जाने के बावजूद राज्य सरकार और बार काउंसिल का रवैया उपेक्षापूर्ण रहा है। जिसका परिणाम है कि दूसरों को न्याय दिलाने में सबसे अहम किरदार निभाने वाला अधिवक्ता वर्ग बिल्कुल असुरक्षित है। ज्ञातव्य हो कि आइलाज द्वारा पहले ही अधिवक्ता संरक्षण विधेयक का ड्राफ्ट बिल विभिन्न राज्य सरकारों को सौंपा जा चुका है।

डीएफओ ने शिवनंदन यादव पार्क का किया निरीक्षण, कहा पार्क का होगा समुचित विकास

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] नगर क्षेत्र के पुरानी बाजार चेती दुर्गामंदिर के समीप स्थित शिवनंदन यादव पार्क का गुरुवार को डीएफओ तेजस जायसवाल ने निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान डीएफओ ने पार्क में घूमघूम कर लगजे पेड़ पौधा, चारो तरफ पौधा के लिए बना क्यारी एवं अन्य चीजों का निरीक्षण किया। इसे लेकर पार्क का देखरेख कर रहे गार्ड से भी कई तरह का बातचीत किया। निरीक्षण के दौरान डीएफओ ने कहा कि फिलहाल इसका जायजा लिया गया है । इसके चतुर्दिक विकास को लेकर हम लोग सभी सतर्क व सजग हैं। इसी को देखने के लिए आए हुए हैं । उन्होंने बताया कि पूरे नगर परिषद क्षेत्र में यह पहला पार्क है। जहां लोग मॉर्निंग वॉक कर सकते हैं और इवनिंग वॉक में अपना समय बिता सकते हैं। इसके लिए हमलोग क्या-क्या सुविधा दे सकते हैं। उस पर भी विचार कर रहे हैं। डीएफओ ने बताया कि पूरे शहर का यह अति महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसलिए इसका समुचित विकास करना जरूरी है । इसके लिए हमलोग रोड मैप तैयार कर लिए हैं । बच्चों के मनोरंजन या अन्य सुविधाओं के लिए भी इसमें कुछ खास काम किया जाएगा, ताकि यह पार्क और अधिक आकर्षित बन सके। उन्होंने आम लोगों से अपील करते हुए कहा कि पार्क झाझावासियों के लिए समर्पित है । इसकी साफ- सफाई पर ध्यान दें व इसके हरा-भरा होने पर भी विशेष ध्यान दें । कि इसको और अधिक सुसज्जित ढंग से रखा जा सके । मौके पर अन्य कई लोग मौजूद थे।

मनरेगा एवं प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के पदाधिकारी/ कर्मियों का किया गया 104 चिकित्सीय परीक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। शिविर के आज तीसरे दिन विद्या भवन आरा के सभागार में मनरेगा एवं प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के पदाधिकारी/ कर्मियों के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर के तीसरे दिन 104 चिकित्सीय परीक्षण किया गया। यह शिविर कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पताल बिहटा के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। आज इस शिविर में मुख्य रूप से पीरो, संदेश और सहार प्रखंड के पदाधिकारी/ कर्मियों का चिकित्सीय परीक्षण किया गया । इस शिविर में शरीर के विभिन्न अंगों से जुड़े हुए डॉक्टर उपस्थित रहे, जिसमें मुख्य रूप से दांत, आंख, पेट , मस्तिक इत्यादि से संबंधित बीमारियों की जांच की गई। बीना कुमारी आवास सहायक पीरो ने कहा कि मैं उप विकास आयुक्त महोदय बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूं कि उन्होंने हम सभी कर्मियों के लिए निः शुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित करवा । इस शिविर के माध्यम से कई तरीके की बीमारियों की जांच कराई गई ।

बीडीओ ने प्रखंड सह अंचल कर्मियों को दिया आवश्यक दिशा-निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

बगहा। प्रखंड बगहा एक के कार्यालय प्रकोष्ठ में गुरुवार प्रखंड विकास पदाधिकारी प्रदीप कुमार की अध्यक्षता में गुरुवार को लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान के प्रखंड समन्वयक संजय कुमार एवं 24 पंचायत के पंचायत सचिव, राजस्व कर्मचारी, अंचल अमीन, लेखापाल, तकनीकी सहायक, स्वच्छता पर्यवेक्षकएवं प्रखण्ड स्तरीय कर्मी शामिल रहें। बीडीओ प्रदीप कुमार ने लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान अंतर्गत लक्ष्य के अनुरूप डब्ल्यूपीयू निर्माण एवं कार्य प्रारंभ की स्थिति की प्रखंड सह अंचल व पंचायत कर्मियों के साथ विधिवत समीक्षा किया।बीडीओ ने कहा कि लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। इस अभियान को प्राथमिकता देते हुए डब्ल्यूपीयू निर्माण कार्य को शत-प्रतिशत पूर्ण कराना है। इसके साथ ही लंबित योजनाओं को त्वरित गति से कार्य करते हुए पूर्ण कराना सुनिश्चित किया जाय। डब्ल्यूपीयू निर्माण हेतु निर्धारित चिन्हित स्थलों पर कार्य शुरू नहीं कराया गया है, बीडीओ ने कर्मियों को निर्देश दिया कि जिन स्थलों पर अबतक कार्य प्रारंभ नहीं हुआ है, वहां नापी कराकर, लेआउट कराते हुए अविलंब कार्य प्रारंभ कराना सुनिश्चित किया जाय।

बीडीओ ने अंचल कार्यालय कर्मियों व राजस्व कर्मियों को लैंड इश्यू को एक सप्ताह के अंदर क्लीयर करने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने निर्देश दिया कि डब्ल्यूपीयू का निर्माण मानक के अनुरूप गुणवतापूर्ण तरीके से होना चाहिए।किसी भी प्रकार की गड़बड़ी की शिकायत प्राप्त होने पर तुरंत जांच करायी जायेगी और संबंधित कर्मी के विरूद्ध सख्त कार्रवाई की जायेगी।मौके पर अंचल लिपिक रामू कुमार, प्रधान सहायक राजीव रोशन, अंचल नजीर ब्रजेश कुमार यादव, राजस्व कर्मचारी बैजू दिवाकर, राहुल कुमार, प्रिंस कुमार, अंचल अमीन प्रियंका कुमारी, प्रीति कुमारी, पंचायत सचिव अंकित कुमार, राहुल कुमार, सौगंध कुमार मंडल, अब्दुल वासिफ अली, योगेंद्र कुमार, तकनीकी सहायक राजा बाबू, राजेश चौधरी, मंटू कुमार संजीत कुमार, पिंटू कुमार, पंचायत सचिव, स्वच्छता पर्यवेक्षक चंदन कुमार, भागेश्वर मणि तिवारी, अजय कुमार सहित तमाम कर्मी उपस्थित थें।

डॉ. सीवी रमण विश्वविद्यालय के छात्रों का कृष्णा मारुती लिमिटेड में चयन

प्रात : किरण संवाददाता

हाजीपुर। भगवानपुर स्थित डॉ० सी० वी० रमण विश्वविद्यालय के मैकेनिकल एवं इलेक्ट्रिकल विभाग के 45 छात्रों का चयन हरयाणा स्थित कृष्णा मारुती लिमिटेड में हुओ यह उत्कृष्ट चयन छात्रों की कठिन मेहनत, डॉ० सी० वी० रमण विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत उत्कृष्ट शिक्षा और विशेषज्ञता का परिणाम है।

प्रतिक कुमार, मिशाल शक्ति, ऋतिक कुमार, अमन दीप, प्रशांत सहित सभी छात्रों को नियुक्ति पत्र विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० एम० एल० गौर, कुलसचिव डॉ० ब्रिजेश सिंह, डीन छात्र कल्याण अमरीश कुमार सिंह, ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट अधिकारी संजीत कुमार एवं कृष्णा मारुती के मानव संसाधन पदाधिकारी अनुज कुमार द्वारा प्रदान किया गयो

विश्वविद्यालय कुलसचिव डॉ० ब्रिजेश सिंह ने कहा कि "हमें यह गर्व महसूस हो रहा है कि हमारे छात्रों की उत्कृष्टता और कौशल के प्रदर्शन की वजह से कृष्णा मारुति लिमिटेड में उनका चयन हुआ है। यह हमारे विश्वविद्यालय की उच्च शैक्षिक मानकों को साबित करता है और हमें गर्व महसूस होता है कि हम अपने छात्रों को उनके सपनों की दिशा में मदद कर पा रहे हैं।

हम उन सभी छात्रों को हार्दिक बधाई देते हैं जिन्होंने इस महत्वपूर्ण स्थान को हासिल किया है। उनके उज्वल भविष्य की कामना करते हैं।" ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट ऑफिसर प्रो० संजीत कुमार ने कहा कि यह हमारे लिए बहुत ही गर्व की बात है कि विगत वर्ष 55 से भी ज्यादा कंपनियां कैंपस के लिए आ चुकी है उन्होंने कहा कि सभी योग्य छात्र को हमने शत-प्रतिशत चयन भी करवाया है।

बॉर्डर-2 के साथ लौट रहे सनी देओल

कहा– 27 साल पुराने वादे को पूरा करने आ रहा हूं

बॉलीवुड एक्टर सनी देओल की 1997 में रिलीज हुई ब्लॉकबस्टर फिल्म बॉर्डर का सीक्वल आने वाला है। एक्टर और मेकर्स ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो के जरिए इसकी घोषणा की। सनी देओल की गदर 2 के बाद से उनकी बॉर्डर 2 की चर्चा जोरों पर थी। गुरुवार को, फिल्म मेकर्स ने एक स्पेशल वीडियो शेयर किया। वीडियो में केवल टेक्स्ट है, इसमें फिल्म से जुड़ा कोई विजुअल नहीं है और बैकग्राउंड में सनी देओल की आवाज सुनाई देती है। वीडियो में सनी कहते हैं, 27 साल पहले, एक फौजी ने वादा किया था कि वह वापस आएगा। उसी वादे को पूरा करने, हिंदुस्तान की मिट्टी को अपना सलाम कहने, आ रहा है फिर से..

वीडियो के आखिर में फिल्म का गाना संदेशे आते हैं सुनाई देता है, जिसे सोनू निगम ने गाया था। 1997 में रिलीज हुई बॉर्डर में सुनील शेट्टी, जैकी श्रॉफ, अक्षय खन्ना, सुदेश बेरी और पुनीत इस्सर जैसे कलाकारों ने काम किया था। इनके अलावा, कुलभूषण खरबंदा, तब्बू, राखी, पूजा भट्ट और शरबानी मुखर्जी जैसे सहायक कलाकार भी थे। फिल्म में लोंगेवाला की लड़ाई को काल्पनिक तरीके से दिखाया गया था। फिल्म में अनु मलिक ने म्यूजिक दिया था और जावेद अख्तर ने गाने लिखे थे। यह फिल्म भारत की वॉर फिल्मों की लिस्ट में सबसे ऊपर रही। खबर है कि 1997 में बॉर्डर को डायरेक्ट करने वाले जे.पी.दत्ता बॉर्डर-2 को प्रोड्यूस करेंगे। वहीं उनकी बेटी निधी दत्ता, भूषण कुमार और कृष्ण कुमार को-प्रोड्यूसर होंगे। इसका निर्देशन अनुराग सिंह करेंगे। फिल्म में सनी देओल मेजर कुलदीप सिंह चंदपुरी के रोल में ही दिखाई देंगे। वहीं आयुष्मान खुराना भी लीड रोल में नजर आ सकते हैं। हालांकि अभी इन सभी खबरों की पुष्टि नहीं है।

राजनीति की तुलना में अभिनय आसान...

कंगना रणौत ने एक सफल अभिनय करियर के बाद अब राजनीति का रुख किया है और हाल ही में हिमाचल प्रदेश के मंडी निर्वाचन क्षेत्र से आम चुनाव जीता है। अभिनेत्री से सांसद बनीं कंगना ने हाल ही में बताया कि कैसे उनकी पहली फिल्म गैंगस्टर के बाद उनसे राजनीति में शामिल होने के लिए संपर्क किया गया था और कैसे वह एक सांसद के रूप में अपने कर्तव्यों के साथ फिल्मों में अपने काम को संतुलित करने की योजना बना रही हैं। एक हालिया इंटरव्यू में कंगना ने खुलासा किया कि उनके परिवार के विभिन्न सदस्यों से पहले स्थानीय राजनीतिक नेताओं द्वारा संपर्क किया गया है। अभिनेत्री के अनुसार, यह पहली बार नहीं है जब मुझसे राजनीति में शामिल होने के लिए संपर्क किया गया, मुझे पहले भी कई अन्य प्रस्ताव मिले हैं। गैंगस्टर के तुरंत बाद, मुझे टिकट की पेशकश की गई। मेरे परदादा कम से कम तीन बार विधायक रहे।

असल जिंदगी में मैं मिर्जापुर के गुड्डू पंडित से बहुत अलग हूं: अली फजल

वेब सीरीज मिर्जापुर के सीजन 3 का हर कोई बेसब्री से इंतजार कर रहा है। इस बीच एक्टर अली फजल ने बताया है कि उन्होंने अपने किरदार गुड्डू पंडित को पहले एनालिटिकल तरीके से समझने की कोशिश की। यह उनके असल जिंदगी से बहुत अलग है। मिर्जापुर 3 में अली फजल, पंकज त्रिपाठी, श्वेता त्रिपाठी शर्मा, रसिका दुगल, विजय वर्मा, हर्षिता गौर, अंजुम शर्मा, प्रियांशु पेनयुली और ईशा तलवार जैसे कई कलाकार नजर आएंगे।

शो में अपने किरदार के बारे में बात करते हुए अली ने कहा, मुझे लगता है कि यह फॉर्मेट मेरी लाइफ और परफॉर्मेंस का अहम हिस्सा बन गया है, क्योंकि यह एक ऐसी जगह है जहां लोग पूरी जर्नी को ट्रैक करते हैं, जिन्होंने सीजन 1, सीजन 2 देखा है, वह सीजन 3 की कहानी को आसानी से समझ पाएंगे। मुझे नहीं पता कि सीजन 3 में क्या है, लेकिन मैंने इसमें एक ऐसे लड़के के ग्राफ को जस्टिफाई किया है, जो अपने आस-पास इतने भ्रष्टाचार के बावजूद अपनी मासूमियत को बनाए रखता है। उन्होंने आगे कहा, सीरीज की कहानी में एक ऐसी दुनिया है, एक ऐसा कैरेक्टर है जिससे मैं जुड़ा हुआ नहीं हूं, लेकिन मैंने इसे एनालिटिकल तरीके से समझने की कोशिश की है। मैंने उनके लिखने के तरीके, उनके सोचने के तरीके और उन क्षेत्रों में लोगों के साथ उनके बर्ताव को लेकर स्टडी की। और निश्चित रूप से, उन्हें किसी भी अंदाज में बताया जा सकता है।

अली के कहा कि गुड्डू एक बॉडीबिल्डर है और इस किरदार के साथ पागलपन से जुड़ा हुआ है। चुनौतियों के बारे में बात करते हुए अली ने कहा, मेरे लिए सबसे बड़ी चुनौती खुद को असल जिंदगी में इस किरदार से दूर रखने और कैरेक्टर को बिना जज किए निभाने की थी। दस-एपिसोड की मिर्जापुर 3 का प्रीमियर 5 जुलाई से प्राइम वीडियो पर होगा। मिर्जापुर का पहला सीजन 2018 में रिलीज हुआ था, जबकि दूसरा सीजन 2020 में जारी किया गया था। दिव्येंदु शर्मा, विक्रांत मैसी और श्रिया पिलगांवकर जैसे कलाकार इस शो के पिछले सीजन का हिस्सा रह चुके हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय शो द टुनाइट शो का हिस्सा होंगे दिलजीत दोसांझ, हासिल किया एक और मुकाम

कुछ समय पूर्व इम्तियाज अली की फिल्म चमकीला में अपने अभिनय से दर्शकों को रोमांचित करने वाले पंजाबी सिंगर और हिन्दी फिल्मों के लोकप्रिय अभिनेता दिलजीत दोसांझ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय मनोरंजन दुनिया को एक नए स्तर पर ले जाने वाले हैं। प्राप्त समाचारों के अनुसार दिलजीत दोसांझ जल्द ही एक अंतरराष्ट्रीय मंच पर नजर आने वाले हैं, जिससे उनकी पॉपुलैरिटी सातवें आसमान पर जाने वाली है। दिलजीत दोसांझ ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर जानकारी दी है कि वह जल्द ही जिमी फॉलन के बेहद लोकप्रिय अंतरराष्ट्रीय शो 'द टुनाइट शो' पर शिरकत करेंगे। यह शो दिलजीत के फैंस के लिए एक बड़ी खबर है और इससे उनकी अंतरराष्ट्रीय पहचान में जबरदस्त बढ़ोतरी होगी। दिलजीत दोसांझ जल्द ही अपनी आगामी पंजाबी फिल्म 'जट्ट एंड जूलियट 3' में नजर आने वाले हैं। इस फिल्म में वह नीरू बाजवा के साथ मुख्य भूमिका में होंगे। यह फिल्म लोकप्रिय 'जट्ट एंड जूलियट' फ्रेंचाइजी की तीसरी कड़ी है और इसका निर्देशन जगदीप सिद्धू ने किया है। फिल्म 28 जून, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वालीहै।

दिलजीत दोसांझ ने हाल ही में इम्तियाज अली की फिल्म 'चमकीला' में अपने दमदार अभिनय से सभी का दिल जीता। इस फिल्म में उनके किरदार को काफी सराहना मिली और इसे दर्शकों और आलोचकों द्वारा खूब पसंद किया गया। दिलजीत ने अपने अभिनय की विविधता को एक बार फिर से साबित किया है और अपनी पहचान को और मजबूत किया है। दिलजीत दोसांझ का सफर एक बेहतरीन गायक से एक सफल अभिनेता तक का रहा है। उनकी मेहनत और प्रतिभा ने उन्हें आज इस मुकाम पर पहुंचाया है कि वह अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी अपनी पहचान बना रहे हैं।

मालूम हो कि पिछले सप्ताह बॉम्बे उच्च न्यायालय ने अन्नू कपूर की फिल्म की समीक्षा के लिए मुस्लिम समुदाय से एक व्यक्ति सहित स्वतंत्र व्यक्तियों की तीन सदस्यीय समिति के गठन का निर्देश दिया था।

सुप्रीम कोर्ट का आदेश

बॉम्बे हाईकोर्ट में याचिका के निपटारे तक हमारे बारह की रिलीज पर रोक

सुप्रीम कोर्ट ने अन्नू कपूर की फिल्म हमारे बारह की रिलीज पर रोक लगा दी है। 7 जून को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली यह फिल्म अपनी बोल्ड कहानी और जनसंख्या वृद्धि के मुद्दे को दर्शाने के लिए विवादों में घिर गई है। कथित तौर पर इसमें कुरान की आयतों को तोड़-मरोड़ कर जनसंख्या वृद्धि के लिए मुसलमानों को दोषी ठहराने वाली कहानी का प्रचार किया गया है। सांप्रदायिक तनाव को रोकने के लिए देश के कई हिस्सों में फिल्म पर प्रतिबंध भी लगाया गया है। रिलीज पर रोक लगने के बाद मेकर्स की मुश्किलें भी बढ़ गई हैं।

हमारे बारह के मेकर्स की बढ़ी चिंता

सुप्रीम कोर्ट ने फिल्म के रिलीज पर तब तक के लिए रोक लगा दी जब तक कि बॉम्बे हाई कोर्ट फिल्म में आपत्तिजनक दृश्यों के संबंध में मामले की सुनवाई और निपटारा नहीं कर देता। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा, उच्च न्यायालय के समक्ष याचिका के निपटारे तक, संबंधित फिल्म का प्रदर्शन स्थगित रहेगा।

बॉम्बे उच्च न्यायालय ने लिया था यह फैसला

मालूम हो कि पिछले सप्ताह बॉम्बे उच्च न्यायालय ने अन्नू कपूर की फिल्म की समीक्षा के लिए मुस्लिम समुदाय से एक व्यक्ति सहित स्वतंत्र व्यक्तियों की तीन सदस्यीय समिति के गठन का निर्देश दिया था। कोर्ट ने फिल्म की रिलीज पर लगी रोक हटा दी थी और निर्माताओं को सोशल मीडिया से ट्रेलर हटाने का निर्देश दिया था। फिल्म की रिलीज 14 जून तक टाल दी गई थी।

फिल्म मेकर्स की मिली थीं यह धमकियां

बता दें कि इससे पहले अन्नू कपूर ने अपनी आगामी फिल्म के कलाकारों और चालक दल को सोशल मीडिया पर बलात्कार और मौत की धमकियां मिलने के बाद मुंबई पुलिस से सुरक्षा का अनुरोध किया था।

अभिनेता ने एक वीडियो में कहा, फिल्म महिला सशक्तिकरण की वकालत करती है और महिलाओं के अधिकारों की बात करती है। पहले फिल्म देखें और फिर अपना फैसला दें। लोगों को सोशल मीडिया पर अपनी बात कहने की आजादी है, लेकिन उन्हें गाली नहीं देनी चाहिए। गाली न दें या जान से मारने की धमकी न दें। हम इन चीजों से नहीं डरेंगे।

शादी के डायरेक्टर करण और जौहर फिल्म के मेकर्स पर लगाया आरोप, की बैन की मांग

बॉम्बे हाई कोर्ट पहुंचे करण जौहर

बॉलीवुड फिल्ममेकर करण जौहर ने शुक्रवार को रिलीज होने वाली फिल्म शादी के डायरेक्टर करण और जौहर के मेकर्स के खिलाफ बॉम्बे हाई कोर्ट में मुकदमा दायर किया है, जिसमें फिल्म के टाइटल में उनके नाम के इस्तेमाल को रोकने की मांग की गई है। करण जौहर ने मुकदमे के लंबित रहने के दौरान फिल्म की रिलीज पर रोक लगाने की तत्काल राहत की मांग करते हुए आवेदन भी दायर किया है। फिल्म के टाइटल में करण जौहर के नाम का इस्तेमाल करके, मेकर्स बड़े पैमाने पर जनता के मन में भ्रम पैदा कर रहे हैं कि ये फिल्म उनके साथ जुड़ी हुई है। आम जनता तुरंत इससे कनेक्ट कर लेगी। करण को इस फिल्म के टाइटल के बारे में पता चलने पर ही इसमें एक्शन लिया गया।

करण जौहर ने अपने मुकदमे में दावा किया है कि उनका फिल्म से कोई संबंध नहीं है और मेकर्स गैरकानूनी तरीके से उनके नाम का इस्तेमाल कर रहे हैं।

विजय वर्मा स्टारर मटका किंग की शूटिंग शुरू

इन दिनों विजय वर्मा स्टारर क्राइम थ्रिलर मटका किंग की काफी चर्चा है। फैंस इस सीरीज का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। इस बीच मेकर्स ने एक बड़ा अपडेट जारी किया है। मेकर्स ने एक्टर का नया पोस्टर शेयर करते हुए बताया कि सीरीज की शूटिंग शुरू हो चुकी है। पोस्टर में विजय 90 के दशक के अवतार में नजर आ रहे हैं। उन्होंने व्हाइट शर्ट पहनी हुई है, और ताश के साथ खेलते हुए दिख रहे हैं। पोस्टर को शेयर करते हुए मेकर्स ने कैप्शन में लिखा, शर्त लगाने के लिए तैयार! मटका किंग जल्द ही, लेकिन अभी शूटिंग शुरू। मटका किंग की कहानी 1960 के दशक की है, जिसमें एक कपास व्यापारी मटका नामक एक नया जुआ खेल शुरू करता है। यह खेल शहर में तूफान मचा देता है। यह खेल पहले सिर्फ अमीरों और अभिजात वर्ग के लिए आरक्षित था, लेकिन अब हर वर्ग के लोग जुड़ जाते हैं। इस सीरीज में कृतिका कामरा, सई ताम्हणकर, गुलशन ग्रोवर और सिद्धार्थ जाधव जैसे कलाकार शामिल हैं। रॉय कपूर फिल्म्स के बैनर तले सिद्धार्थ रॉय कपूर और नागराज मंजुले के साथ गार्गी कुलकर्णी, आशीष आर्यन और अश्विनी सिद्वानी द्वारा निर्मित इस सीरीज का निर्देशन नागराज ने किया है और मंजुले के साथ अभय कोरानने ने इसे लिखा है।

संक्षिप्त खबरें

घरेलू गैस सिलेंडर के व्यवसायिक इस्तेमाल के खिलाफ छापेमारी

हाजीपुर।हाजीपुर के एसडीएम श्री रामबाबू बैठा के निर्देश पर आज बिदुपुर में घरेलू गैस सिलेंडर के व्यवसायिक इस्तेमाल के खिलाफ छापेमारी अभियान चलाया गया। प्रखंड स्तरीय छापेमारी टीम में बिदुपुर के प्रखंड विकास पदाधिकारी, प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी तथा प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी शामिल थे। विदुपुर बाजार में विभिन्न दुकानों और प्रतिष्ठानों खासकर होटल और ढाबा आदि में घरेलू गैस सिलेंडर के अवैध व्यवसायिक उपयोग केखिलाफ छापामारी अभियान चलाया गया। हालांकि सभी दुकानों में व्यावसायिक गैस सिलेंडर पाया गया। एसडीएम ,हाजीपुर ने बताया कि इस अभियान को लगातार चलाया जाएगा।

मारपीट के विवाद में 15 पर मुकदमा

बेतिया।पुरुषोत्तमपुर थाना के पुरुषोत्तमपुर गांव में बातों-बातों के विवाद में कुल 15 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गईहै. थानाध्यक्ष संजीव कुमार ने बताया कि रेहाना खातून के आवेदन पर पांच लोग पर केस दर्ज की गई है. जबकि दूसरे पक्ष के रबेशुन नेशा के आवेदन पर दस लोगों के खिलाफ केस दर्ज कर पुलिस मामले की छानबीन शुरू कर दी है।

केस दर्ज

बेतिया।पुरुषोत्तमपुर थाना के मधुरी गांव में आपसी विवाद में एफआईआर दर्ज की गई है. थानाध्यक्ष संजीव कुमार ने बताया कि मोहम्मद एमामुल ने आवेदन देकर बताया है कि मैं अपने जेनरल स्टोर की दुकान में बैठा था तभी धर्मेंद्र कुमार उर्फ मुखिया आकर वेवजह मुझसे विवाद करने लगा. थानाध्यक्ष ने बताया कि एफआईआर दर्ज कर पुलिस मामले की छानबीन शुरू कर दी है।

14 वर्षीय लापता लड़की की खोज में जुटी पुलिस

संग्रामपुर (मुंगेर)।संग्रामपुर नगर पंचायत श्रेत्र अंतर्गत झिकुली गांव निवासी शंभू साह ने संग्रामपुर थाना को एक आवेदन पत्र देकर अपने 14 वर्षीय नतनी का लापता होने को लेकर संग्रामपुर थाना को आवेदन दिया।थाना को दिए आवेदन में कहा कि 9 जून से मेरी नतनी गायब है।सभी जगह एवं रिश्तेदारों के यहां काफी खोजबीन करने पर जब नही मिला तो गुरुवार को संग्रामपुर थाना को आवेदन दिया गया।इधर थानाध्यक्ष रुबी कांत कच्छप ने शंभू शाह के आवेदन पर थाना में प्राथमिकी दर्ज की है। पुलिस निवालिक बच्ची की खोजबीन में जूट गयी।

अवैध बालू लदा ट्रैक्टर जब्त , प्राथमिकी दर्ज

संग्रामपुर (मुंगेर)।थाना क्षेत्र अंतर्गत केन्दुआ गांव के समीप अवैध बालू लदा एक ट्रैक्टर को संग्रामपुर पुलिस ने जब्त कर थाना लाया। थानाध्यक्ष रुविवकांत कच्छप ने बताया कि अवैध बालू लदा जब्त किया ट्रेक्टर एवं चालक के उपर खनन अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज कर ली गयी है।

अज्ञात वाहन ने कबाड़ी विक्रेता को मारी ठोकर , मौत

एकमा।मांझी बरौली पथ के हंसराजपुर गांव स्थित पेट्रोल पंप के समीप एक कबाड़ी विक्रेता को अज्ञात वाहन ने ठोकर मारकर फरार हो गई। जहां अधिक चोट लगने के कारण घायल कि मौत घटनास्थल पर ही मौत हो गई। घटना कि जानकारी मिलते ही स्थानीय थाना पुलिस ने दल बल के साथ पहुंचकर शव को अपने कब्जे लेकर पोस्टमार्टम के लिए छपरा भेज दिया। मृतक कि पहचान थाना क्षेत्र के भुईली गांव निवासी रामदयाल गुप्ता का 45 वषिय पुत्र प्रदीप गुप्ता के रूप में हुई है।

दलान में लगी अचानक हजारों का सामान जलकर हुआ राख

परसा।प्रखंड के माड़र पंचायत के माड़र गाव में गुरुवार की दोपहर दलान में अचानक आग लग गई।जिसमे रखे चौकी बर्तन कपड़ा खो इत्यादि सामान जकर राख हो गया.इस संबंध में अग्निपीड़ित माड़र गाव निवासी बिरेन्द्र राय लालबाबू सोखी राय ने बताया कि गुरुवार की दोपहर अचानक दलान में आग लग गया.जिसमे रखे चौकी बर्तन कपड़ा व खोप इत्यादि सामान जलकर राख हो गया.ग्रामीणों के ग्रामीणों द्वारा लोटा बाल्टी मोटर पम्पिंग सेट इत्यादि के सहयोग से घंटे मशक्कत करने के बाद आग पर काबू पाया गया आग पर जब तक काबू पाया जाता तब तक सारे सामान जल करें राख हो गया।

जिला पदाधिकारी अवनीश कुमार सिंह ने किया समीक्षा श्रावणी मेला तैयारी को युद्धस्तर पर करने का निर्देश

प्रात : किरण ब्यूरो

मुंगेर। श्रावणी मेला 2024 की तैयारी की समीक्षा बैठक बुधवार को समाहरणालय में जिलाधिकारी अवनीश कुमार सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में श्रावणी मेला के दौरान मुंगेर जिले में पड़ने वाले 26 किलोमीटर कावंरिया पथ में चलने वाले तैयारियों को प्रारंभ करने और कार्य को युद्धस्तर पर करने का निर्देश दिया गया। इस अवसर पर उप विकास आयुक्त अजीत कुमार सिंह, सदर अनुमंडल पदाधिकारी तारापुर राकेश कुमार, विशेष कार्य पदाधिकारी अभिषेक कुमार सहित अन्य विभागीय पदाधिकारी उपस्थित थे। जिलाधिकारी ने कहा कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्रावणी मेला में कांवरियों के लिए सभी प्रकार की व्यवस्थाएं रहेंगी। कांवरियों के लिए बने कच्ची मार्ग में बालू बिछाने तथा उस पर जल छिड़काव के लिए संबंधित पदाधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि बालू बिछाने के पश्चात पानी का छिड़काव नियमित होता रहे, इसकी जांच करते रहेंगे, ताकि कांवरियों को किसी भी प्रकार की कोई परेशानी न हो। साथ ही कांवरिया मार्ग में विद्युत एवं जलापूर्ति की भी समुचित व्यवस्था करने का निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिया। उन्होंने कहा कि एक माह तक चलने वाले इस मेले में कांवरियों के सुरक्षा से लेकर चिकित्सा तक की समुचित व्यवस्था रहेगी। कंट्रोल रूम एवं सूचना केंद्र एक ही भवन में स्थापित करने का निर्देश दिया, ताकि कांवरियों को अलग अलग जगह जाने की जरूरत न पड़े। साथ ही चिकित्सा शिविर एवं पुलिस टीम के लिए भी एक ही भवन में व्यवस्था की जाएगी। इसके अलावे कांवरिया मार्ग में निर्बाध रूप से बिजली आपूर्ति का निर्देश दिया। कांवरिया मार्ग में पड़ने वाले सभी धर्मशालाओं के रंग-रोगन, मरम्मती आदि करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि कार्य प्रारंभ कर दें तथा युद्धस्तर पर कार्य कराएं, ताकि 25 जून तक उसका निरीक्षण कर कार्य की प्रगति की जांच की जा सके। उन्होंने धर्मशालाओं में भी विद्युत की निर्बाध आपूर्ति का निर्देश दिया। वहीं कांवरिया मार्ग में कांवरियों के लिए पेय जलापूर्ति के साथ ही चापानल, बोरिंग लगाने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि जगह जगह कांवरियों के स्नान, शौचालय आदि की भी समुचित व्यवस्था करें। साथ ही कांवरिया मार्ग में अवैध रूप से अतिक्रमण करने वाले दुकानदारों को हिदायत दें तथा मानक के अनुरूप ही दुकान लगाने के लिए माइकिंग कराने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि मेले के दौरान जितने भी भोजन एवं अन्य खाद्य पदार्थों के लिए दुकानें लगायी जाएंगी, उनके द्वारा खाद्य सामग्री से संबंधित मूल्य तालिका भी स्पष्ट शब्दों में अपने अपने प्रतिष्ठानों में लगाएं, ताकि कांवरियों को किसी प्रकार की कोई परेशानी या ठगी नहीं की जाए। पर्यटन विभाग द्वारा लगाए जाने वाले टेंट सिटी में भी सुरक्षा व्यवस्था एवं विद्युत आदि की भी व्यवस्था करने का निर्देश दिया। इसके अलावे मार्ग में मादक एवं नशीली पदार्थों की बिक्री पर रोक लगाने हेतु पुलिस टीम द्वारा लगातार निगरानी एवं सुरक्षा व्यवस्था हेतु लगातार गश्ती करने का निर्देश दिया। सभी धर्मशालाओं, सूचना केंद्र,

टेंट सिटी आदि जगहों पर सीसीटीवी कैमरे के संस्थापन का भी जिलाधिकारी ने निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि श्रावणी मेला की तैयारी युद्धस्तर पर प्रारंभ कर दें तथा कार्य में किसी भी प्रकार की कोई लापरवाही न बरतें जिससे कांवरियों को किसी प्रकार की परेशानियों का सामना करना ना पड़े।

गंगा नदी के जल के सहारे करना पड़ रहा है जीवन यापन

प्रात : किरण संवाददाता

बरियारपुर (मुंगेर) बरियारपुर प्रखंड के करहरिया पुर्वी पंचायत के वार्ड संख्या 5 के लोगों को तीन किलोमीटर दूर गंगा नदी के जल के सहारे जीवन यापन करना पड रहा हैं । करहरिया पूर्वी पंचायत के वार्ड संख्या 05 के निवासी खास कर खेतीहर मजदुरी कर अपने परिवार वालों का जीवन यापन करते हैं। लेकिन बिहार सरकार के द्वारा सात निश्चय योजना को धरातल पर नहीं आने से यहां के ग्रामीणों को शुद्ध पेयजल योजना के लाभ से वंचित रहना पड़ रहा है।पंचायत के मुखिया नन्दलाल मंडल द्वारा पहले आनाकानी कर योजनाओं के लाभ से वंचित रखा गया है। यहां के लोगों को दो भागों मे वांट कर सरकारी लाभ से वंचित रखने का शुरूआत कर दिया गया है। एक भाग से दुसरे भाग की दुरी लगभग तीन से चार किलोमीटर तय कर जन प्रतिनिधियों को जाना आना पड़ता है। प्रथम भाग के अधिकतर आबादी गंगा नदी के कटाव से विस्थापित होकर अपने मेहनत मजदुरी कर जीवन यापन कर रहे हैं। वही दुसरे भाग मे अधिकांश आबादी महादलित समुदाय के है जहां पेयजल के नाम पर गॉव के पुरब भाग मे आदम युग निर्मित कुआं के सहारे जीवन यापन करते आ रहे हैं। इधर राज्य सरकार ने एक विद्यालय के स्वीकृति प्रदान किया है। जहाँ दो पंचायत शिक्षिका प्रतिनियुक्त है। पंचायत के ग्रामीणों का आरोप है कि पंचायत शिक्षिका यदा कदा विद्यालय आते है या नही भी आते है। दोनो शिक्षिकाऐ बच्चों को पढ़ाना नहीं चाहती है। इस पंचायत के विद्यालयों मे पढ़ाई-लिखाई नहीं होने से अधिकतर ग्रामीण बच्चे विद्यालय नहीं जाते हैं। ग्रामीणों ने बताया कि विद्यालय के प्रधान और शिक्षकों के द्वारा ग्रामीण बच्चों को पढ़ाई लिखाई नहीं कराने से क्षेत्र में ज्योति नही जल पा रहा है।

प्रबंधक के सम्मान मे विदाई समारोह आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

दाउदनगर (औरंगाबाद)। इंडियन बैंक दाउदनगर मे प्रबंधक कुलदीप कुमार के सम्मान मे विदाई समारोह तेजपुरा के पैक्स अध्यक्ष रंजन कुमार की अध्यक्षता मे आयोजित की गई,इस मौके पर उपस्थित लोगो ने स्थानातारित प्रबंधक कुलदीप कुमार का किए गए कार्यों की सराहना की,सबों ने कहा की ,इनके रहते ,बैंको का कार्य मे प्रगति हुआ,और जिसके फलस्वरूप बैंक के डिपोजिट कार्यो मे भी वृद्धि हुई,पैक्स अध्यक्ष रंजन कुमार ने कहा की,बैंको मे सभी बैंक कर्मी के साथ ग्राहकों से मधुर संबंध रहा ,जिसके परिणाम स्वरूप बैंको का कार्य बेहतर हुआ,कहा की जहा भी जाए,वहा स्वस्थ रहने की कामना भगवान से करता हु,इस मौके पर नए प्रबंधक नवीन कुमार को भी सम्मान समारोह आयोजित की गई, बैंक कर्मी रौशन कुमार निखिलदेव राज रोबिन राजा ने भी स्थानांतरित प्रबंधक कुलदीप कुमार को भूरी भूरी प्रशंसा की,कहा की इनकी कमी हम सबों को खलेगी,निवर्तमान प्रबंधक कुलदीप कुमार ने भी सबों को सहयोग के लिए धन्यवाद दिया,नए प्रबंधक नवीन कुमार ने भी सबों कहा की बैंक बेहतर कार्य करने के प्रति दृढ़ संकल्पित रहूंगा,इस मौके पर ललन प्रसाद सुरेंद्र सिंह सिपाही मुरारी कमलेश कुमार समेत बड़ी संख्या मे ग्रामीण उपस्थित थे।

एन एच 139 को फोरलेन एवं औरंगाबाद शहर भखरुआं चौक एवं अंबा चौक पर फ्लाई ओवर की मांग

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। औरंगाबाद जिले के एन एच 139 जो झारखंड राज्य के सीमा हरिहरगंज से लेकर अरवल सीमा होते हुए बिहार की राजधानी पटना को जोड़ती है उसे फोरलेन बनाने की कवायद वर्षो से चल रही है। इस संदर्भ में औरंगाबाद जिला परिषद के पूर्व अध्यक्ष राघवेंद्र प्रताप नारायण सिंह ने भारत सरकार के माननीय मंत्री सड़क एवं परिवहन विभाग के नितिन गडकरी जी से मांग किया है कि इस योजना को समय रहते यदि गति दे दिया जाए तो राजधानी पटना की दूरी तय करने में औरंगाबाद सहित चार-पांच जिला के लोगों के लिए अत्यंत सुगम हो जाएगा।साथ ही साथ एक अन्य मांग के संदर्भ में ऐतिहासिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोण से अति महत्वपूर्ण जिला औरंगाबाद की आबादी पहले की अपेक्षा काफी बढ़ गई है गांधी मैदान से रमेश चौक,ओवर ब्रिज बाईपास या फिर रमेश चौक से महाराणा प्रताप चौक आने जाने में कभी-कभी अत्यधिक जाम लग जाती है। घंटो जाम लगने के कारण प्रदूषण भी बढ़ जाती है ऐसी स्थिति में गांधी मैदान से रमेश चौक तक फ्लाई ओवर का निर्माण किया जाए। दूसरी ओर दाउदनगर के भखरुआं चौक पर भी ऐसे ही जाम की स्थिति बनी रहती है। राष्ट्रीय राजमार्ग होने के कारण जाम लगने से गाड़ियों की लंबी कतारें लग जाती है।आमजन को अत्यधिक समस्या का सामना करना पड़ता है उस स्थान पर भी एक फ्लाई ओवर का निर्माण किया जाए। औरंगाबाद से 18 किलोमीटर पीछे अंबा के पास भी कुछ इसी तरह की समस्या है वहां भी फ्लाई ओवर यदि बना दिया जाए तो समस्या का निदान हो सकता है। पूर्व अध्यक्ष ने इसके लिए औरंगाबाद की जनता की तरफ से इन मांगों को माननीय मंत्री को एक पत्र प्रेषित किया है।

मुंगेर में खुले देश का बयालीसवां एवं बिहार का दूसरा आयुध कारखाना : केशरी

प्रात : किरण ब्यूरो

मुंगेर। खूंखार आतंकियों, उग्रवादियों, नक्सलियों एवं अपराधियों के लिए अवैध हथियार बनाने वाले हुनरमंद मुंगेरिया कारीगरों को मुख्यधारा में शामिल करते हुए अगर इनसे देश के लिए हथियार बनवाया जाए तो हमारा देश अत्याधुनिक हथियारों का सबसे बड़ा निर्यातक देश बन सकता है। उपर्युक्त बातें जनाधिकार मोर्चा के संस्थापक अध्यक्ष संजय केशरी ने कंपनी गार्डेन बागवान में आयोजित सम-सामयिक विचार-गोष्ठी का अध्यक्षता करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि बिना उचित प्रशिक्षण के पूर्णतः भय के माहौल में मात्र छेनी-हथौड़ी और भट्ठी से हथियार बनाने वाले अवैध हथियारों के मुंगेरिया कारीगर इतने हुनरमंद हैं कि वो मात्र फोटो देखकर ही किसी भी अत्याधुनिक हथियारों को हु-ब-हु बना सकते हैं। इन्हें मुख्यधारा में शामिल कर उचित प्रशिक्षण देकर तथा अत्याधुनिक मशीन उपलब्ध कराते हुए सरकारी सेवक का दर्जा देते हुए इनसे भारतीय सेना, अर्धसैनिक बल और पुलिस के लिए हथियार बनवाना चाहिए। इसके लिए मुंगेर में देश का बयालीसवां एव बिहार का दूसरा आयुध कारखाना मुंगेर में स्थापित कराया जाना जनहित, मुंगेरहित, बिहारहित एवं राष्ट्रहित में अत्यावश्यक हो गया है। बंदूक कारखाना के पूर्व हुनरमंद कारीगर आजाद शर्मा ने कहा कि सरकार की गलत नीतियों के कारण हमलोगों की प्रतिभा दम तोड़ रही है और हम चाहकर भी देश के लिए कुछ नहीं कर पा रहे हैं।

जमीनी विवाद में हुई मारपीट में सुनाई गई सजा

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। व्यवहार न्यायालय औरंगाबाद में प्रथम श्रेणी न्यायिक दंडाधिकारी निधि जयसवाल ने कासमा थाना कांड संख्या 08/11 में निर्णय पर सुनवाई करते हुए एकमात्र अभियुक्त मो गुफरान मियां बिगहा कासमा को सजा सुनाई है।

अनुमंडलीय अभियोजन पदाधिकारी विकास कुमार ने बताया कि अभियुक्त मो गुफरान को भादंवि धारा 341 में एक माह की सजा हुई। धारा 324 में दो साल की सजा हुई और धारा 323 में एक साल की सजा सुनाई गई है तथा अभियुक्त द्वारा पीड़ित को पांच हजार देने को आदेश दिया गया है। राशि न देने पर अभियुक्त को तीन माह अतिरिक्त साधारण कारावास होगी। अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि प्राथमिकी सूचक नबु मियां मियां बिगहा कासमा ने 04 मार्च 11 को प्राथमिकी दर्ज कराई थी, जिसमें कहा था कि जमीनी विवाद में विवादित खेत में खेसारी काटने को लेकर अभियुक्त ने सूचक और उसके मजदुरो पर हमला कर घायल कर दिया, तो सूचक ने सरकारी अस्पताल में इलाज कराई थी। तेरह साल बाद आज सजा सुनाई गई है। अधिवक्ता ने आगे बताया कि आपको मालूम कि देश में तीन नये कानून जूलाई से लागू हो रही है उसमें दर्ज प्राथमिकी में अत्याधुनिक तकनीक डिजिटल विधि से अनुसंधान, गवाही और हर प्रोसेस के निश्चित समयावधि के कारण तेजी से वादों का निष्पादन किया जाएगा जो न्यायालय के क्षेत्र में बहुत बड़ा चमत्कार होगा और लम्बित मामलों की भारी कमी आएगी।

बकरीद का पर्व आपसी भाईचारे के माहौल में मनाए सीओ

एकमा। बकरीद पर्व को लेकर स्थानीय थाना परिसर में सीओ राहुल शंकर की अध्यक्षता में समाजसेवी जनप्रतिनिधियों सहित दोनों समुदाय के लोगों के बीच बैठक हुई। बैठक को संबोधित करते हुए सीओ ने कहा कि आगामी 17 जून को बकरीद का पर्व वापसी भाईचारे के माहौल में मनाए । कहीं भी कोई अगर गड़बड़ी फैलाने का प्रयास करता है तो इसकी सूचना अभिलंब प्रशासन को दे । इस मौके पर थाना अध्यक्ष उदय कुमार मुखिया प्रतिनिधि श्याम किशोर तिवारी बच्चा सिंह पवन कुमार अहमद अली उर्फ नेताजी भाजपा जिला उपाध्यक्ष चैतेन्दर नाथ सिंह वार्ड पार्षद जितेंद्र सिंह शैलेंद्र सिंह जयप्रकाश शर्मा मूलजी मांसाहारी सुरेश राय विजय सिंह चितरंजन सिंह प्रमोद सिंह मोहम्मद इकबाल हुसैन कुरान दिन अंसारी आदि काफी संख्या हम लोग उपस्थित थे ।

13 जुलाई, 2024 को होगा राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

मोतिहारी। जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री देवराज त्रिपाठी के निदेश के आलोक में अपर मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी-सह-सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार, पूर्वी चम्पारण राजेश कुमार दुबे की अध्यक्षता उनके कार्यालय कक्ष में आगामी 13 जुलाई को होने वाले राष्ट्रीय लोक अदालत को सफल बानने के लिए जिला प्रशासन के विभिन्न पदाधिकारियों के साथ बैठक की गई। सचिव डालसा राजेश कुमार दुबे ने बताया कि बिहार राज्य बिधिक सेवा प्राधिकार पटना के निदेर्शानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकार पूर्वी चम्पारण, मोतिहारी के तत्वाधान में दिनांक 13.07.2024 को पूर्वाह्न 10:30 बजे से राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन व्यवहार न्यायालय परिसर मोतिहारी में किया जायेगा, जिसमें सुलहनीय वादों का निष्पादन आपसी समझौते के आधार पर किया जायेगा। सुलहनीय वादों यथा आपराधिक मामले दिवानी मामले, दुर्घटना बीमा दावा, पारिवारिक विवाद, श्रम विवाद, भू-अधिग्रहण, राजस्व बिजली पानी एवं अन्य विपत्र से संबंधित एनआई एक्ट 138 के अन्तर्गत दर्ज केस, बैंक ऋण, कर्मचारियें के वेतन एवं पेंशन से संबंधित विवादित मामलों का निपटारा सुलह- समाझौते के आधार पर किया जायेगा। संबंधित पक्षकार इस अवसर का लाभ उठाते हुए अपने विवादों को राष्ट्रीय लोक अदालत में बिना खर्च बिलकुल मुफ्त में तत्काल समाप्त करा सकते हैं। उन्होंने कहा कि सभी विभागीय पदाधिकारी ऐसे सभी मामलों को राष्ट्रीय लोक अदालत में लाये ताकि इसका निःशुल्क समाधान किया जा सके। पदाधिकारी आपस में समन्वय बनाकर एवं लक्ष्य निर्धारित कर कार्य करेंगे तो अधिक से अधिक वादो को सुलह कराने में सहुलियत रहेगी। बैठक में सचिव डालसा के साथ प्रभारी पदाधिकारी, सर्टिफिकेट ऑफिसर, विधि शाखा, श्रम अधीक्षक, जिला जनसम्पर्क पदाधिकारी, वन प्रमण्डल पदाधिकारी, वाट एवं माप पदाधिकारी सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

सर्वाधिक 39 बार रक्तदान करने वाले रक्तवीर सल्लू खान को किया गया सम्मानित

औरंगाबाद। विश्व रेडक्रॉस दिवस पर शहर के रेडक्रॉस भवन के सभागार में एक कार्यक्रम आयोजित कर स्वैच्छिक रक्तदान शिविर एवं रक्तवीर सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया। सम्मान कार्यक्रम में सर्वाधिक 39 बार रक्तदान करने वाले रक्तवीर एवं पैगाम ए इंसानियत मुस्लिम समुदाय के जिलाध्यक्ष शाहनवाज खान उर्फ सल्लू खान को सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें रेडक्रॉस के चेयरमैन सतीश कुमार सिंह के द्वारा दिया गया। गौरतलब है कि सल्लू खान जिले के ऐसे सामाजिक कार्यकर्ता है जो जाड़ा गर्मी या बरसात हर मौसम में सामाजिक कार्यो के प्रति समर्पित रहते है। रात्रि के दो बजे भी अगर किसी को इनकी जरूरत पड़े और इन्हें याद करे तो मदद के लिए हाजिर रहते है। सल्लू खान को उनके समाजसेवा को लेकर कई बार जिला प्रशासन से सम्मान भी प्राप्त हो चुका है। रक्तदान से संबंधित सम्मानित होने पर समाजसेवी समाजसेवी सल्लू खान को सदर अस्पताल के उपाधीक्षक डॉक्टर आशुतोष कुमार सिंह मजबूत आलम उर्फ मुन्नू वार्ड परिषद सिकंदर हयात डॉक्टर रवि रंजन डॉक्टर शोभा रानी आदि लोगों ने बधाई देते हुए कहा कि सल्लू खान एक सामाजिक कार्यकर्ता और वह समाजसेवी के लिए जाने जाते हैं।

राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन के प्रदेश अध्यक्ष की मां को मिला धमकी

प्रात : किरण संवाददाता

गया। समाजसेवी इवनिंग कॉलेज कोडरमा के प्राचार्य डॉ मनीष पंकज मिश्रा को जान से मारने की धमकी के साथ-साथ भदी भदी गालिया भी दी गई है।डॉ मनीष पंकज मिश्रा की माता कला देवी के मोबाइल पर दिया गए धमकी देने वाला मोबाइल नंबर 7281036650 है।जिस समय धमकी दिया जा रहा था उस वक़्त डॉक्टर मनीष पंकज मिश्रा नवादा लॉ कॉलेज में थे, जैसे ही माताजी के द्वारा सूचना दिया गया कि मेरे मोबाइल पर इस नंबर से धमकी दी गई है, तुरंत इसकी लिखित सूचना सिविल लाइन थाना अध्यक्ष को दे दी गई है,भाजपा नेता की धमकी पर भाजपा नेताओं ने डॉ मनीष पंकज मिश्रा से भेंट कर इस तरह का घटना की जानकारी प्राप्त की जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता सहित अन्य नेताओं के द्वारा निंदा करते हुए कहा की जिला प्रशासन अविलम्ब,डॉ मनीष पंकज मिश्रा के लिखित आवेदन पर कानूनी कार्रवाई करें।डॉ मनीष पंकज मिश्रा भाजपा के लोकप्रिय नेता के साथ-साथ राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन के प्रदेश अध्यक्ष एवं कोडरमा इवनिंग कॉलेज के प्राचार्य भी हैं।जिला प्रशासन से मांग करते हैं की डॉक्टर मनीष पंकज मिश्रा की आवेदन के आलोक में गहराई से जांच किया जाए कोई व्यक्ति इन्हें हत्या करने का साजिश तो नहीं रच रहा है डॉ मनीष पंकज मिश्रा ने बताया कि पूर्व मे भी हमारे पर हमला करने के इरादा से गाड़ी पर हमला किया गया था मुझे अब पता चल रहा है कि कोई हत्या करने का साजिश रच रहा है जिला प्रशासन से मांग करते हैं कि अभिलंब जान माल की रक्षा हेतु सुरक्षा हेतु सरकारी अंगरक्षक मुहैया कराया जाए ताकि जो भी असामाजिक तत्व हैं वो अपने इरादे में सफल ना हो सकें। इस तरह का घटना से डॉ मनीष पंकज मिश्रा का पूरा परिवार काफी डरे और सहमे हुए हैं डॉ मनीष पंकज से मिलकर घटना के निंदा करने वालों में जिला मीडिया प्रभारी संतोष ठाकुर व्यापार प्रकोष्ठ के संयोजक दीपक पांडे भाजपा वरिष्ठ नेता मानवाधिकार संगठन के कार्यवाहक अध्यक्ष राणा रणजीत सिंह सुनील कुमार बंबईया राष्ट्रीय मानवाधिकार के संयोजक सारिका वर्मा वार्ड पार्षद बिंदु वाला सिंह मनी कुमारी सहित अन्य निंदा किया जाए।

नगर निगम गया 23- 24 में प्रदूषण स्तर में 30 प्रतिशत की कमी : नगर आयुक्त

प्रात : किरण संवाददाता

गया।जिला पदाधिकारी डा०त्यागराजन, एस, एम, की अध्यक्षता में आई.आई.टी. पटना की टीम के साथ गया नगर निगम क्षेत्र में प्रदूषण नियंत्रण हेतु चलाए जा रहे राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम के तहत निगम क्षेत्र में उत्सर्जन सूची स्रोत विभाजन एवं वाहन क्षमता के अध्ययन हेतु प्राथमिक डाटा संग्रहण प्रारंभ करने हेतु एक बैठक आहूत की गई है।इस बैठक में सदस्य संचालक सह नगर आयुक्त गया नगर निगम गया, अभिलाष शर्मा के द्वारा बतलाया गया कि गया नगर निगम क्षेत्र में गत वर्ष की अपेक्षा वर्ष 2023- 24 में प्रदूषण स्तर में 30% की कमी आई है जो गया नगर में चलाए जा रहे प्रदूषण नियंत्रण कार्यक्रम का परिणाम है। गया नगर निगम के द्वारा लगातार साफ सफाई के साथ-साथ सभी मुख्य सड़कों पर प्रतिदिन वॉटर स्प्रिंकलर के द्वारा जल छिड़काव का कार्य किया जाता है । राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण परिषद के द्वारा संचालित डैशबोर्ड के टिकट के निष्पादन में पूरे भारत में गया का प्रथम स्थान है। नगर आयुक्त द्वारा आईआईटी पटना की डॉक्टर परिधि राजीव को गया नगर निगम एवं गया के अन्य विभागों को प्राथमिक डाटा उपलब्ध कराने निर्देश दिया गया है। गया नगर निगम के द्वारा शत प्रतिशत कचरे का प्रसंस्करण किया जा रहा है नगर निगम क्षेत्र में निर्माण एवं विध्वंस अपशिष्ट प्रबंधन हेतु प्लांट लगाने की निविदा कर ली गई है शीघ्र ही प्लांट लगाने की कार्रवाई शुरू की जाएगी । नगर निगम क्षेत्र में धूल कण को काम करने के लिए गया समाहरणालय से मिर्जा गालिब तक पेभर ब्लॉक का कार्य किया जा रहा है। अगले चरण में मिर्जा गालिब कॉलेज से आशा सिंह मोड होते हुए गया कॉलेज मोड तक एवं विधिक प्राधिकार मोड़ से जिला पदाधिकारी आवास होते हुए सीनियर एसपी के आवास तक पथ के दोनों तरफ इंड टू ईड पेभमेंट का कार्य कराया जाएगा। गया नगर निगम के ठोस अपशिष्ट प्रबंधन हेतु चार स्थलों पर ट्रांसफर स्टेशन का निर्माण किया जाएगा। इस बैठक में जिला कृषि पदाधिकारी, जिला परिवहन पदाधिकारी, महाप्रबंधक उद्योग विभाग, क्षेत्रीय पदाधिकारी बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण परिषद, गया पुलिस अधीक्षक के प्रतिनिधि, राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम के राज्य के नोडल पदाधिकारी डॉक्टर डी.शाह आईआईटी पटना की डॉक्टर परिधि राजीव ,डॉक्टर ओम प्रकाश , डॉक्टर सुब्रता हयात, आइ ओ जी पी एल के प्रतिनिधि ,नगर प्रबंधक श्री आसिफ सिराज एवं सानू कुमार उपस्थित थे।

अवार्ड देने के आड़ में हो रही पैसे की उगाही

पटना। पटना के मौर्या होटल में दिनांक 9 जून 2024 दिन रविवार को बिजनेस इन बिहार अवार्ड शो का आयोजन किया गया था. इस अवॉर्ड शो में पटना के कई उद्यमियों, डॉक्टर एवं कई व्यापारियों को इस अवॉर्ड शो में आमंत्रित किया गया था, कार्यक्रम की मुख्य अतिथि फिल्म अभिनेत्री अदा शर्मा शिरकत कर रही थी. वही इस कार्यक्रम में रुपए लेकर ओल्ड चंपारण मीट हाउस पटना के संस्थापक गोपाल कुशवाहा को भी अवार्ड से सम्मानित करने के लिए आमंत्रित किया गया था जब वह इस कार्यक्रम में पहुंचे तो पहले ही इनके ब्रांड ओल्ड चंपारण मीट हाउस के नाम पर दूसरे वयक्ति को इनसे अधिक राशि लेकर अवार्ड देकर सम्मानित किया गया. इस विषय पर जब गोपाल कुशवाहा ने कार्यक्रम के ऑर्गेनाइजर आलोक सिंह तथा सचिन कुमार से बात की तो उन्होंने उनसे अभद्र तथा अपमानजनक व्यवहार किया और कहा कि इस विषय पर आपसे बाद में बात करेंग. इस विषय पर गोपाल कुशवाहा ने प्रेस बयान जारी कर कहा कि ये जो बिजनेस इन बिहार इवेंट संस्था है पैसे लेकर पटना के व्यापारियों को अवार्ड शो के नाम पर बुलाकर बिना निबंधित कंपनियां को अवार्ड दे देती है जिससे कि पटना के नामी कंपनियों की बदनामी होती है गोपाल कुशवाहा ने बताया कि ओल्ड चंपारण मीट हाउस एक बड़ी ब्रांड है जिसके कई बिना निबंध की प्रतिष्ठा ने पटना एवं बिहार में चल रही है जिसे कई चंपारण मीट हाउस के नाम से चला रहे कुछ लोगों पर कानूनी कार्रवाई भी चल रही है।

संक्षिप्त समाचार

ऑस्ट्रेलिया की टिटमस ने स्विमिंग में वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया

सिडनी (एजेंसी)। 12 जून को ऑस्ट्रेलियन ओलिंपिक ट्रायल्स में स्विमर एरियन एलिजाबेथ टिटमस ने महिला 200 मीटर फ्रीस्टाइल का वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। टिटमस ने 1 मिनट 52.23 सेकंड में स्विमिंग रेस पूरी कर गोल्ड जीती हैं। ऑस्ट्रेलियन स्विमर एरियन एलिजाबेथ टिटमस का जन्म 7 सितंबर, 2000 को हुआ था। एरियन टिटमस ने अपने ही देश की मॉली ओ कैलेघन का पिछले साल वर्ल्ड चैंपियनशिप में बनाया रिकॉर्ड तोड़ा है। मॉली ने 1 मिनट 51.85 सेंकड में स्विमिंग रेस पूरी की थी। टिटमस महिलाओं की 200 मीटर और 400 मीटर फ्रीस्टाइल में ओलिंपिक चैंपियन हैं। उन्होंने 2020 ओलिंपिक में दोनों कैटेगरी में गोल्ड जीता था। एरियन टिटमस ने लॉन्ग कोर्स 400 मीटर फ्रीस्टाइल में 3:56.40 समय लेकर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया था।

वह निश्चित रूप से मोहम्मद सिराज से आगे है, पूर्व क्रिकेटर ने की अर्शदीप की तारीफ

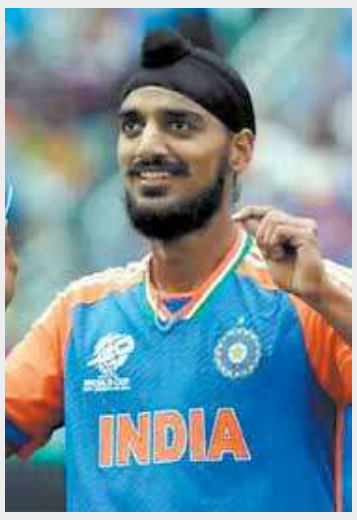

न्यूयॉर्क (अमेरिका) (एजेंसी)। पूर्व क्रिकेटर अनिल कुंबले ने अर्शदीप सिंह की प्रशंसा की और कहा कि यह तेज गेंदबाज अपनी बाएं हाथ की गति से मौजूदा टी20 विश्व कप 2024 में भारतीय टीम को अतिरिक्त विविधता प्रदान कर सकता है। अर्शदीप को बुधवार को अमेरिका के खिलाफ मैच का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया क्योंकि उन्होंने अपने चार ओवर के स्पेल में 2.20 की इकॉनमी रेट से चार विकेट लिए और नौ रन दिए। कुंबले ने कहा कि जिस तरह से अर्शदीप ने पाकिस्तान के खिलाफ आखिरी ओवर में गेंदबाजी की और कुछ चीजें उन्हें मोहम्मद सिराज से आगे रखती हैं। पूर्व क्रिकेटर ने कहा कि अर्शदीप न्यूयॉर्क में टी20 विश्व कप 2024 मैच के दौरान अमेरिका के खिलाफ गेंदबाजी करने के बाद मिले आत्मविश्वास से खुश होंगे। पूर्व क्रिकेटर ने कहा, मुझे ऐसा लगता है। मुझे लगता है कि अर्शदीप सिंह ने पाकिस्तान के खिलाफ आखिरी ओवर में जिस तरह से गेंदबाजी की और जिस तरह से वह टी20 मैच में अलग-अलग क्षेत्रों में गेंदबाजी कर सकता है, मुझे लगता है कि वह निश्चित रूप से मोहम्मद सिराज से आगे है। अगर भारत सिर्फ दो तेज गेंदबाजों और हार्दिक पांड्या के साथ जाने का विकल्प चुनता है। तो हां उस अर्थ में साथ ही वह आपको अपने बाएं हाथ की गति से अतिरिक्त विविधता भी देता है। इसलिए कुल मिलाकर, वह खुश होना चाहिए। वह इस खेल से मिले आत्मविश्वास से खुश होगा।

आज टी-20 वर्ल्ड कप में अमेरिका और आयरलैंड के मुकाबले पर पाकिस्तान की रहेगी नजर

फ्लोरिडा (एजेंसी)। घरेलू मैदान पर शानदार प्रदर्शन से प्रभावित करने वाली अमेरिका की टीम शुक्रवार को आईसीसी टी20 विश्व कप के ग्रुप ए के अहम मुकाबले में आयरलैंड का सामना करेगी तब इस मैच के परिणाम पर पाकिस्तान की भी नजर होगी। अमेरिका के तीन मैचों में चार अंक है और इस मुकाबले के जीतकर उसके पास सुपर आठ में पहुंचने का सुनहरा मौका है। इससे 2009 की चैम्पियन पाकिस्तान की टीम टूर्नामेंट से बाहर हो जाएगी। पाकिस्तान को हराने के बाद भारत को कड़ी टक्कर देने वाले अमेरिका के लिए हालांकि यह आसान नहीं होगा क्योंकि आयरलैंड की टीम में कई अनुभवी खिलाड़ी हैं। यह टीम शुरुआती दो मैचों में मिली हार को पीछे छोड़कर जीत की राह पर लौटने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगाएगी।

आयरलैंड के बल्लेबाजों ने भारत और फिर कनाडा के खिलाफ न्यूयॉर्क में काफी खराब बल्लेबाजी की है। फ्लोरिडा की पिच हालांकि बल्लेबाजी के लिए आसान है और ऐसे में मैच में बड़ा स्कोर देखने को मिल सकता है। अमेरिका के लिए हालांकि नियमित कप्तान मोनाक पटेल की वापसी राहत की बात होगी जो चोट के कारण भारत के खिलाफ नहीं खेल सके थे। इस मैच पर बारिश का खतरा मंडरा रहा है और मैच रद्द होने पर पाकिस्तान की टीम सुपर आठ की दौड़ से बाहर हो जाएगी। इस स्थिति में अमेरिका के पांच अंक हो जायेंगे और पाकिस्तान अधिकतम चार अंक तक ही पहुंच पायेगा।

टीमें

अमेरिका - मोनाक पटेल (कप्तान), आरोन जोन्स, एंड्रीज गौस, कोरी एंडरसन, अली खान, हरमीत सिंह, जेसी सिंह, मिलिंद कुमार, निसर्ग पटेल, नीतीश कुमार, नोशतुश केंजीगे, सौरभ नेत्रवलकर, शैडली वान शल्कविक, स्टीवन टेलर, शायन जहांगीर।

आयरलैंड - पॉल स्टर्लिंग (कप्तान), मार्क अडायर, रॉस अडायर, एंड्रयू बालबर्नी, कर्टिस कैंपर, गैरेथ डेलानी, जॉर्ज डॉकरेल, ग्राहम ह्यूम, जोश लिटिल, बैरी मैकार्थी, नील रॉक, हैरी टेक्टर, लोरकन टकर, बेन व्हाइट, क्रेग यंग

समय - रात आठ बजे से।

कुलदीप या चहल, चावला ने बताया भारतीय टीम में सुपर 8 के लिए किसका दावा मजबूत

मुंबई (एजेंसी)। पूर्व क्रिकेटर पीयूष चावला का मानना है कि भारतीय टीम टी20 विश्व कप के सुपर आठ चरण के मैचों के लिए जब वेस्टइंडीज पहुंचेगी तो कलाई के स्पिनर कुलदीप यादव टीम के पसंदीदा स्पिनर होंगे। न्यूयॉर्क के नसाउ काउंटी स्टेडियम की मुश्किल पिच पर स्पिनरों के लिए ज्यादा मदद नहीं थी और भारत ने इस दौरान टीम में कुलदीप और युजवेंद्र चहल की जगह रविंद्र जडेजा और अक्षर पटेल पर ज्यादा भरोसा दिखाया। चावला ने कहा, 'न्यूयॉर्क की पिच बहुत खतरनाक थी और जिस तरह से भारत ने उस पिच पर प्रदर्शन किया और तीन में से तीन मैच जीते, उससे आगे बढ़ने की बहुत अच्छी संभावना है। उन्होंने कहा, 'न्यूयॉर्क में स्पिनरों की उतनी जरूरत नहीं थी, लेकिन एक बार जब आप सुपर आठ चरण में प्रवेश करते हैं, तो वेस्टइंडीज में स्पिनरों की बड़ी भूमिका होगी। हमारे स्पिनरों को अब मौका मिलेगा। चहल ने हाल ही में इंडियन प्रीमियर लीग में ज्यादा विकेट चटकाए लेकिन चावला ने भारतीय टीम के लिए कुलदीप को अपनी पहली पसंद के रूप में चुना। उन्होंने कहा, 'ईमानदारी से कहूं तो दोनों में से केवल एक ही खेलेगा और पिछले डेढ़ साल के प्रदर्शन को देखे तो मुझे लगता है कि कुलदीप टीम की पहली पसंद होंगे।

यह मेरी 'स्टॉक बॉल' थी, कोहली को पहली गेंद पर आउट कर बोले नेत्रवलकर

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। अपनी गेंदबाजी से भारत के दिग्गज बल्लेबाजों को परेशान करने के बाद बाएं हाथ के अमेरिकी तेज गेंदबाज सौरभ नेत्रवलकर मुंबई टीम के अपने पुराने साथी रोहित शर्मा और सूर्यकुमार यादव से मिलकर काफी खुश थे। भारत में जन्में इस तेज गेंदबाज ने अपने शुरुआती दो ओवर में विराट कोहली और रोहित के विकेट चटकाए थे। उन्होंने इससे पहले पाकिस्तान के खिलाफ भी शानदार गेंदबाजी कर टीम को सुपर ओवर में रोमांचक जीत दिलाई थी।

पेशे से सॉफ्टवेयर इंजीनियर नेत्रवलकर ने अंडर-19 विश्व कप (2010) में भारतीय टीम के लिए खेलने के अलावा सूर्यकुमार के साथ मुंबई का प्रतिनिधित्व किया है। नेत्रवलकर ने भारत के खिलाफ मैच में चार ओवर में 18 रन खर्च कर दो विकेट लिए लेकिन यह अमेरिका को सात विकेट की शिकस्त से बचाने के लिए काफी नहीं था।

नेत्रवलकर ने मैच के बाद कहा, 'मैं उनसे एक दशक से अधिक समय के बाद मिला। यह विशेष था। हम पुराने दिनों को याद कर रहे थे क्योंकि हम बचपन से ही अंडर-15, अंडर-17 में साथ खेलते थे। ऐसा लगा जैसे हम वहीं से आगे बढ़ रहे हैं जहां से हमने छोड़ा था। हम उस समय के चुटकुले, अनौपचारिक बातचीत और ड्रेसिंग रूम के मजाक के बारे में बात कर रहे थे। उन्होंने कहा, 'मैच के बाद मैंने रोहित से भी बातचीत की,वह मुंबई में मेरे सीनियर थे। मैं उनके साथ खेल चुका हूं। मैंने विराट के साथ ज्यादा क्रिकेट नहीं खेला है लेकिन उन्होंने हमारे प्रयासों की सराहना की। यह अच्छा है उन्हें हमारी टीम में क्षमता दिखती है।

ओरेकल कंपनी में काम करने वाले इस 32 साल के खिलाड़ी ने अंडर-19 विश्व कप खेलने के बाद छात्रवृत्ति मिलने पर प्रतिष्ठित कॉर्नेल विश्वविद्यालय में उच्च अध्ययन के लिए अमेरिका जाने का फैसला किया। अमेरिका आने पर उनकी क्रिकेट यात्रा पर थोड़ा अल्पविराम लगा लेकिन उन्होंने खेल को फिर से शुरू किया और अमेरिकी टीम के अहम सदस्य बन गए। टी20 विश्व कप में शानदार सफलता के बारे में पूछे जाने पर इस खिलाड़ी ने कहा, 'मैं अब भी इस सफलता का लुत्फ उठा रहा हूं। पिछले दो मैच काफी बड़े रहे हैं। मुझे खुशी है कि हमने एक इकाई के रूप में अच्छा प्रदर्शन किया है। परिस्थिति चाहे जो भी हो, हमेशा खुश रहना है। नेत्रवलकर का परिवार अब भी भारत में है।

उन्होंने भारत के खिलाफ प्रदर्शन के बारे में पूछे जाने पर कहा, 'हम यह नहीं सोच रहे थे कि हम किसका सामना कर रहे है और क्या परिणाम होगा। यह हमारी योजनाओं के बारे में स्पष्ट होने, उसे मैदान पर उतारने के बारे में था। मुझे खुशी है कि मेरा पहला स्पैल शानदार रहा। कोहली को पहली गेंद पर आउट करने के बारे में उन्होंने कहा, 'यह मेरी 'स्टॉक बॉल' थी। मैं उन्हें ज्यादा जगह नहीं देना चाहता था। मैं पहली गेंद को ऑफ स्टंप के करीब रखने की कोशिश कर रहा था। मैंने विकेट लेने के लिए कोई अतिरिक्त प्रयास नहीं किया था।

स्टॉप-क्लॉक नियम के तहत दंडित होने वाली पहली टीम बनी यूएए भारत को मिले एक्स्ट्रा 5 रन

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। संयुक्त राज्य अमेरिका की क्रिकेट टीम भारत के खिलाफ टी20 विश्व कप के ग्रुप ए मैच में टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में खेल की गति को तेज करने के लिए बनाए गए नए स्टॉप-क्लॉक नियमों के तहत दंडित होने वाली पहली टीम बन गई। यह मैच न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला गया। यूएसए को अगला ओवर समय पर शुरू नहीं करने के लिए फटकार लगाई गई और परिणामस्वरूप उनके प्रतिद्वंद्वी भारत को अतिरिक्त रन दिए गए।

यह नियम 1 जून से पुरुषों के वनडे और टी20आई में एक स्थायी विशेषता बन गया है, यह निर्धारित करता है कि क्षेत्ररक्षण करने वाली टीम को पिछला ओवर समाप्त होने के 60 सेकंड के भीतर अगला ओवर शुरू करना होगा। यदि वे एक पारी में तीन बार ऐसा करने में विफल रहते हैं, तो पांच रन की पेनल्टी लगाई जाती है और उनके प्रतिद्वंद्वी को रन दिए जाते हैं।

भारत को 111 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए अंतिम पांच ओवरों में 35 रन चाहिए थे, जो एक कठिन बल्लेबाजी पिच पर एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। 16वें ओवर की शुरुआत में, स्टॉप-क्लॉक नियम लागू हुआ क्योंकि यूएसए पारी में तीसरी बार समय पर ओवर शुरू करने में विफल रहा। अंपायरों ने तुरंत पांच रन की पेनल्टी लगाई, जिससे भारत का लक्ष्य 30 गेंदों पर 30 रन रह गया, जिससे बल्लेबाजी पक्ष पर दबाव काफी कम हो गया।

अंपायरों को चोटिल मोनंक पटेल की अनुपस्थिति में यूएसए की कप्तानी कर रहे आरोन जोन्स को पेनल्टी के बारे में समझाते हुए देखा गया। तनावपूर्ण स्थिति के बावजूद यूएसए की टीम को पेनल्टी स्वीकार करनी पड़ी और खेल जारी रखना पड़ा।

स्टॉप-क्लॉक की शुरूआत का उद्देश्य ओवर रेट में सुधार करना था और इसके परीक्षण अवधि ने आशाजनक परिणाम दिखाए जिससे प्रत्येक वनडे मैच में लगभग 20 मिनट की बचत हुई। हालांकि, इस मैच से पहले किसी भी टीम को एक पारी में तीन बार स्टॉप-क्लॉक का पालन करने के लिए दंडित नहीं किया गया था, जिससे यूएसए इस नए नियम के परिणामों को भुगतने वाला पहला देश बन गया।

भारत ने पेनल्टी का फायदा उठाया और अपने मध्य-क्रम के बल्लेबाजों के महत्वपूर्ण योगदान की बदौलत 10 गेंदें शेष रहते सात विकेट से मैच जीत लिया। इस जीत ने तीन मैचों में तीन जीत के साथ सुपर 8 में भारत की जगह सुनिश्चित की।

ऐसा लगा जैसे रणजी ट्रॉफी में खेल रहा हूं, न्यूयॉर्क की पिच पर बोले शिवम दुबे

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। भारत में तेज पिचों पर बल्लेबाजी करने के आदी बड़े हिटर ऑलराउंडर शिवम दुबे ने स्वीकार किया कि यहां टी20 विश्व कप मैचों के लिए दो-गति वाली पिचों ने उन्हें इस हद तक परेशान कर दिया कि ऐसा लगा जैसे रणजी ट्रॉफी खेल रहा हूं। चेन्नई सुपर किंग्स के स्टार ने बुधवार को यूएसए की टीम पर सात विकेट की जीत में 35 गेंदों में 31 रन बनाकर फॉर्म हासिल की, जिससे भारत इस इवेंट के सुपर आठ चरण में पहुंच गया। सुपर आठ खेलों के साथ विश्व कप पूरी तरह से वेस्टइंडीज में चला जाएगा।

यहां नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में आयरलैंड और पाकिस्तान के खिलाफ अपनी लगातार असफलताओं के बारे में दुबे ने कहा, मैं अपनी फॉर्म से जूझ रहा था और अपनी प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित कर रहा था। लेकिन यहां कोई दबाव नहीं था। सभी सहयोगी स्टाफ और कोचों ने मेरा समर्थन किया और मुझसे कहा यह मुश्किल है, लेकिन तुम्हारे पास छक्के मारने की क्षमता है, इसलिए इसका इस्तेमाल करो। उन्होंने कहा, मैंने अतीत में जो कुछ भी किया है, उस पर मुझे कभी खुद पर संदेह नहीं रहा। मुझे लगता है कि ये परिस्थितियां उस चीज की मांग नहीं करतीं जो मैंने सीएसके में किया है। इन परिस्थितियों में अलग दृष्टिकोण की आवश्यकता है, इसलिए मैं आज अलग तरह से बल्लेबाजी कर रहा था।

दुबे को अभी भी एक और पावर-हिटर रिंकू सिंह, जो रिजर्व में हैं, से आगे अपने चयन को सही साबित करने के लिए लंबा सफर तय करना है। भारत की मुख्य विश्व कप टीम में चुने जाने के बाद दुबे ने आईपीएल में पांच पारियों में सिर्फ 36 रन बनाए। विश्व कप में उनकी परेशानी जारी रही, जहां उन्होंने बुधवार को एक संयमित पारी खेलने से पहले तीन मैचों में 14 (बांग्लादेश के खिलाफ अभ्यास मैच), 0 नाबाद और 3 रन बनाए।

111 रन के मामूली लक्ष्य का पीछा करते हुए, भारत मुश्किल ड्रॉप-इन नासाउ पिच पर 44/3 पर सिमट गया। दुबे को भी मुश्किलें आ रही थीं और गेंद को टाइम करने में संघर्ष करना पड़ रहा था, उन्होंने अपना खाता खोलने के लिए छह गेंदें लीं। 15 गेंदों पर नौ रन बनाने वाले दुबे आखिरकार 15वें ओवर में कोरी एंडरसन की गेंद पर 87 मीटर का छक्का लगाने में सफल रहे।

उन्होंने कहा, ऐसा लगा जैसे रणजी ट्रॉफी खेल रहा हूं। छक्का लगने के इंतजार के बारे में दुबे ने मजाक में कहा, मैं सफेद गेंद के बारे में नहीं सोचता। परिस्थितियां तय करती हैं कि आप यहां कैसे खेलना चाहते हैं। छक्का मारने के लिए आपको अपना सर्वश्रेष्ठ शॉट चुनना होगा। आज, मैं उस अवसर का इंतजार कर रहा था। यहां आकर पहली गेंद से ही हिट करना आसान नहीं है; आपको अपना समय लेना होगा।

हो सकता है कि उन्हें इन पिचों पर बल्लेबाजी करने में मजा न आया हो, लेकिन गेंदबाजी करना उन्हें निश्चित रूप से पसंद है। दुबे ने कहा, जाहिर है कि मुझे सीएसके और भारत में छक्का मारने की याद आती है... इन परिस्थितियों में और नेट्स में भी यहां बल्लेबाजी करना मुश्किल है। यहां गेंदबाजी करना निश्चित रूप से बेहतर है, मैं और गेंदबाजी करता, लेकिन छक्का लगने के कारण मुझे मौका नहीं मिला।

यह पूछे जाने पर कि क्या वह इस स्थान पर अपने संघर्ष की कठिन यादों को मिटाना चाहेंगे, उन्होंने कहा, मैं इसे अपनी यादों से नहीं मिटाऊंगा क्योंकि यह मेरा पहला विश्व कप है। केवल बल्लेबाजी करना मुश्किल है - चाहे वह लक्ष्य का पीछा करना हो या पहले बल्लेबाजी करना। लेकिन हमारी अच्छी साझेदारी थी और हमने जल्दी ही मैच खत्म कर दिया, इसलिए मैं कहूंगा कि लक्ष्य का पीछा करना थोड़ा आसान था क्योंकि हम आज जीत गए। गेंद स्किड हो रही है, नीचे रह रही है, साइडवेज रह रही है और कुछ पिच से बहुत तेजी से आ रही है - यह सभी तरह की चीजें कर रही है। इसलिए, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। मुझे नहीं लगता कि आपने कभी टी20 विश्व कप में ऐसा देखा है।

दुबे ने अपने और दूसरों के दुखों के लिए दिन के मैचों को एक अस्थायी स्टेडियम में दर्शकों के लिए उचित स्टैंड के बिना खेले जाने को भी जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने कहा, बैकड्रॉप की वजह से यह थोड़ा मुश्किल है। इसके अलावा बहुत रोशनी है, इसलिए गेंद का अंदाजा लगाना थोड़ा मुश्किल है।

धमाकेदार भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली गोल्डन डक पर आउट हो गए, मेगा-इवेंट में सलामी बल्लेबाज के रूप में उन्होंने अब तक तीन पारियों में 1, 4 और 0 के स्कोर बनाए हैं। सीनियर बल्लेबाज के खराब फॉर्म के बारे में पूछे जाने पर दुबे ने कहा, मैं विराट कोहली के बारे में कुछ नहीं कह सकता क्योंकि मैं विराट कोहली नहीं हूं। उनके खराब दौर का मतलब है कि वह दो बार सस्ते में आउट हो गए लेकिन अगले तीन मैचों में शतक बनाकर वापसी करेंगे। हम सभी उनके खेल और उनके खेलने के तरीके को जानते हैं।

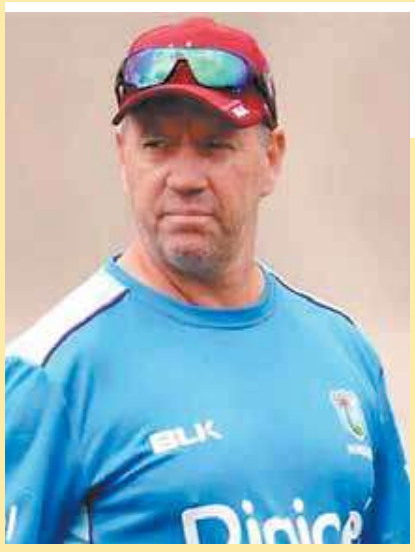

पेनल्टी रन ने नतीजे को प्रभावित नहीं किया, अमेरिकी कोच ने बताई हार की वजह

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। अमेरिका के मुख्य कोच स्टुअर्ट लॉ ने यहां टी20 विश्व कप मैच में भारत के हाथों अपनी टीम की करीबी हार के लिए ओवर तेजी से पूरा नहीं कर पाने के कारण पांच रन के पेनल्टी को जिम्मेदार ठहराने से इनकार करते हुए कहा कि उनके खिलाड़ियों को मैदानी अंपायरों की चेतावनियों के बाद सतर्क हो जाना चाहिए था। कम स्कोर वाले इस मैच में भारत ने अमेरिका को आठ विकेट पर 110 रन पर रोकने के बाद 18.2 ओवर में तीन विकेट गंवा कर जीत दर्ज की।

भारत को आखिरी 30 गेंद में 35 रन की जरूरत थी लेकिन भारत को पांच पेनल्टी रन मिल गए और चीजें आसान हो गई। अमेरिका को तीसरी बार ओवर शुरू करने में 60 सेकंड से अधिक की देरी करने पर अंपायर ने उनके खिलाफ पांच पेनल्टी रन दे दिए। लॉ ने मैच के बाद कहा, 'हमें इससे पहले के मैचों में कुछ चेतावनियां मिली थीं और हमें ओवर को जल्दी शुरू करना चाहिए था। हम नई टीम है और इस मामले में हमें सुधार करना होगा। ऑस्ट्रेलिया के इस पूर्व खिलाड़ी ने कहा, 'इस खेल में सीखने के लिए बहुत कुछ है। इसमें कई पेचीदगियां भी हैं जिनके बारे में जानकारी होना जरूरी है। यह एक नया नियम है। उन्होंने कहा, 'इस साल की शुरुआत में बांग्लादेश श्रृंखला या कनाडा के खिलाफ श्रृंखला खेलने से पहले हमारे कई खिलाड़ियों ने इसके बारे में नहीं सुना होगा।

आईसीसी ने दिसंबर 2023 में स्टॉप क्लॉक नियम लागू किया था। इसमें क्षेत्ररक्षण टीम के लिए पिछले ओवर के पूरा होने के 60 सेकंड के अंदर नया ओवर शुरू करना अनिवार्य हो गया था। मैदानी अंपायर दो बार चेतावनी देने के बाद तीसरी बार ऐसे होने पर गेंदबाजी टीम के खिलाफ पांच पेनल्टी रन दे देते हैं। लॉ ने हालांकि कहा कि इन पांच रनों का मैच के परिणाम को कोई खास असर नहीं पड़ा।

उन्होंने कहा, 'इन पांच रनों से मैच के परिणाम पर कोई असर नहीं पड़ा। लेकिन मुझे लगता है कि हमने अच्छा प्रदर्शन किया, हमने कड़ा संघर्ष किया और मैच को आखिर तक ले जाने में सफल रहे। दुनिया की सर्वश्रेष्ठ टीमों में से एक के खिलाफ हमने काफी जज्बा दिखाया। उन्होंने कहा, 'खिलाड़ियों को इस नियम के बारे में पता था और अंपायर के दो बार चेतावनी देने के बाद उन्हें सतर्क रहना चाहिए था।%

उन्होंने इस नियम का समर्थन करते हुए कहा कि खेल की गति को बनाये रखने के लिए इस तरह का कड़ा रवैया जरूरी है। उन्होंने कहा, 'अगर आप खेल को लंबा खींचने की कोशिश करेंगे तो यह साढ़े तीन की जगह चार या साढ़े चार घंटे तक चलेगा। यह काफी होगा। आईसीसी का काम इन चीजों से निपटने के लिए नियम बनाना है।

संक्षिप्त समाचार

वक्फ बोर्ड मनीलॉन्ड्रिंग मामले में आरोपी को राहत नहीं, अदालत का अंतरिम जमानत देने से इनकार

नई दिल्ली, एजेंसी। राष्ट्रीय राजधानी की एक अदालत ने दिल्ली वक्फ बोर्ड धन शोधन (मनी लॉन्ड्रिंग) मामले में एक आरोपी को अंतरिम जमानत देने से इनकार करते हुए कहा कि उसे राहत देने के लिए कोई असाधारण परिस्थिति नहीं है। विशेष न्यायाधीश राकेश स्याल ने कौसर इमाम सिद्दीकी की याचिका खारिज कर दी। सिद्दीकी ने अपनी मां के अस्पताल में भर्ती होने और अपने बच्चों की देखभाल के लिए 30 दिन की अंतरिम जमानत मांगी थी। यह मामला आम आदमी पार्टी के विधायक अमानतुल्ला खान के कहने पर 36 करोड़ रुपए की संपत्ति की खरीद और बिक्री में कथित धन शोधन (मनी लॉन्ड्रिंग) से संबंधित है। न्यायाधीश ने सात जून को पारित आदेश में कहा कि ऐसा कोई बाध्यकारी कारण नहीं है जैसे कोई असाधारण परिस्थितियां हों जो आवेदक को अंतरिम जमानत देने को उचित ठहरा सकती हों। उन्होंने कहा कि लिहाजा आवेदन को खारिज किया जाता है। सिद्दीकी ने अपनी अर्जी में कहा था कि उसे 24 नवंबर 2023 को गिरफ्तार किया गया था और तब से वह हिरासत में है और वह परिवार का एकमात्र कमाने वाला है।

नेटफ्लिक्स के द ग्रेट इंडियन कपिल शो के 12वें एपीसोड में भारतीय संगीत उद्योग के ज़बरदस्त टेलेंट को सामने लाया गया

नई दिल्ली, एजेंसी। नेटफ्लिक्स के द ग्रेट इंडियन कपिल शो के 12वें एपीसोड में भारतीय संगीत उद्योग के ज़बरदस्त टेलेंट को सामने लाया गया है, जो सभी संगीत प्रेमियों के लिए एक बड़ा तोहफ़ा होगा शनिवार रात 8 बजे! आओ नाचें! क्योंकि करण औजला, बादशाह और डिवाइन अपने लेटेस्ट एल्बम एक था राजा के प्रमोशन के दौरान ज़बरदस्त धमाल मचाने को तैयार हैं। वाइब है क्योंकि ये मेहमान कुछ ऐसे अनसुने किस्से सुनाते हैं, जिनसे यह सीज़न का एक यादगार एपिसोड बन जाता है। वैसे तो इस एपिसोड में कई दिलचस्प किस्से हैं, लेकिन एक ऐसा किस्सा भी है जिसे सुनकर यक़ीनन आपके कान खड़े हो जायेंगे। यह किस्सा है दिलजीत दोसांझ के गाने जीओएटी के बारे में, जिसे करण औजला ने लिखा है।बेहद टेलेंटिड करण औजला के बारे में बोलते हुए कपिल ने खुलासा किया, दिलजीत पाजी का गाना है जीओएटी, वो इन्होंने सिर्फ़ 10 मिनट में लिखकर दे दिया था। इसी पर आगे मज़ाक करते हुए कपिल करण से पूछते हैं, पाजी, हम रेस्टोरेंट जाते हैं और चाय लाने के लिए कहते हैं, अगर वो चाय तुरंत ले आते हैं, तो हमें शक़ होता है कि चाय ठीक से उबली है या नहीं या कहीं बासी तो नहीं है। जब आपने दिलजीत पाजी को दस मिनट में गाना दिया तो उन्होंने इसे खुशी से ले लिया या आपसे इसे और पकाने के लिए कहा था?

रायपुर सांसद बृजमोहन ने कहा- विधायक या सांसद इस्तीफे पर कर रहा विचार

रायपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के नवनिर्वाचित सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने एक बड़ा बयान दिया है। बृजमोहन अग्रवाल ने रायपुर में एक इंटरव्यू के दौरान यह कहा है कि वह विधायक या सांसद पद से कब इस्तीफा देंगे उसे पर वह विचार कर रहे हैं। इसके साथ ही उन्होंने छत्तीसगढ़ शासन के मंत्री पद को लेकर भी इस्तीफा पर तर्क दिया है। रायपुर से सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने समर्थको के आधार पर न टिकट मिलती है और ना ही कोई पद मिलता है यह तो आपकी योग्यता, आपके काम, आपके अनुभव के आधार पर शीर्ष नेतृत्व जब जो जिम्मेदारी देता है उसे निभाना पड़ता है। अग्रवाल ने कहा कि मुझे पार्टी ने इतना कुछ दिया है कि मैं 8 बार विधायक बन गया, 5 बार मंत्री बन गया।

अशोक गहलोत के बनाए 17 नए जिलों पर संकट, भजनलाल सरकार कराएगी रिव्यू

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान में अशोक गहलोत के राज में बने 17 नए जिलों और 3 नए संभाग खत्म हो सकते है। इनका भजनलाल सरकार रिव्यू करवाएगी। कई छोटे जिलों पर संकट आ सकता है। नए जिलों के रिव्यू के लिए उप मुख्यमंत्री प्रेम चंद बैरवा के संयोजन में कैबिनेट सब-कमेटी बनाई गई है। इस कैबिनेट सब-कमेटी में राजस्व मंत्री हेमंत मीणा भी शामिल है।

कैबिनेट सब कमेटी गठित

नवगठित जिलों और संभागों की समीक्षा के लिए बनी मंत्रिमंडलीय उप समिति के संयोजक डिप्टी सीएम प्रेमचंद बैरवा होंगे। इसके साथ मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़, मंत्री कन्हैयालाल, मंत्री सुरेश सिंह रावत और हेमंत मीणा उप समिति में सदस्यों के तौर पर शामिल रहेंगे। मंत्रिमंडलीय उप समिति राजस्व विभाग की अधिसूचना के तहत नवगठित 17 जिलों और 3 संभागों के प्रशासनिक दृष्टिगत क्षेत्राधिकार, सुचारू संचालन, प्रशासनिक आवश्यकता, वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता सहित अन्य के संबंध में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समीक्षा कर अपनी रिपोर्ट राज्य सरकार को सौंपेगी।

समिति की रिपोर्ट के आधार पर सरकार ने जिलों और संभाग के कम या ज्यादा पर निर्णय लेगी। उल्लेखनीय है कि पूर्ववर्ती गहलोत सरकार ने चुनाव से ठीक पहले 17 जिले और तीन संभागों का गठन किया था। इन जिलों और संभाग के गठन के बाद भाजपा ने तत्कालीन समय पर कांग्रेस सरकार पर आरोप लगाया था कि उन्होंने वोट बैंक की राजनीति का लाभ लेने के लिए नियमों को दरकिनार करते हुए नए जिलों और संभागों का गठन किया है. इनके गठन में भौगोलिक और क्षेत्रीय स्थित को नहीं देखा गया।

जयपुर में अब किराएदारों का वेरिफिकेशन कराने थाने नहीं जाना होगा

जयपुर, एजेंसी। जयपुर पुलिस कमिश्नर ने जयपुर सिटी के मकान और दुकान मालिकों के लिए नजर सिटिजन ऐप लॉन्च की हैं। यूजर्स इसे प्ले स्टोर से डाउनलोड कर सकेंगे। घरेलू नौकर और किरायेदारों का डाटा लेकर ऐप पर अपलोड किया जाएगा। जिससे जनता को सुरक्षित वातावरण मिलेगा. इसके साथ ही सड़क हादसों में कमी लाने के लिए मैप माय इंडिया यानी मेपल्स नाम से एप्लीकेशन के लिए एमओयू किया गया है। इस ऐप के माध्यम से ब्लैक स्पॉट्स और सड़क पर होने गड्ढों के बारे में तुरंत जानकारी मिलेगी। एक्सीडेंट की घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए जयपुर ट्रैफिक पुलिस की ओर से यह अनूठी पहल की जा रही है। जयपुर पुलिस कमिश्नर बीजू जार्ज जोसफ के मुताबिक राजधानी में बढ़ते अपराधों की रोकथाम, कानून व्यवस्था और सड़क हादसों की रोकथाम के लिए जयपुर पुलिस कमिश्नरेट नित नए नवाचार कर रहा है। श सुरक्षा प्रदान करने के लिए जयपुर पुलिस ने नए नजर सिटीजन मोबाइल एप की लॉन्चिंग की है।

प्रदर्शनकारियों से होगी बलौदा बाजार में हुए नुकसान की भरपाई?

रायपुर, एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बलौदा बाजार में हुए हिंसक प्रदर्शन के बाद विष्णु देव साय सरकार सख्त ऐक्शन लेने की तैयारी में है। राज्य में सतनामी समुदाय के विरोध प्रदर्शन के दौरान कई वाहनों और जिला कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक (एसपी) के कार्यालयों में आग लगा दी गई थी। सरकार दोषियों को जवाबदेह ठहराकर नुकसान की भरपाई करने पर विचार कर रही है। डिप्टी सीएम अरुण साव ने बुधवार को कहा कि राज्य सरकार बलौदा बाजार जिले में विरोध प्रदर्शन के दौरान हुए नुकसान की भरपाई करने पर विचार कर रही है।

डिप्टी सीएम ने इस बात पर जोर दिया कि दोषी पाए जाने वालों से नुकसान की भरपाई की जानी चाहिए। यह पूछे जाने पर की क्या राज्य सरकार नुकसान की भरपाई के लिए हिंसक प्रदर्शनकारियों के खिलाफ कार्रवाई करेगी, उपमुख्यमंत्री ने बताया कि सरकार निश्चित रूप से ऐसे कदमों पर विचार कर रही है। उन्होंने जोर देकर कहा कि दोषी पक्षों को जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। 11 जून को सतनामी समुदाय के हिंसक विरोध प्रदर्शन के दौरान चार पहिया वाहनों समेत सैकड़ों वाहनों को आग के हवाले कर दिया गया और उनमें तोड़फोड़ की गई। इसके अलावा कलेक्टर और एसपी के कार्यालयों में आग लगा दी गई। दमकल गाड़ियों में भी तोड़फोड़ की। 15-16 मई की रात को अज्ञात बदमाशों ने बलौदा बाजार के गिरौदपुरी धाम में सतनामी समुदाय द्वारा पूजित धार्मिक स्ट्रक्चर (संरचना) जैतखंभ को क्षतिग्रस्त कर दिया था। इस घटना के सिलसिले में पुलिस ने मामला दर्ज कर तीन लोगों को गिरफ्तार किया है, लेकिन समुदाय केंद्रीय एजेंसी से जांच की मांग कर रहा है। इस घटना के बाद, सतनामी समुदाय ने बलौदा बाजार जिले में विरोध प्रदर्शन का आह्वान किया, जो हिंसक हो गया।

मॉनसून की सुस्त चाल ने बढ़ाई टेंशन

नई दिल्ली, एजेंसी। तेलंगाना तक मॉनसून का विस्तार हो गया है। वहीं, उत्तर पश्चिम के कई राज्यों का भीषण गर्मी से सामना जारी है। फिलहाल, मॉनसून भी यहां देरी से आने के आसार हैं। भारत मौसम विज्ञान विभाग यानी ढ्ढस्रू का कहना है कि अगले 4-5 दिनों के दौरान भारत के उत्तर पश्चिम और पूर्वी हिस्सों में भयंकर लू चलने के आसार हैं। इधर, मॉनसून के बढ़ने के लिए ओडिशा समेत कुछ राज्यों में अनुकूल स्थितियां बन रही हैं। आइएमडी की तरफ से बुधवार रात जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि गंगीय पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, ओडिशा में आंधी तूफान के साथ हल्की से मध्यम बारिश के आसार हैं। मध्य प्रदेश, विदर्भ, छत्तीसगढ़ में तेज हवाओं के साथ छिटपुट बारिश हो सकती है। जबकि, ओडिशा में 12, 13 और 16 जून को भारी बारिश की संभावनाएं जताई जा रही हैं। कोंकण और गोवा में अगले पांच दिन और मध्य महाराष्ट्र और मराठवाड़ा में अगले दो दिनों तक बारिश के आसार हैं। कर्नाटक, केरल, माहे, लक्षद्वीप, अंडमान एंड निकोबार द्वीप समूह, तटीय आंध्र प्रदेश, यानम, रायलसीमा, तेलंगाना, तमिलनाडु, पुडुचेरी, करईकल में भी 5 दिनों में बारिश हो सकती है। उत्तर प्रदेश के कई हिस्सों में 16 जून को अति भीषण गर्मी के आसार हैं। जबकि, पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड को 14 जून को लू चल सकती है। पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, चंडीगढ़, दिल्ली में अगले पांच दिनों तक तेज गर्मी पड़ सकती है। पूर्वोत्तर मध्य प्रदेश, उत्तर पश्चिम राजस्थान, पूर्वोत्तर राजस्थान में 14 जून और हिमाचल प्रदेश और औडिश में गुरुवार को यह स्थिति बन सकती है।

सीएम शिंदे के करीबी शिवसेना एमपी को जान से मारने की धमकी

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र के औरंगाबाद संसदीय सीट से शिवसेना के नवनिर्वाचित सांसद सांदीपन राव भुमरे को जान से मारने की धमकी वाला एक गुमनाम खत पुलिस को प्राप्त हुआ है। इस गुमनाम खत मिलने के बाद पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बुधवार को यह जानकारी दी और कहा कि मामले की छानबीन तेजी से की जा रही है। उन्होंने बताया कि यह पत्र कुछ दिन पहले महाराष्ट्र के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) के कार्यालय को मिला था। भुमरे हाल ही में संपन्न आम चुनाव में औरंगाबाद निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा सदस्य चुने गए हैं।

भुमरे के करीबी लोग आमलोगों के साथ अन्याय कर रहे हैं और इसमें विशेष रूप से बिडकिन पुलिस थाने के अधिकारियों का उल्लेख किया गया है। पत्र में धमकी दी गई है कि अगर सांसद ने जिले में 'अन्याय कर रहे लोगों को बचाने' की कोशिश की तो भुमरे के काफिले पर हमला किया जाएगा।

नोएडा की लोटस 300 परियोजना की ईडी जांच के आदेश पर सुप्रीम कोर्ट की अंतरिम रोक

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने नोएडा में स्थित लग्जरी आवासीय परियोजना लोटस 300 से जुड़े वित्तीय लेनदेन की ईडी जांच संबंधी इलाहाबाद हाईकोर्ट के निर्देश पर अंतरिम रोक लगा दी है। न्यायमूर्ति संजय कुमार और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की अवकाशकालीन पीठ ने मंगलवार को यह आदेश पारित किया। बता दें कि इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 29 फरवरी को नोएडा के सेक्टर-107 में अधूरी आवासीय परियोजना लोटस 300 से जुड़ी कथित वित्तीय अनियमितताओं की ईडी जांच का आदेश दिया था।

यह जमीन हैसिंडा प्रोजेक्ट प्राइवेट लिमिटेड (एचपीपीएल) को लोटस 300 परियोजना विकसित करने के लिए आवंटित की गई थी। एचपीपीएल कई कंपनियों का एक गठजोड़ है जिसमें पेबल्स इन्फ्रोटेक की अग्रणी भूमिका है।

हाईकोर्ट ने इस मामले में घोर लापरवाही के लिए नोएडा विकास प्राधिकरण को फटकार लगाई थी। उच्च न्यायलय ने नोएडा विकास प्राधिकरण को एक दशक से अधिक समय से अपने बकाये के भुगतान की स्थिति का पता लगाने या कोई कदम उठाने में फटकार लगाई थी।

नोएडा विकास प्राधिकरण का बकाया बढ़कर 29 फरवरी तक लगभग 166 करोड़ रुपये था। इस आदेश के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील दाखिल की गई थी। सुप्रीम कोर्ट ने अपील पर सुनवाई करते हुए कहा कि अगले आदेश तक पैराग्राफ 114 में निहित उच्च न्यायालय के निर्देश पर अंतरिम रोक रहेगी। हालांकि सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि सभी पक्षों को यह सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहिए कि पैराग्राफ 117 में दिए हाईकोर्ट के निर्देश का समय के भीतर विधिवत पालन किया जाए।

इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश का पैराग्राफ 114 सभी निदेशकों, प्रवर्तकों, नामित प्रवर्तक, कर्ज भुगतान में चूक करने वाले अधिकारी और एचपीपीएल का पैसा जिन कंपनियों या संस्थाओं में भेजा गया, उनके खिलाफ ईडी जांच कराने से संबंधित था। हाईकोर्ट ने अपने आदेश में कहा था कि ईडी उक्त राशि की वसूली और सभी लेनदारों के बकाये का भुगतान करने के लिए ईमानदार प्रयास करेगा। आदेश में नोएडा प्राधिकरण को कब्जा प्रमाणपत्र जारी करने और एक महीने के भीतर फ्लैट खरीदारों के पक्ष में समझौता और पंजीकृत बैनामा करने का निर्देश दिया गया था।

चीन को है गधों की जरूरत, पाकिस्तान के पास जरूरत से ज्यादा, होगी डील?

बीजिंग, एजेंसी। पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति काफी पतली है। इस बीच साल 2023-24 के वहां एक आर्थिक सर्वेक्षण कराया गया, जिसमें गधों की आबादी में उल्लेखनीय वृद्धि का पता चला है। आज के समय में पाकिस्तान में 60 लाख के करीब गधे हैं। पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में 1.72 प्रतिशत अधिक है। गधों की आबादी में वृद्धि के बावजूद पाकिस्तान का समग्र आर्थिक प्रदर्शन उम्मीदों से काफी पीछे रहा है। आगे भी कोई राहत के आसार नहीं दिख रहे हैं। चालू वित्त वर्ष में अर्थव्यवस्था में केवल 2.4 प्रतिशत की वृद्धि होने का अनुमान है। आपको बता दें कि वहां की सरकार ने 3.5 प्रतिशत का रक्षा था।

गधों की आबादी में वृद्धि ग्रामीण और कृषि क्षेत्रों के लिए पॉजिटिव हो सकते हैं। हालांकि यह आर्थिक विकास मेट्रिक्स पर बिल्कुल विपरीत है। अर्थव्यवस्था का खराब प्रदर्शन पाकिस्तान के विकास में आने वाली चुनौतियों को उजागर करता है।

पाकिस्तान में जहां गधों की संख्या में भारी वृद्धि हो रही है, वहीं चीन को और गधों की जरूरत है। ऐसा इसलिए कि वहां एक दवा का इस्तेमाल होता। इसके लिए चीन में भारी संख्या में गधों को मारा जाता है। इस दवा को बनाने के लिए गधे की खाल का इस्तेमाल होता है। कहा जाता है कि इस दवा के इस्तेमाल से चीन के लोगों में खून की कमी दूर होती है। प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है। इनके अलावा भी और

कई बीमारियों में इसका इस्तेमाल होता है।

इस दवा को बनाने के लिए चीन को भारी संख्या में गधों की आवश्यक्ता है और इसकी पूर्ति के लिए दुनिया के कई देशों को गधा खरीदता है। पाकिस्तान इसकी कोशिश में लगा है कि चीन के साथ गधों को लेकर एक डील की जा सके।

गधे पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, खासकर ग्रामीण इलाकों में। ये जानवर माल ढोने और लोगों के लिए परिवहन के तौर पर काम करते हैं। इसके अलावा, कृषि कार्य और कई परिवारों के लिए आजीविका के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। गधे कुछ उद्योगों और समुदायों के लिए भी आवश्यक हैं। उनकी उपयोगिता उन क्षेत्रों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जहां परिवहन की व्यवस्था काफी कमजोर है।

संयुक्त राष्ट्र के जांच आयोग ने गाजा युद्ध को मानवता के खिलाफ अपराध बताया, इस्राइल ने किया खारिज

जेनेवा, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र ने अपनी शुरुआती जांच में पाया है कि गाजा में हुए युद्ध के लिए इस्राइल और हमास दोनों ही जिम्मेदार हैं। साथी ही कहा कि इजराइल की कार्रवाई से नागिरकों की मौत हुई, जो कि मानवता के खिलाफ है।

संयुक्त राष्ट्र ने यह निष्कर्ष दो समानांतर रिपोर्ट के आधार पर निकाला है। जिसमें पहली रिपोर्ट 7 अक्टूबर के हमास के हमलों पर थी जबकि दूसरी रिपोर्ट इस्राइल की प्रतिक्रिया में की गई कार्रवाई पर आधारित है। संयुक्त राष्ट्र जांच आयोग(सीओआई) की यह रिपोर्ट व्यापक रूप से लिए गए सबूतों और अपराधियों की पहचान करने के बाद प्रकाशित की गई है। जिसमें इस्राइल में किए गए हमलों और कब्जा करने वाले फिलीस्तीनी क्षेत्रों को शामिल किया गाय है। सीओआई का कहना है कि इस्राइल आयोग के साथ सहयोग नहीं करता है और उसके काम में बाधा डालता है। इस्राइल जांच करने वालों को इस्राइल और कब्जा किए गए फिलिस्तीनी क्षेत्रों तक जाने से भी रोकता है। इस्राइल का मानना है कि आयोग इस्राइल विरोधी है। इस्राइल राजनायिकों ने जेनेवा में यूएन के आयोग की रिपोर्ट को खारिज कर दिया है। इस्राइल के राजदूत ने जेनेवा में सोवित संघ में कहा, आयोग ने एक बार फिर साबित कर दिया है संयुक्त राष्ट्र जांच आयोग इस्राइल विरोधी राजनीतिक एजेंडा चला रहा है। वहीं आयोग की रिपोर्ट पर हमास

की तरफ से कोई भी प्रतिक्रिया नहीं आई है। इस्राइल के मुताबिक 7 अक्टूबर को सीमा पर से हुए हमले में 1200 से ज्यादा लोग मारे गए, जबकि 250 लोगों को बंधक बना लिया गया। इसके बाद गाजा में जवाबी सैन्य कार्रवाई की गई है। वहीं फलस्तीनी आंकड़ों के मुताबिक इस्राइल के कारण 37 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो गई है।

युद्ध विराम और गाजा से इस्राइली सैनिकों की वापसी के लिए डालें दबाव', हमास ने अमेरिका से की अपील

दोहा, एजेंसी। इस्राइल और हमास के बीच लंबे समय से युद्ध जारी है। अमेरिकी विदेश मंत्री इन दिनों मध्य पूर्व के दौरे पर थे। दौर के आखिरी दिन उन्होंने कहा कि फलस्तीनी क्षेत्र में भयंकर लड़ाई चल रही है। अमेरिकी विदेश मंत्री ने कहा कि गाजा में संघर्ष विराम और बंधकों की रिहाई का समझौता अब भी संभव है। स्थानीय मीडिया के अनुसार, एक दिन पहले ही इस्राइल ने लेबनान के आंतकी समूह हिजबुल्लाह के वरिष्ठ कमांडर को मौत के घाट उतार दिया, जिसके बाद उत्तरी इस्राइल पर हिजबुल्लाह रॉकेट की बारिश कर रहा है।

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के युद्ध विराम प्रस्ताव को बढ़ावा देने के लिए ब्लिंकन अंतिम दिन कतर की राजधानी दोहा पहुंचे। यहां उन्होंने कहा कि अमेरिका सौदे को लागू करने के लिए क्षेत्रीय भागीदारों के साथ काम करेगा। हमास ने मंगलवार देर रात मध्यस्थ कतर और मिस्र को अपना जवाब प्रस्तुत किया। हमास के एक वरिष्ठ अधिकारी ओसामा हमदान ने कहा कि हम गाजा में स्थायी युद्ध विराम और इस्राइली सैनिकों की पूर्ण वापसी चाहते हैं पर इस्राइल ने अस्वीकार कर दिया है। हमास ने ब्लिंकन से आग्रह किया है कि वे इस्राइल पर दबाव डालें। इसके अलावा, अमेरिकी सुरक्षा सलाहकार जैक सुलिवन ने कहा कि हमास की कई मांगे मामूली नहीं है और उनकी मांगे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में पास प्रस्ताव से अलग है। बता दें, 10 जून को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने युद्ध समाप्त करने के उद्देश्य से संघर्ष विराम योजना का समर्थन किया और अपने पहले प्रस्ताव को मंजूरी दी। यह प्रस्ताव अमेरिका ने पेश किया था, जो 14-0 से पास हो गया। मतदान के दौरान रूस वहां उपस्थित नहीं था। इस दौरान, अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि इस्राइल ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है। अमेरिका ने हमास से आह्वान किया था कि वह भी प्रस्ताव को स्वीकार करे।

जानवरों की तरह ठूंस रखा था लोगों को; आग इतनी तेजी से फैली कि बचने का मौका न मिला

कुवैत सिटी/कोल्लम , एजेंसी। कुवैत की छह मंजिला इमारत में लगी आग इतनी तेजी से फैली कि लोगों को जान बचाने का मौका तक न मिला। कुवैत टाइम्स ने दमकल कर्मियों के हवाले से बताया कि इमारत के भूतल पर बने रसोई घर में बुधवार सुबह करीब 6 बजे अचानक सिलेंडर फटने से आग लगी। कुवैत फायर डिपार्टमेंट के लेफ्टिनेंट कर्नल अली ने एक भारतीय मीडिया समूह को बताया, इमारत में 160 से ज्यादा मजदूर थे और ज्यादातर भारतीय थे। कुछ पाकिस्तानी और बांग्लादेशी मजदूरों के भी रहने की पुष्टि हुई है। सभी एक ही कंपनी के लिए काम करते थे। अली ने कहा, आग बहुत तेजी से फैली। मजदूरों को बाहर निकलने का मौका नहीं मिला। कई लोगों को इमरजेंसी सर्विस के जरिये निकाला गया। हादसे में 30 से ज्यादा जख्मी हैं।

कुवैत के गृह मंत्री शेख फहद ने कहा, जो हुआ वह कंपनी और भवन मालिकों के लालच का परिणाम है। उन्होंने इमारतों में जानवरों की तरह श्रमिकों को ठूंसने के मामले में कुवैत नगर पालिका और स्थानीय सार्वजनिक प्राधिकरण को तत्काल कार्रवाई के लिए कहा। उन्होंने इस तरह की घटनाओं के रोकथाम के लिए सभी सुरक्षा आवश्यकताएं लागू करने के निर्देश भी दिए। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने सोशल मीडिया पर लिखा, दुर्घटना में जान गंवाने वालों के परिवारों के प्रति मेरी गहरी संवेदना है।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद

(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129, 9430990555